माहनामा

(हिन्दी-माहनामा)

फ़ैज़ाने मदीना

मई सिने 2021 ईसवी | Trial Edition-2

FAIZAN E MADINA



فرمانِ امیرِ اہلِ سنّت

"زیادہ کھا کر پچھتانے سے بجائے کم کھا کر پچھتانا اچھا۔"

- फ़त्हे मक्का के अस्बाब व नताइज 13
- मुस्बत सोचिए ! 16
- इस्लाम में मज़दूरों के हुक़ूक़ 20
- हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इल्मी मक़ाम 32
- बच्चा हमें देख कर क्या सीखता है ? 47

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط اَمَّا بَعْدُ ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْم ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم ط

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिए मग़फ़िरत है। (تاریخ ابن عساکر، 61/381)



इस्तेग़ासा

दिल भरा आता है या मेहबूबे सुब्हां ले ख़बर
ले ख़बर शाहे मदीना ऐ मेरी जां ले ख़बर

ले ख़बर सुल्ताने आ़लम ले ख़बर सुल्ताने दीं
ले ख़बर सरदारे कुल मेहबूबे रह़मां ले ख़बर

गोरे तीरा में फ़क़ीरे बे नवा का कौन है ?
माहे ताबां ले ख़बर माहे दरख़्शां ले ख़बर

पुरसिशे आमाल का है वक़्त मौला अल मदद
खुल रही है मुजरिमों की फ़र्दें इस्यां ले ख़बर

केह रहा है यूं ज़बाने ह़ाल से हर मूए तन
ले ख़बर ऐ ताज वाले ! शाहे ख़ूबां ले ख़बर

या शफ़ीअ़ल मुज़्निबीं या रह़मतल्लिल आ़लमीं
तेरे सदक़े तुझ पे क़ुरबां हो मेरी जां ले ख़बर

सेकड़ों रज़वी ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो चुके
मैं भी हूं अदना सगे अह़मद रज़ा ख़ां ले ख़बर

अज़ मौलाना सैयद अय्यूब अ़ली रज़वी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
शमाइमे बख़्शिश, स. 38

मुनाजात

या ख़ुदा मेरी मग़फ़ेरत फ़रमा
बागे़ फ़िरदौस मरह़मत फ़रमा

दीने इस्लाम पर मुझे या रब
इस्तेक़ामत तू मरह़मत फ़रमा

मुस्तफ़ा का वसीला तौबा पर
तू इनायत मुदावमत फ़रमा

मौत ईमां पे दे मदीने में
और मह़मूद आ़क़िबत फ़रमा

सरफ़राज़ और सुर्ख़ रू मौला
मुझ को तू रोज़े आख़ेरत फ़रमा

मुश्किलों में मेरे ख़ुदा मेरी
हर क़दम पर मुआ़वनत फ़रमा

हो न अ़त्तार ह़श्र में रुस्वा
बे ह़िसाब इस की मग़फ़ेरत फ़रमा

अज़ शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه
वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 75

मुश्किल अल्फ़ाज़ के मआ़नी : **बागे़ फ़िरदौस :** जन्नत का बाग़। **मुदावमत :** पाबन्दी। **मेह़मूद :** क़ाबिले तारीफ़, अच्छी। **आ़क़िबत :** आख़ेरत। **सरफ़राज़, सुर्ख़ रू :** कामयाब। **मुआ़वनत :** मदद। **गोरे तीरा :** अन्धेरी क़ब्र। **फ़क़ीरे बे नवा :** बे सरो सामान फ़क़ीर। **माहे ताबां, माहे दरख़्शां :** रौशन और चमकदार चांद। **पुरसिशे आमाल :** आमाल के बारे में पूछगछ। **फ़र्दें इस्यां :** गुनाहों का रजिस्टर। **ज़बाने ह़ाल से केहना :** किसी बात का ह़ालत से ज़ाहिर होना। **हर मूए तन :** जिस्म का हर बाल। **या शफ़ीअ़ल मुज़्निबीं :** ऐ गुनाहगारों की शफ़ाअ़त करने वाले !

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

Monthly Magazine
FAIZANE MADINA (HINDI)

मई सिन 2021 ईसवी | ट्रायल एडिशन-2

ब फ़ैज़ाने नज़र सिराजुल उम्मह, काशिफुल गुम्मह, इमामे आज़म फ़क़ीहे अफ़ख़म हज़रते सैयदना इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ब फ़ैज़ाने करम आला हज़रत इमामे एहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह इमाम अहमद रज़ा खान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ)

मुनाजात / इस्तेग़ासा 02

कुरआनो हदीस नेमतें और शुक्र (तीसरी और आख़री क़िस्त) 03

नूरे नमाज़ 05 | क्या काइनात ख़ुद से बनी है ? 07

फ़ैज़ाने अमीरे एहले सुन्नत नाजाइज़ अंगूठी पेहनी हुई हो तो कब उतारे ? मअ़ दीगर सवालात 09

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत क़र्ज़दार को ज़कात के पैसे देना कैसा ? मअ़ दीगर सवालात 11

मज़ामीन फ़त्हे मक्का के अस्बाब व नताइज 13

बेटे को कैसा होना चाहिए ? 15 | मुस्बत सोचिए ! 16

शाने हबीब ब ज़बाने हबीब (क़िस्त : 05) 18 | इस्लाम में मज़दूरों के हुक़ूक़ 20

कैरीअर बेहतर बनाने के 30 तरीक़े (दूसरी और आख़री क़िस्त) 21 | जन्नत का सब से बुलन्द दरजा 25

फ़रिश्ते दुआए मग़फ़िरत करते हैं 27 | बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 28

ताजिरों के लिए

अहकामे तिजारत 29 | ताजिर सहाबए किराम (क़िस्त : 12) 31

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का इल्मी मक़ाम 32

अमीरे एहले सुन्नत की 5 नुमायां दीनी ख़िदमात 34 | अपने बुज़ुर्गों को याद रखिए 36

सेहत व तन्दुरुस्ती बच्चों में एलर्जी की अ़लामात व अस्बाब और इन का हल 38

क़ारेईन के सफ़हात नए लिखारी (जुनियर कॉलम निगार)) 39

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना" नमाज़ और बच्चे / रोड कैसे पार करें ? 42

खाना और शैतान 43 | जंगली पड़ोसी (दूसरी और आख़री क़िस्त) 45

ज़बानी ग़लती बता दी 46 | बच्चा हमें देख कर क्या सीखता है ? 47

दायां या बायां ? 48 | क्या आप जानते हैं ? / हुरूफ़ मिलाइए 49

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"

कितनी ईदी मीली ? 50 | हज़रते सैयदतुना नफ़ीसा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا 51

आओ कुरआन पढ़ाएं 52 | इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 54



(तीसरी और आख़री क़िस्त)

नेमतें और शुक्र

मुफ़्ती मुहम्मद क़ासिम अत्तारी

शुक्र की रविश हर हाल में अपनानी चाहिए, क्यूंकि जिस वक़्त बन्दा किसी मुसीबत में होता है उस वक़्त भी **अल्लाह** तआ़ला की लाखों नेमतें उस के साथ मौजूद होती हैं, मसलन अगर किसी की टांग टूट जाए तो क्या ऐन उसी वक़्त बक़िय्या आज़ा की सलामती नेमत नहीं ? यक़ीनन है, बल्कि बारहा ऐसा होता है कि कोई तक्लीफ़, तंगी या मुश्किल दर ह़क़ीक़त नेमत होती है जैसे मालो दौलत की कमी बाइसे तक्लीफ़ है लेकिन ह़क़ीक़त में येह अक्सर लोगों के ह़क़ में नेमत है क्यूंकि अगर उन पर रिज़्क़ के दरवाज़े खोल दिए जाते तो वोह ज़ुल्मो सितम, अ़य्याशी व फ़ह़्हाशी, मआ़सी यानी गुनाहों और फ़ितना ओ फ़साद में पड़ जाते, जैसा कि कुरआने मजीद में फ़रमाया : ﴿وَ لَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی الْاَرْضِ﴾ तर्जमा : और अगर **अल्लाह** अपने सब बन्दों के लिए रिज़्क़ वसीअ़ कर देता तो ज़रूर वोह ज़मीन में फ़साद फैलाते । (پ25، الشوریٰ:27) और इसी पर दूसरे पेहलू से यूं ग़ौर कर लें कि क्या वोह कार (Car) नेमत है जिसे चला कर एक्सीडन्ट (Accident) होने से इन्सान हमेशा के लिए मफ़्लूज हो जाए ? क्या वोह मालो दौलत की फ़रावानी नेमत है जिसे लूटने के लिए डाकू एहले ख़ाना को जान से मार दें ? इन मिसालों का येह मक़्सद नहीं कि ऐसा "ही" होता है बल्कि येह है कि ऐसा "**भी**" हो जाता है, लेहाज़ा जिस ह़ालत में हम हैं वोही हमारे लिए बेहतर हो सकती है, इस लिए बेहतरी के लिए कोशिश ज़रूर की जाए लेकिन हर ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र ही अदा किया जाए ।

हर ह़ाल में शुक्र के मुतअ़ल्लिक़ उ़लमा ए किराम ने बहुत ख़ूब सूरत कलाम फ़रमाया है, चुनान्चे, लिखते हैं कि शुक्र अदा करने वाले के लिए एक लफ़्ज़ "शाकिर" है और दूसरा लफ़्ज़ "शकूर" है । "शाकिर" वोह है जो नेमतों पर शुक्र अदा करता है और "शकूर" वोह है जो मुसीबतों, तक्लीफ़ों और आज़माइशों पर भी शुक्र अदा करता है । कुरआने मजीद में ह़ज़रते नूह علیٰ نَبِیِّنَا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाया : ﴿اِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا﴾ तर्जमा : बेशक नूह़ बड़े ही शुक्र गुज़ार थे । (پ15، بنی اسرائیل:3) इस की तफ़्सीर में है : اِنَّہ کَانَ یَشْکُرُ اللّٰہَ تعالٰی علٰی کُلِّ حالٍ من خیرٍ او شرٍ او نفعٍ او ضرٍ तर्जमा : यानी ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام हर ह़ाल में **अल्लाह** तआ़ला का शुक्र अदा करते थे ख़्वाह वोह ख़ैर की ह़ालत हो या शर की, नफ़्अ़ की हो या नुक़्सान की । (قوت القلوب، 345/1)

शुक्र कैसे अदा किया जाए ? शुक्र अदा करने के चन्द त़रीक़े अ़र्ज़ करता हूं :

पेहला त़रीक़ा : दिलो जान से येह समझ लिया जाए कि ह़क़ीक़त में ख़ुदा का शुक्र अदा हो ही नहीं सकता और हम उस रब्बे करीम का पूरी त़रह़ शुक्र अदा करने से आ़जिज़ व क़ासिर हैं, चुनान्चे ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! मैं तेरा कैसे शुक्र अदा करूं जबकि मैं तेरा शुक्र भी तेरी तौफ़ीक़ के बग़ैर अदा नहीं कर सकता

और वोह तौफ़ीक़ भी तेरी अगली नेमत होती है । **अल्लाह** तआ़ला ने फ़रमाया : ऐ मूसा ! जब तू ने येह ह़क़ीक़त पेहचान ली तो तुम ने मेरा शुक्र अदा कर दिया । (इह़याउल उ़लूम, 4 / 83)

दूसरा त़रीक़ा : आ़रिफ़ीन के नज़दीक शुक्र की सब से पेहली मन्ज़िल येह है कि **अल्लाह** की नेमत, उस की ना फ़रमानी में ख़र्च न की जाए । कुरआने पाक में फ़रमाया : ﴿اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا﴾ तर्जमा : क्या तुम ने उन्हें न देखा जिन्हों ने **अल्लाह** की नेमत को ना शुक्री से बदल दिया । (پ13، ابراھیم:28) इस आयत में ना शुक्री की एक तफ़्सीर उ़लमा ए किराम ने येह बयान फ़रमाई है कि उन लोगों ने नेमतों को ना शुक्री से यूं बदला कि उन नेमतों से गुनाहों पर मदद ह़ासिल की, जैसे आज़ा ए बदन को गुनाहों में मश्ग़ूल किया और मालो दौलत को नाजाइज़ लज़्ज़तों के ह़ुसूल का ज़रीआ़ बनाया । **अल्लाह** तआ़ला ने अपनी नेमतों की वुस्अ़त यूं बयान फ़रमाई : ﴿وَاَسْبَغَ عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً﴾ तर्जमा : और उस ने तुम पर अपनी ज़ाहिरी और बात़िनी नेमतें पूरी कर दीं । (پ21، لقمان: 20) और इस पर शुक्र अदा करने का त़रीक़ा नीचे वाली आयत से इशारतन बयान फ़रमाया : ﴿وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ﴾ तर्जमा : और ज़ाहिरी और बात़िनी सब गुनाह छोड़ दो । (پ8، الانعام:120)

आला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं :

रिज़्क़े ख़ुदा खाया किया, फ़रमाने ह़क़ टाला किया
शुक्रे करम तरसे सज़ा, येह भी नहीं वोह भी नहीं

तीसरा त़रीक़ा : दिल, ज़बान और आज़ा सब से **अल्लाह** तआ़ला के मुनइ़म होने का एतिराफ़ व इज़हार हो, यानी दिल ख़ुदा को मुनइ़मे ह़क़ीक़ी मानते हुवे एह़सासे तशक्कुर से लबरेज़ हो, ज़बान नेमतों के पेशे नज़र उस की ह़म्दो सना करे और आज़ा उस की ना फ़रमानी से बचें और उस की बन्दगी में इस्तेमाल हों ।

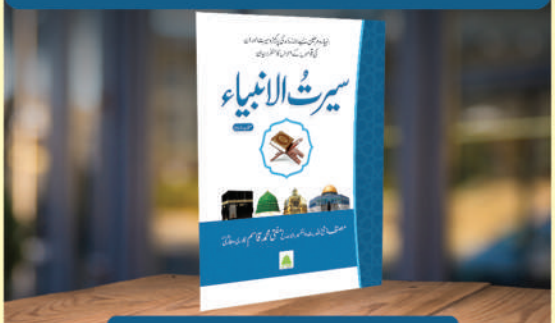
चौथा त़रीक़ा : क़लील व कसीर सब नेमतों पर शुक्र अदा करना अपनी आ़दत बना ले और हर नेमत के तज़किरे पर **अल्लाह** तआ़ला की ह़म्द करे जैसे कोई त़बीअ़त का पूछे तो सिर्फ़ येह जवाब न दे कि "ठीक है, बेहतर है" बल्कि कहे कि "**अल्लाह** का करम है", "**अल्लाह** के फ़ज़्ल से मेरी त़बीअ़त ठीक है", "ख़ुदा की रेह़मत है" या अ़रबी अल्फ़ाज़ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال इस त़रह़ के जुम्ले अपना मामूल बनाए ।

पांचवां त़रीक़ा : इबादत की कसरत से शुक्र अदा करे यानी नफ़्ल नमाज़ों, रोज़ों, सदक़ात, तिलावते कुरआन, ज़िक्रे इलाही और दुरूदे पाक की कसरत करे । नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपनी त़वील नमाज़ों का सबब शुक्र की अदाएगी ही बताया है चुनान्चे ह़ज़रते मुग़ीरा बिन शेअ़बा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है, आप फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नमाज़ में इस क़दर क़ियाम फ़रमाते कि आप के मुबारक पाउं सूज (Swell) जाते । (مسلم، ص1160، حدیث:7125)

एक बार ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ऐसा कर रहे हैं, ह़ालांकि **अल्लाह** तआ़ला ने आप के अगलों और पिछलों के गुनाह बख़्श दिए हैं, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ आइशा ! क्या मैं **अल्लाह** का शुक्र गुज़ार बन्दा न बनूं ? (مسلم، ص1160، حدیث:7126)

अल्लाह तआ़ला हमें अपने शुक्र गुज़ार बन्दों में शामिल फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अम्बिया ओ मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की पाकीज़ा सीरत और इन की क़ौमों के अह़वाल का मुन्फ़रिद बयान



आज ही मक्तबतुल मदीना से ह़ासिल कीजिए ।



नूरे नमाज़

मौलाना मुहम्मद नासिर जमाल अ़त्तारी मदनी

हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَلصَّلٰوةُ نُوْرٌ यानी नमाज़ नूर है।[1]

हम सब जानते हैं कि लाइट का मक़्सद रौशनी देना है और इसी मक़्सद को हासिल करने के लिए उ़मूमन ट्यूब लाइट बुलन्दी पर लगाई जाती है लेकिन जब येह ट्यूब लाइट ख़राब हो कर रौशनी देना छोड़ देती है तो हम उसी ट्यूब लाइट को उतार कर कूड़ादान में फेंक देते हैं क्यूंकि उसूल है कि बे मक़्सद चीज़ को कोई मक़ाम नहीं दिया जाता । हम इन्सानों को पैदा किए जाने का अस्ल मक़्सद **अल्लाह** पाक की इबादत है और इबादात में "नमाज़" को बहुत ज़्यादा अहमियत व फ़ज़ीलत हासिल है । **अल्लाह** के प्यारे नबी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने तो अपने लिए और अपनी औलाद के लिए नमाज़ के बारे में दुआ भी की जिस का तज़किरा कुरआने पाक में यूं है : ऐ मेरे रब मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को, ऐ हमारे रब और हमारी दुआ सुन ले।[2]

हुक़ूक़ुल्लाह में नमाज़ की अहमियत इस क़दर ज़्यादा है कि रोज़े क़ियामत तमाम हुक़ूक़ुल्लाह में सब से पेहले इसी के मुतअ़ल्लिक़ सवाल किया जाएगा । हदीसे पाक में है : "कल क़ियामत के दिन बन्दे से सब से पेहले उस की नमाज़ के बारे में सवाल होगा ।"[3] इस हदीसे पाक के तहत हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि बेशक नमाज़ ईमान की अ़लामत और अस्ल इबादत है।[4]

हदीसे पाक में रेहमते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ को नूर क़रार दिया है, इस की वज़ाहत मुलाहज़ा कीजिए : 1 जैसे रौशनी गढ़ों में गिरने से बचाती है ऐसे ही नमाज़ बे हयाई और इस जैसे कई गुनाहों के गढ़ों में गिरने से बचाती है। 2 क़ियामत के दिन नमाज़ी के लिए अज्रो सवाब नूर बन कर ज़ाहिर होगा 3 नूरे नमाज़ दुन्या ओ आख़ेरत में नमाज़ी के चेहरे से ज़ाहिर होगा 4 नमाज़ मुसलमान के दिल की, चेहरे की, क़ब्र की और क़ियामत की रौशनी है।[5]

मज़कूरा तफ़्सील से नमाज़ की अहमियत वाज़ेह हुई, हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की वज़ाहत भी फ़रमा दी है कि किसे नूरे नमाज़ मिलेगा और किसे नहीं मिलेगा ? चुनान्चे, आप का इरशाद है : जिस ने नमाज़ों की हिफ़ाज़त की उस के लिए क़ियामत में नूर व बुरहान (यानी दलील) और नजात होगी और जिस ने नमाज़ की हिफ़ाज़त न की तो उस के लिए न नूर होगा और न बुरहान और न नजात और वोह (यानी बे नमाज़ी) क़ियामत में क़ारून व फ़िरऔ़न व हामान और उबय बिन ख़लफ़ के साथ उठाया जाएगा।[6] एक मौक़ेअ़ पर आप ने इरशाद फ़रमाया : उन लोगों को क़ियामत के दिन कामिल नूर की बिशारत हो जो अन्धेरों में पैदल चल कर मस्जिदों को जाते हैं।[7]

चमकते चेहरे : मन्क़ूल है कि जब क़ियामत क़ाइम होगी तो नमाज़ियों को गिरोह दर गिरोह जन्नत की त़रफ़ जाने का हुक्म होगा, जब पेहला गिरोह (Group) जन्नत में दाख़िले के लिए लाया जाएगा तो उन के चेहरे सितारों की त़रह़ चमकते दमकते होंगे, फ़रिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करेंगे और उन से पूछेंगे : तुम कौन हो ? वोह

कहेंगे : हम उम्मते मुहम्मदिया عَلٰی صَاحِبِهَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلام के नमाज़ी हैं, फिर पूछा जाएगा : तुम्हारे आमाल (नमाज़ों) का क्या ह़ाल था ? वोह कहेंगे : हम अज़ान सुनते ही वुज़ू के लिए खड़े हो जाते थे और दुन्या की कोई चीज़ हमें इस से रोक नहीं सकती थी । फ़रिश्ते कहेंगे : तुम इसी के मुस्तह़िक़ हो (कि तुम्हें जन्नत में दाख़िल किया जाए) । फिर दूसरा गिरोह (Group) जन्नत में दाख़िले के लिए लाया जाएगा जिन का हुस्नो जमाल (यानी ख़ूब सूरती) पेहले गिरोह से ज़्यादा होगा, उन के चेहरे चांद की त़रह़ चमकते होंगे, फ़रिश्ते उन से पूछेंगे : तुम कौन हो ? वोह कहेंगे : हम नमाज़ पढ़ने वाले थे, फिर पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ों का क्या ह़ाल था ? वोह कहेंगे : हम नमाज़ के वक़्त से पेहले ही नमाज़ के लिए वुज़ू कर लेते थे (और जब अज़ान सुनते थे फ़ौरन मस्जिद में ह़ाज़िर हो जाते) फ़रिश्ते कहेंगे : तुम इसी के मुस्तह़िक़ हो । फिर तीसरा गिरोह जन्नत में दाख़िले के लिए लाया जाएगा जिन का मक़ामो मर्तबा और हुस्नो जमाल (यानी ख़ूब सूरती) पेहले गिरोह से कहीं ज़्यादा होगा, उन के चेहरे आफ़्ताब (यानी सूरज) की त़रह़ रौशन होंगे, फ़रिश्ते उन से पूछेंगे : तुम इतने ख़ूब सूरत और इतने आला मक़ाम वाले क्यूं हो ? वोह कहेंगे : हम हमेशा नमाज़ पढ़ा करते थे । फ़रिश्ते पूछेंगे : तुम्हारी नमाज़ों का क्या ह़ाल था ? वोह कहेंगे : हम अज़ान होने से पेहले ही मस्जिद में मौजूद होते थे और अज़ान मस्जिद में ही सुनते थे, फ़रिश्ते कहेंगे : तुम इसी के मुस्तह़िक़ हो ।[8]

नमाज़ से ह़ासिल होने वाले 21 फ़वाइद : 1 नमाज़ दिल, मेदा और आंतों वग़ैरा के मरज़ में शिफ़ा देती है 2 नमाज़ दर्दो ग़म का एह़सास भुला देती या कम कर देती है 3 नमाज़ में बेहतरीन वर्ज़िश है कि इस में क़ियाम, रुकूअ़ और सजदे वग़ैरा करने से बदन के अक्सर जोड़ (Joints) ह़रकत करते हैं 4 नज़ला ज़ुकाम के मरीज़ के लिए त़वील (यानी लम्बा) सजदा निहायत मुफ़ीद है 5 सजदे से बन्द नाक खुलती है 6 आंतों में जम्अ़ होने वाले ग़ैर ज़रूरी मवाद को ह़रकत दे कर निकालने में सजदा काफ़ी मददगार साबित होता है 7 नमाज़ से ज़ेह्न साफ़ होता और ग़ुस्से की आग बुझ जाती है 8 नमाज़ रिज़्क़ लाती 9 सेह़त की ह़िफ़ाज़त करती 10 अज़िय्यत (यानी तक्लीफ़) दूर करती 11 बीमारी भगाती 12 दिल की क़ुव्वत बढ़ाती 13 फ़रह़त (यानी ख़ुशी) का सामान बनती 14 सुस्ती दूर करती 15 शर्ह़े सद्र करती यानी सीना खोलती 16 रूह़ को ग़िज़ा फ़राहम करती 17 दिल मुनव्वर (यानी रौशन) करती 18 चेहरा चमकाती 19 बरकत लाती 20 ख़ुदाए रह़मान से क़रीब पहुंचाती और 21 शैत़ान को दूर भगाती है । (येह फ़वाइद उसी सूरत में ह़ासिल हो सकते हैं जब नमाज़ इत़मीनान से दुरुस्त त़रीक़े पर अदा की जाए) ।[9]

नमाज़ का ज़ौक़ो शौक़ बढ़ाने के लिए अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने एक किताब **"फ़ैज़ाने नमाज़"** तेह़रीर फ़रमाई है, इस किताब की तेह़रीर इतनी दिलचस्प है कि किताब रखने का दिल ही नहीं चाहता । **"फ़ैज़ाने नमाज़"** हर घर बल्कि हर फ़र्द की ज़रूरत है । **"फ़ैज़ाने नमाज़"** ख़ज़ाना है ख़ज़ाना, इस किताब को न पढ़ना बहुत बड़े ख़ज़ाने से मेह़रूमी का बाइस है । अगर आप येह ख़ज़ाना ह़ासिल करना चाहते हैं तो पेहली फ़ुर्सत में येह किताब लीजिए और दीनो दुन्या के फ़वाइद ह़ासिल कीजिए ।

---

(1) مسلم، ص115، حدیث:534(2)پ13، ابراہیم:40(3)نسائی، ص652، حدیث:3997(4)التیسیر شرح جامع الصغیر، 1/391(5)شرح مسلم للنووی، 2/101 ماخوذاً، مراۃ المناجیح، 1/232 ماخوذاً(6)مسند احمد، 2/574، حدیث:6587(7)ترمذی، 1/261، حدیث:223(8)قوت القلوب، 2/168(9)فیضانِ نماز، ص28۔

तलफ़्फ़ुज़ दुरुस्त कीजिए !

ग़लत़ तलफ़्फ़ुज़	सह़ीह़ तलफ़्फ़ुज़
एअ़रास	अअ़रास
जमादल ऊला /जमादियुल ऊला	जुमादल ऊला
जम्रात	जमरात
मुतारिकत	मुतारकत
मुत्तफ़िक़ अ़लैह	मुत्तफ़क़ अ़लैह

(उर्दू लुग़त, जिल्द 1, 6, 17)



क्या काएनात ख़ुद से बनी है ?

मौलाना मुहम्मद अ़दनान चिश्ती अ़त्तारी मदनी

करोड़ों ह़नफ़ियों के पेश्वा ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه दहरियों[1] के लिए तलवार की मानिन्द थे इस लिए दहरिये मौक़ेअ़ की तलाश में रेहते कि कब इन्हें क़त्ल कर सकें । ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه एक बार मस्जिद में बैठे थे कि अचानक कुछ दहरियों ने आप को घेर लिया । उन्हों ने नंगी तलवारें उठा रखी थीं वोह आप को क़त्ल करना चाहते थे । इमामे आज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : पेहले मेरी एक बात का जवाब दो फिर मेरे साथ जो चाहो करना । उन्हों ने कहा : पूछो (चूंकि दहरियों का नज़रिया है कि दुन्या ख़ुद से क़ाइम है और रात दिन और सर्दी गर्मी बग़ैर किसी ख़ालिक़ के अपने आप बदलते रेहते हैं) इस लिए आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : अच्छा उस आदमी के बारे में तुम लोग क्या केहते हो जो कहे कि मैं ने एक ऐसी कश्ती देखी है जो बोझ से लदी हुई और सामान से ख़ूब भरी हुई है, समुन्दर में हर त़रफ़ से लेहरों ने उसे घेर रखा है, हवाएं भी मुख़्तलिफ़ सम्तों से चल रही हैं उसे चलाने वाला मल्लाह़ भी नहीं है फिर भी वोह सीधी चली जा रही है क्या अ़क़्ल इसे मानती है ? दहरियों ने कहा : हरगिज़ नहीं, येह ऐसी बात है जिसे अ़क़्ल तस्लीम नहीं करती ।

ह़ज़रते इमामे आज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने फ़रमाया : سُبْحٰنَ الله जब अ़क़्ल इस बात को मानती है कि कश्ती मुह़ाफ़िज़ और चलाने वाले के बग़ैर सीधी नहीं चल सकती तो ज़रा सोचो फिर इस क़दर वसीओ अ़रीज़ दुन्या और रात दिन की तब्दील होना, सारी काइनात का इस क़दर मुनज़्ज़म अन्दाज़ बग़ैर ख़ालिक़ के कैसे क़ाइम है ? आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की बात सुन कर वोह सब रोने लगे । उन्हों ने कहा : आप ने बिल्कुल सच फ़रमाया । उन्हों ने अपनी तलवारें हटा लीं और अपने बात़िल अ़क़ीदे से तौबा कर ली । (تفسیر کبیر، البقرۃ، تحت الآیۃ:21، الجزء الثانی، 1/333)

ह़ज़रते इमामे आज़म رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के इस वाक़िए से येह बात समझी जा सकती है कि कोई भी चीज़ ख़ुद से नहीं बन सकती, कश्ती तो बहुत बड़ी चीज़ है आज तक दुन्या में कोई एक सूई भी ख़ुद नहीं बनी नीज़ येह बात भी हर शख़्स समझ सकता है कि सूई बनाने का भी एक मख़्सूस त़रीक़ए कार है ऐसा नहीं होता कि सूइयां किसी धमाके के नतीजे में बन जाती हैं मुशाहदा इस बात की दलील है कि धमाकों से चीज़ें बनती नहीं बल्कि बिगड़ती और तबाहो बरबाद होती हैं । जब सूई किसी धमाके के नतीजे में नहीं बनती तो येह केहना कि येह सारी काएनात एक धमाके के नतीजे में बन गई है मुज़ह़िका ख़ेज़ नहीं तो और क्या है ?

हम देखते हैं कि दुन्या की चीज़ें तब्दील होती रेहती हैं और कभी न कभी येह फ़ना हो जाएंगी । येह दुन्या हमेशा से नहीं है बल्कि किसी न किसी वक़्त पैदा हुई है । ज़रूर इन सब चीज़ों का कोई पैदा और फ़ना करने वाला है । उस का नामे पाक "अल्लाह" है । वोह हमेशा से है, हमेशा रहेगा, वोही तमाम जहान का बनाने वाला है । आस्मान, ज़मीन, चांद, तारे, आदमी, जानवर और जितनी चीज़ें हैं और जितनी होंगी सब को उसी एक "अल्लाह" ने पैदा किया है और पैदा करेगा ।

जब पहाड़ों और बयाबान में सफ़र करने वाले आदमी का किसी सेह़रा से गुज़र होता है तो वोह रेत के ना हमवार टीलों और कोहिस्तान में पड़े बे तरतीब पथ्थरों को देख कर समझ जाता है कि हवाओं के चलने की वज्ह से रेत के येह ना हमवार टीले पैदा हो गए हैं और येह पथ्थर बारिशों के बाइस पहाड़ों से टूट कर इधर उधर बिखर गए हैं । जब कि इस के बर अ़क्स जब येही आदमी एक आ़लीशान और ख़ूब सूरत इमारत में दाख़िल होता है कि जहां हर चीज़ मुनासिब मक़ाम पर रखी दिखाई देती है । मसलन उ़म्दा अन्दाज़ में बिछा क़ालीन, डीवाइडर में सजे मुख़्तलिफ़ बरतन, मेज़ पर लगे ज़रूफ़, दीवारों पर मीनाकारी के नुक़ूश, दरवाज़ों पर लटके नफ़ीस पर्दे तो कभी भी उस के वहमो गुमान में भी येह बात

(1) जो येह केहते हैं कि ख़ुदा का कोई वुजूद नहीं, सारी काइनात ख़ुद ब ख़ुद चल रही है ।

नहीं आती कि येह सब नफ़ासत व उ़म्दगी ख़ुद ब ख़ुद मारिज़े वुजूद में आ गई है। हवाओं ने क़ालीन बिछा दिए, बारिश ने बरतन सजा दिए, झाला बारी ने मीनाकारी का काम कर दिया और तेज़ हवा के झोंकों ने इधर उधर से पथ्थर जम्अ़ कर के आ़लीशान इ़मारत खड़ी कर दी। अगर कोई ऐसा कहे तो इसे सिवाए पागल और बे वुफ़ूक़ के और क्या कहा जा सकता है।

इ़मारत में सलीक़े से रखी हुई चीज़ें पुकार पुकार कर एलान कर रही हैं कि इन्हें सलीक़े से रखने वाला कोई माहिर मुन्तज़िम ज़रूर है जिस ने इन्हें सलीक़ा मन्दी से रखा है। रात और दिन का आना, हवाओं का चलना, दिन रात का घटना बढ़ना पुकार पुकार कर केह रहा है कि येह सब ख़ुद ब ख़ुद नहीं बल्कि एक मालिक व ख़ालिक़ के बनाने और उस के मुनज़्ज़म करने से ही तरतीब में है और वोही काइनात का ख़ालिक़ और हमारा ख़ुदा है।

ग़ौर करने पर एक बात सामने आती है कि मख़्लूक़ मजमूई़ तौ़र पर तीन त़रह़ की है : 1 जानदार और आ़क़िल जैसे इन्सान, जिन्न, फ़रिश्ते 2 जानदार और ग़ैर आ़क़िल जैसे ह़ैवानात व ह़शरात व परिन्द वग़ैरा 3 बे जान व बे अ़क़्ल जैसे आस्मान, ज़मीन, जमादात वग़ैरा। इन सब में पेहली क़िस्म इस एतिबार से कि इस के पास अ़क़्ल और ह़यात दोनों हैं, अफ़्ज़ल है, लेकिन इस अफ़्ज़लिय्यत के बा वुजूद जानदार व आ़क़िल मख़्लूक़ न ही लकड़ी से फल निकालने पर क़ादिर है और न ही इन्सान की तख़्लीक़ पर उसे क़ुदरत। जब सब से आला मख़्लूक़ "जानदार व आ़क़िल" का येह ह़ाल है तो इस के इ़लावा और कोई मख़्लूक़ कैसे किसी दूसरी मख़्लूक़ को पैदा कर सकती है। जब सिफ़ते ह़यात से मुत्तसिफ़ मख़्लूक़ भी क़ादिर नहीं तो ग़ैर ह़य्य का क़ादिर न होना तो ज़्यादा वाज़ेह़ है, साबित हुवा कि मख़्लूक़ात को पैदा करने वाला "मख़्लूक़ की जिन्स" से नहीं हो सकता बल्कि वोह ज़ात इन सब से अ़ज़ीम तर है और वोह "**अल्लाह** पाक" की ज़ात है।

येह बात भी दिन की त़रह़ ज़ाहिर और सूरज की त़रह़ रौशन है कि अगर तमाम मख़्लूक़ जम्अ़ हो जाए तो **अल्लाह** पाक की बनाई हुई मख़्लूक़ात में से किसी "अदना मख़्लूक़" को तख़्लीक़ करने पर भी क़ुदरत नहीं रखते जैसा कि च्यूंटी या मख्खी ही को ले लीजिए आज तक बड़े से बड़ा अ़क़्लमन्द भी इस की मिस्ल न बना सका, जब वोह इतनी छोटी सी मख़्लूक़ बनाने से आ़जिज़ है तो बड़ी और अ़ज़ीम मख़्लूक़ात बनाने का तो तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता, इन्सान तो इन्सान बल्कि **अल्लाह** को छोड़ कर जो लोग दूसरी चीज़ों को अपना ख़ुदा मानते हैं इन के वोह ख़ुद साख़्ता ख़ुदा भी एक च्यूंटी या मख्खी तक पैदा नहीं कर सकते। इस बात की त़रफ़ क़ुरआने पाक में यूं इशारा किया गया है : ﴿اِنَّ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَنْ یَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّ لَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जिन्हें **अल्लाह** के सिवा तुम पूजते हो एक मख्खी न बना सकेंगे अगर्चे सब इस पर इकठ्ठे हो जाएं। (پ17، الحج:73)

क़ुरआने पाक में जगह जगह इस बात का रौशन बयान है कि काइनात को **अल्लाह** पाक ने अकेले पैदा किया है। वोह मख़्लूक़ात की तख़्लीक़ में मुन्फ़रिद है कोई उस का शरीक नहीं। जैसा कि फ़रमाता है :

﴿نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْ لَا تُصَدِّقُوْنَ ۝ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ ۝ نَحْنُ قَدَّرْنَا بَیْنَكُمُ الْمَوْتَ وَ مَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِیْنَ ۝ عَلٰۤى اَنْ نُّبَدِّلَ اَمْثَالَكُمْ وَ نُنْشِئَكُمْ فِیْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ وَ لَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْاَةَ الْاُوْلٰى فَلَوْ لَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ اَفَرَءَیْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝ اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝ بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝ اَفَرَءَیْتُمُ الْمَآءَ الَّذِیْ تَشْرَبُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ ۝ لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْ لَا تَشْكُرُوْنَ ۝ اَفَرَءَیْتُمُ النَّارَ الَّتِیْ تُوْرُوْنَ ۝ ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِـُٔوْنَ ۝ نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّ مَتَاعًا لِّلْمُقْوِیْنَ ۝ فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِیْمِ ۝﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हम ने तुम्हें पैदा किया तो तुम क्यूं नहीं सच मानते। तो भला देखो तो वोह मनी जो गिराते हो। क्या तुम उस का आदमी बनाते हो या हम बनाने वाले हैं। हम ने तुम में मरना ठेहराया और हम इस से हारे नहीं। कि तुम जैसे और बदल दें और तुम्हारी सूरतें वोह कर दें जिस की तुम्हें ख़बर नहीं। और बेशक तुम जान चुके हो पेहली उठान फिर क्यूं नहीं सोचते। तो भला बताओ तो जो बोते हो। क्या तुम उस की खेती बनाते हो या हम बनाने वाले हैं। हम चाहें तो उसे रौंदन (पामाल) कर दें फिर तुम बातें बनाते रेह जाओ। कि हम पर चट्टी (तावान) पड़ी। बल्कि हम बे नसीब रहे। तो भला बताओ तो वोह पानी जो पीते हो। क्या तुम ने उसे बादल से उतारा या हम हैं उतारने वाले। हम चाहें तो उसे खारी कर दें फिर क्यूं नहीं शुक्र करते। तो भला बताओ तो वोह आग जो तुम रौशन करते हो। क्या तुम ने उस का पेड़ पैदा किया या हम हैं पैदा करने वाले। हम ने उसे जहन्नम की यादगार बनाया और जंगल में मुसाफ़िरों का फ़ाइदा। तो ऐ मेह़बूब तुम पाकी बोलो अपने अ़ज़मत वाले रब के नाम की। (پ27، الواقعۃ:57تا74)

इन आयात में **अल्लाह** पाक के ख़ालिक़ो मालिक और काइनात को क़ाइम रखने वाला होने का कैसा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ बयान है। ऐसी दरजनों आयात क़ुरआने पाक की तिलावत करने वाले के ईमान को जिला बख़्शती हैं कि काइनात का ख़ालिक़ "**अल्लाह** वह़दहू ला शरीक" है।



मदनी मुज़ाकरे के सवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त अमीरे एहले सुन्नत, बानी ए दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इबादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किए जाने वाले सवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 10 सवालात व जवाबात ज़रूरी तरमीम के साथ यहां दर्ज किए जा रहे हैं :

1 अमीरे एहले सुन्नत का सब से पेहला मदनी मुज़ाकरा

सवाल : आप ने सब से पेहला मदनी मुज़ाकरा कब किया था ?

जवाब : तारीख़ तो मुझे याद नहीं, अलबत्ता इतना पता है कि आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तेह़रीक दावते इस्लामी के बनने से भी पेहले हम हर हफ़्ते सवाल जवाब का इजतेमाअ़ मुन्अ़क़िद किया करते थे। लेकिन उस वक़्त इस का नाम **"मदनी मुज़ाकरा"** नहीं था।

(मदनी मुज़ाकरा, 30 जुमादल ऊला 1441 हि. बि तग़य्युरिन)

2 क्या नफ़्ल रोज़ा रखने के लिए वालिदैन की इजाज़त ज़रूरी है ?

सवाल : क्या नफ़्ल रोज़े रखने के लिए मां बाप की इजाज़त ज़रूरी है ?

जवाब : नफ़्ल रोज़े रखने के लिए मां बाप की इजाज़त लेना ज़रूरी नहीं है। "अलबत्ता अगर बीवी को नफ़्ल रोज़ा रखना हो तो उसे चाहिए कि शौहर से इजाज़त ले।" (देखिए : ردالمحتار/3/477 बहारे शरीअ़त, 1 / 1008- मदनी मुज़ाकरा 4 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1441 हि.)

3 लिख कर बात करने का फ़ाइदा

सवाल : क्या तेह़रीर बोलने के क़ाइम मक़ाम होती है ?

जवाब : जिस त़रह़ बोली जाने वाली हर बात का ह़िसाब है, उसी त़रह़ लिखे जाने वाले हर लफ़्ज़ का भी ह़िसाब है, लिख कर गाली भी दी जा सकती है, फ़ुज़ूल और बे ह़याई की बातें भी लिखी जा सकती हैं, जैसा कि लिखने वाले लिखते भी हैं। अगर हम ख़ामोशी की आ़दत बनाने के लिए जहां तक मुमकिन हो लिख कर गुज़ारा करेंगे तो इस का फ़ाइदा येह होगा कि 50 अल्फ़ाज़ की बात पांच लफ़्ज़ों में ख़त्म हो जाएगी, फिर येह कि लिखने में सुस्ती ज़्यादा होती है, इस लिए लिख कर बात करने की आ़दत बनाने से फ़ुज़ूल गोई का ख़ातिमा करना भी आसान हो जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 मुह़र्रमुल ह़राम 1441 हि.)

4 ख़ौफ़ दूर करने का रूह़ानी इलाज

सवाल : रात को अचानक आंख खुलने के बाद बहुत डर लगता है, इस सूरत में क्या किया जाए ?

जवाब : अगर ऐसा हो तो یَارَءُوْفُ یَارَءُوْفُ पढ़ते रहें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عزوجل ख़ौफ़ उड़ जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 16 जुमादल ऊला 1441 हि.)

5 अगर नाजाइज़ अंगूठी पेहनी हुई हो तो कब उतारे ?

सवाल : अगर कोई अभी ऐसी अंगूठी पेहने हुवे हो, जिस का पेहनना जाइज़ नहीं है तो वोह क्या करे और इस को कब उतारे ?

जवाब : हाथों हाथ यानी अभी फ़ौरन उतार दे और तौबा भी करे।

(मदनी मुज़ाकरा, 2 जुमादल ऊला 1441 हि.)

6 क्या क़रीबी रिश्तेदारों से भी ह़या करनी होती है ?

सवाल : क्या क़रीबी रिश्तेदारों या दोस्तों से भी ह़या करनी होती है ?

जवाब : ज़ाहिर है ह़या तो सब से करनी चाहिए

और सब से ज़्यादा **अल्लाह** पाक का ह़क़ है कि उस से ह़या की जाए और अकेले में भी बे ह़याई का काम न किया जाए। ह़ज़रते सैयदना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ जब किसी कमरे में होते और उस का दरवाज़ा भी बन्द होता तब भी नहाने के लिए कपड़े न उतारते और ह़या की वज्ह से कमर सीधी न करते थे।" (مسند احمد، 1/160، حدیث:543) **अल्लाह** करीम हमें उ़स्माने बा ह़या की ह़या से ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

(मदनी मुज़ाकरा, 4 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1441 हि.)

7 बुध के दिन नाख़ुन काटना कैसा ?

सवाल : क्या बुध के दिन नाख़ुन काटना जाइज़ नहीं है ?

जवाब : बुध के दिन नाख़ुन काटना जाइज़ है, अलबत्ता बचना बेहतर है।[1]

(देखिए, फ़तावा रज़विया, 22/574) (मदनी मुज़ाकरा, 24 रबीउ़ल आख़िर 1441 हि.)

8 क्या चोर को अ़ज़ाबे क़ब्र होगा ?

सवाल : क्या चोर को क़ब्र में अ़ज़ाब होगा ?

जवाब : जी हां ! ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना इमाम मसरूक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का फ़रमान है : जो चोरी करेगा या बदकारी करेगा या शराब पिएगा, मरने के बाद क़ब्र में उस पर दो सांप मुसल्लत़ कर दिए जाएंगे जो उस का गोश्त नोचेंगे। (موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، 5/476، حدیث:257) **अल्लाह** करीम हम सब को गुनाहों से बचाए।

(मदनी मुज़ाकरा, 16 जुमादल ऊला 1441 हि.)

9 नौकरी के लिए सिफ़ारिश करवाना कैसा ?

सवाल : आज कल नौकरी ह़ासिल करने के लिए सिफ़ारिश करवाना पड़ती है या रिश्वत देनी पड़ती है इस ह़वाले से आप क्या इरशाद फ़रमाते हैं ?

जवाब : जाइज़ चीज़ की सिफ़ारिश करना जाइज़ है, लेहाज़ा अगर किसी की (जाइज़ नौकरी के लिए) सिफ़ारिश करनी है और उस के पास मुतअ़ल्लिक़ा नौकरी के लिए मत़लूबा ख़ूबियां और अस्ल सर्टीफ़िकेट मौजूद है तो ऐसे शख़्स की सिफ़ारिश करना अच्छी बात और कारे सवाब है। लेकिन अगर उस के अन्दर मत़लूबा ख़ूबियां या अस्ल सर्टीफ़िकेट मौजूद नहीं है तो उस की सिफ़ारिश करना और केहना कि येह फुलां फुलां काम में माहिर है तो येह झूट है और ऐसा करना गुनाह है। नीज़ नौकरी के ह़ुसूल के लिए रिश्वत नहीं दे सकते, क्यूंकि रिश्वत का लेन देन ह़राम है। (देखिए : फ़तावा रज़विया, 23/ 597-(मदनी मुज़ाकरा, 4 शाबानुल मुअ़ज़्ज़म 1441 हि.)

10 दूल्हा दुल्हन का एक दूसरे के तह़ाइफ़ इस्तेमाल करना कैसा ?

सवाल : शादी के मौक़ेअ़ पर दूल्हा या दुल्हन को जो तह़ाइफ़ मिलते हैं क्या उन पर दोनों का ह़क़ होता है या जिसे तोह़फ़ा मिला था सिर्फ़ उसी का ह़क़ होता है ?

जवाब : जिस को तोह़फ़ा मिला है वोही तोह़फ़े का मालिक है। (فتاوی ہندیہ، 2/301 ماخوذا) उस की इजाज़त के बग़ैर वोह चीज़ दूसरा इस्तेमाल नहीं कर सकता। अलबत्ता अगर एक दूसरे को ख़ुशी से देना चाहें तो मन्अ़ नहीं है।

(मदनी मुज़ाकरा, 9 जुमादल ऊला 1441 हि.)

---

(1) बुध के दिन नाखुन नहीं काटने चाहिएं कि बर्स यानी कोढ़ हो जाने का अन्देशा है। अलबत्ता अगर उन्तालीस[39] दिन से नहीं काटे थे, आज चालीसवां दिन बुध है अगर आज नहीं काटता तो चालीस दिन से ज़ाइद हो जाएंगे तो इस पर वाजिब होगा कि आज ही के दिन काटे इस लिए कि चालीस दिन से ज़ाइद नाखुन रखना मकरूहे तेह़रीमी यानी नाजाइज़ व गुनाह है।

(देखिए, फ़तावा रज़विया, 22 /685-686)



नमाज़े ईद का त़रीक़ा

नमाज़े ईद का त़रीक़ा और बुन्यादी ज़रूरी मसाइल जानने के लिए येह रिसाला मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन ह़ासिल कीजिए।

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता एहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है। तेहरीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से मुल्क व बैरूने मुल्क से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त (पूछते रेहते) हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किए जा रहे हैं।

1 क़ज़ा रोज़े किस त़रह़ रखे जाएं ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस बारे में कि इस वक़्त वालिद साह़ब की उ़म्र पचास साल से ज़्यादा है लेकिन फ़िलह़ाल रोज़ा रखने की सलाहिय्यत है और रोज़ा रख भी रहे हैं। हमारे वालिद साह़ब का केहना है कि उन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में जान बूझ कर बहुत से रोज़े क़ज़ा कर दिए हैं, अब मालूम येह करना चाह रहे हैं कि इन क़ज़ा रोज़ों की अदाएगी की क्या सूरत है ? क़ज़ा रोज़े ही रखना ज़रूरी हैं या इन की जगह फ़िदया भी दे सकते हैं ? अगर फ़िदया देने की इजाज़त है तो एक रोज़े का कितना फ़िदया है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में आप के वालिद साह़ब ने अपनी ज़िन्दगी में जितने रोज़े जान बूझ कर तर्क किए हैं उन रोज़ों को क़ज़ा करना उन पर फ़र्ज़ है लगातार ज़रूरी नहीं (बल्कि) छोड़ छोड़ कर भी रख सकते हैं यूंही सर्दियों में रखना आसान होते हैं इस मौसम में रख लिए जाएं अल ग़रज़ जितना जल्दी हो सके रोज़े क़ज़ा ही करने होंगे, फ़िदये या कफ़्फ़ारा देना काफ़ी नहीं है। साथ में रोज़ा छोड़ने के गुनाह से तौबा करना भी लाज़िम है। याद रहे कि फ़िदये का हुक्म सिर्फ़ शैख़े फ़ानी के लिए है हर एक के लिए नहीं है। शैख़े फ़ानी से मुराद वोह शख़्स है जो बुढ़ापे के सबब इतना कमज़ोर हो चुका हो कि उस में ह़क़ीक़तन रोज़ा रखने की त़ाक़त न हो, न सर्दी में, न गर्मी में, न लगातार और न मुतफ़र्रिक़ त़ौर पर, और आइन्दा ज़माने में भी ज़ौफ़ बढ़ने की वज्ह से रोज़ा रखने की त़ाक़त होने की उम्मीद न हो।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 क़र्ज़दार को ज़कात के पैसे देना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़कात के मुस्तह़िक़ कौन कौन से लोग हैं। एक मुसलमान जो कि मक़रूज़ हो, सैयद और हाशमी भी न हो और क़र्ज़ की अदाएगी के लिए उस के पास कुछ न हो तो क्या येह अपने क़र्ज़ की अदाएगी के लिए ज़कात ले सकता है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

पूछी गई सूरत में जिस शख़्स के बारे में सवाल किया गया है, अगर वाक़ेई वोह ऐसा ही है तो फिर वोह ज़कात का मुस्तह़िक़ है, उसे ज़कात दे सकते हैं। ज़कात के मसारिफ़ में शरई फ़क़ीर और मक़रूज़ भी शामिल हैं।

शरई फ़क़ीर वोह है जिस के पास इतना न हो कि निसाब को पहुंच जाए या निसाब के बराबर तो हो मगर उस की ज़रूरिय्याते ज़िन्दगी में घिरा हुवा हो या मक़रूज़ हो कि क़र्ज़ा निकालने के बाद निसाब बाक़ी न रहे, ऐसा शख़्स शरई फ़क़ीर केहलाता है जिसे ज़कात देना जाइज़ है।

क़ुरआने मजीद फ़ुरक़ाने हमीद में ज़कात के मुस्तहिक़ आठ 8 क़िस्म के लोग क़रार दिए गए। फिर इन में से मुअल्लिफ़तुल क़ुलूब बि इजमा ए सहाबा साक़ित हो गए तो अब ज़कात के मसारिफ़ दर्जे ज़ैल सात क़िस्म के लोग हैं : 1 फ़क़ीर 2 मिस्कीन 3 आमिल 4 रिक़ाब 5 ग़ारिम यानी मक़रूज़ 6 फ़ी सबीलिल्लाह यानी जो राहे ख़ुदा में हो 7 इब्ने सबील, वोह मुसाफ़िर जिस के पास माल न रहा हो। अलबत्ता फ़ी ज़माना रिक़ाब की सूरत भी नहीं पाई जाती कि अब कोई लौंडी ग़ुलाम नहीं तो इन को छुड़ाने में अदाएगी ए ज़कात की सूरत भी नहीं बनती।

ज़रूरी तम्बीह : याद रहे कि इस सूरत में ज़कात लेने की इजाज़त उसी वक़्त तक होगी जब तक वोह शख़्स शरई फ़क़ीर रहेगा, लेहाज़ा जब उस के पास क़र्ज़ मिन्हा (यानी माइनस) करने के बाद साढ़े बावन तोला चांदी के बराबर हाजाते अस्लिय्या से ज़्यादा रक़म होगी तो तब वोह शरई फ़क़ीर नहीं रहेगा बल्कि ग़नी हो जाएगा और फिर मज़ीद कोई शख़्स अपनी ज़कात उसे नहीं दे सकेगा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 सदक़ए फ़ित्र किस पर वाजिब है?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उलमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि जिस शख़्स ने किसी उज़्र की वज्ह से रमज़ान शरीफ़ के रोज़े न रखे हों क्या उस पर भी सदक़ए फ़ित्र वाजिब है या नहीं?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

सदक़ए फ़ित्र हर आज़ाद, मुसलमान कि जो निसाब का मालिक हो (यानी जिस के पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या साढ़े बावन तोला चांदी की मालियत के ब क़दर रक़म या कोई सामान हाजते अस्लिया और क़र्ज़ के इलावा मौजूद हो) उस पर वाजिब है। रमज़ान के रोज़े रखना इस में शर्त नहीं वोह जुदागाना तौर पर फ़र्ज़ हैं लेहाज़ा जिस ने किसी उज़्र की वज्ह से या مَعَاذَاللّٰہ बिला उज़्र, रमज़ान में रोज़े नहीं रखे, अगर वोह साहिबे निसाब है तो उस पर भी सदक़ए फ़ित्र वाजिब है।

तम्बीह : याद रहे कि बग़ैर किसी शरई उज़्र के रमज़ान शरीफ़ का रोज़ा छोड़ देना, सख़्त हराम व गुनाह है, ऐसे शख़्स पर शरअन इस गुनाह से तौबा करना और बाद में इन रोज़ों की क़ज़ा करना लाज़िम है, यूंही जिस शख़्स ने किसी शरई उज़्र की वज्ह से रोज़े नहीं रखे, उस पर भी उज़्र ख़त्म होने के बाद इन रोज़ों की क़ज़ा लाज़िम है। हां, अगर येह शैख़े फ़ानी की हद तक पहुंच चुका हो यानी इस क़दर बूढ़ा हो चुका हो कि बुढ़ापे की वज्ह से इस में न अब रोज़ा रखने की ताक़त है और न आइन्दा इतनी ताक़त आने की उम्मीद है बल्कि रोज़ बरोज़ कमज़ोरी बढ़ती जा रही है तो ऐसी सूरत में उस पर हर रोज़े के इवज़ फ़िदया देना लाज़िम है। एक रोज़े का फ़िदया, एक सदक़ए फ़ित्र की मिक़्दार यानी निस्फ़ साअ़ (2 किलो में 80 ग्राम कम) गन्दुम या इस का आटा, या एक साअ़ (यानी 4 किलो में 160 ग्राम कम) खजूर, या किशमिश या जव या इस का आटा है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم



फ़त्हे मक्का के अस्बाब व नताइज

मौलाना अय्यूब अत्तारी मदनी

हिजरत के आठवें साल रमज़ानुल मुबारक के महीने में आस्मानो ज़मीन ने एक ऐसी फ़त्ह का मन्ज़र देखा कि जिस की मिसाल नहीं मिलती, इस फ़त्ह का पस मन्ज़र व सबब क्या था और नताइज क्या रूनुमा हुवे इस का ख़ुलासा मुलाहज़ा कीजिए । रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बिअ़सत व एलाने नबुव्वत के साथ ही मक्कए मुकर्रमा के वोह लोग जो आप को सादिक़ो अमीन, शरीफ़, मोहतरम, क़ाबिले फ़ख़्र और इज़्ज़तो करामत के हर लक़ब का अह्ल जानते थे यक लख़्त आप के मुख़ालिफ़ हो गए, उन्हें दीने इस्लाम के पैग़ाम पर अ़मल पैरा होने में अपनी सरदारियां खो जाने का डर हुवा, उन्हें येह मालूम न था कि अगर आज रसूले ख़ुदा की पुकार पर लब्बैक केह दें तो 14 सदियां बाद तो क्या क़ियामत तक सहाबी ए रसूले आख़िरुज़्ज़मां के अ़ज़ीम लक़ब से जाने जाएंगे, हर कलिमा गो उन्हें رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم केह कर याद करेगा, क़ुरआन ﴿وَ كُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى﴾ का मुज़्दा सुनाएगा, बहर कैफ़ येह उन के नसीब में ही न था, (जिन के मुक़द्दर में था उन्हों ने लब्बैक भी कहा) और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुख़ालफ़त करने वालों के हाथों त़रह़ त़रह़ की अज़िय्यतें उठाईं, लेकिन सब्रो इस्तेक़ामत का दामन थामे रखा, जब कुफ़्फ़ारे मक्का का ज़ुल्मो सितम सारी ह़दें पार कर गया और अल्लाह करीम ने भी इजाज़त दे दी तो मुसलमान मक्कए मुकर्रमा से मदीनए मुनव्वरा हिजरत कर गए ताकि आज़ादी के साथ अपने रब्बे करीम की इबादत करें । लेकिन अफ़्सोस कि कुफ़्फ़ारे मक्का फिर भी बाज़ न आए और मुसलमानों को मदीनए मुनव्वरा में भी अज़िय्यत देने के दरपे रहे, उन की इन्ही कारस्तानियों के सबब ग़ज़वए बद्र, उहुद, ख़न्दक़ और कई सराये का वुक़ूअ़ हुवा, वक़्त गुज़रते गुज़रते हिजरत का छटा साल आ गया, मुसलमान मक्कए मुकर्रमा में बैतुल्लाह शरीफ़ की ज़ियारत के लिए बे क़रार थे, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم 1400 सहाबए किराम की हमराही में अदाएगी ए उ़मरा के लिए मक्कए मुकर्रमा की जानिब रवाना हुवे, कुफ़्फ़ारे मक्का ने फिर जफ़ाकारी से काम लिया और पुर अम्न मुसलमानों को मक्कए मुकर्रमा में दाख़िल होने से मन्अ़ कर दिया, बिल आख़िर त़वील मुज़ाकरात के बाद एक मुआ़हदा त़ै पाया जिसे सुल्ह़े हुदैबिय्या का नाम दिया गया । ज़ाहिरी त़ौर पर इस मुआ़हदे की अक्सर शराइत़ मुसलमानों के ह़क़ में बहुत सख़्त थीं लेकिन अल्लाह तआ़ला के कामों में ह़िक्मत है और रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसी के भेजे हुवे ह़कीमे काइनात हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब शराइत़ मन्ज़ूर फ़रमा लीं, उन शराइत़ में येह भी था कि फ़रीक़ैन दस साल तक जंग मौक़ूफ़ रखेंगे, इस के साथ साथ मुआ़हदे में एक बात येह त़ै पाई कि अ़रब के दीगर क़बाइल को येह इख़्तियार होगा कि वोह दोनों फ़रीक़ों में से जिस के साथ चाहें बाहमी इमदाद का मुआ़हदा कर लें । अ़रब के दो क़बीले ख़ुज़ाआ़ और बनू बक्र आपस में दुश्मन थे और उन में बहुत अ़र्से से लड़ाइयां जारी थीं । सुल्ह़े हुदैबिय्या के बाद क़बीला ख़ुज़ाआ़ मुसलमानों का दोस्त बन गया और बनू बक्र नामी क़बीले ने क़ुरैश के साथ इत्तेह़ाद कर लिया । अब चूंकि सुल्ह़ के मुआ़हदे की

वज्ह से मुसलमानों की त़रफ़ से ह़म्ले का कोई इमकान नहीं था इस लिए बनू बक्र की एक शाख़ बनू नुफ़ासा ने मौक़अ़ ग़नीमत जानते हुवे कुफ़्फ़ारे कुरैश के साथ मिल कर बनू ख़ुज़ाआ़ पर अचानक ह़म्ला कर दिया ।[1] येह वाज़ेह़ त़ौर पर सुल्ह़े ह़ुदैबिय्या के मुआ़हदे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी थी जिस में बनू ख़ुज़ाआ़ को काफ़ी जानी नुक़्सान उठाना पड़ा । इस वाक़िए़ की ख़बर जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हुई तो आप ने कुरैश की त़रफ़ पैग़ाम भेजा कि तीन शर्तों में से कोई एक शर्त क़बूल कर लें : 1 ख़ुज़ाआ़ के मक़्तूलीन का ख़ून बहा (यानी उन के क़त्ल का बदला) दें 2 बनू नुफ़ासा की ह़िमायत से दस्तबरदार हो जाएं 3 एलान कर दें कि ह़ुदैबिय्या का मुआ़हदा टूट गया । क़र्त़ा बिन उ़मर ने कुरैश का नुमाइन्दा बन कर कहा कि हमें सिर्फ़ तीसरी शर्त मन्ज़ूर है ।[2] 10 रमज़ानुल मुबारक 8 हिजरी को नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दस हज़ार का लश्कर ले कर मक्के की त़रफ़ रवाना हो गए । मक्का शरीफ़ पहुंच कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह रेह़मत भरा फ़रमान जारी किया कि जो शख़्स हथियार डाल देगा उस के लिए अमान है, जो शख़्स अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा उस के लिए अमान है, जो मस्जिदे ह़राम में दाख़िल हो जाएगा उस के लिए अमान है । मज़ीद फ़रमाया कि जो अबू सुफ़्यान के घर में दाख़िल हो जाए उस के लिए भी अमान है ।[3] फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काबए मुक़द्दसा को बुतों से पाक फ़रमा कर काबा शरीफ़ के अन्दर नफ़्ल अदा फ़रमाए और बाहर तशरीफ़ ला कर ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाने के बाद कुफ़्फ़ारे कुरैश से इरशाद फ़रमाया : बोलो ! तुम को कुछ मालूम है कि आज मैं तुम से क्या मुआ़मला करने वाला हूं ?

कुफ़्फ़ार आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रेह़मत को मद्दे नज़र रखते हुवे बोले : اَخٌ كَرِيْمٌ وَابْنُ اَخٍ كَرِيْمٍ आप करम वाले भाई और करम वाले भाई के बेटे हैं ।

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रेह़मत जोश में आई और यूं फ़रमाया :

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ فَاذْهَبُوْا اَنْتُمُ الطُّلَقَآءُ

आज तुम पर कोई इल्ज़ाम नहीं, जाओ तुम आज़ाद हो । बिल्कुल ग़ैर मुतवक़्क़ेअ़ त़ौर पर येह एलान सुन कर कुफ़्फ़ार जूक़ दर जूक़ दाइरए इस्लाम में दाख़िल होने लगे ।[4]

इस आ़म मुआ़फ़ी का कुफ़्फ़ार के दिलों पर बहुत अच्छा असर पड़ा और वोह आ आ कर आप के हाथ पर इस्लाम की बैअ़त करने लगे, फ़त्ह़े मक्का के रोज़ दो हज़ार अफ़राद ईमान लाए थे ।[5]

ह़ज़रते सुहैल बिन अ़म्र رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه सरदाराने कुरैश में से थे । पेहले इस ख़ौफ़ से अपने घर में बन्द हो गए थे कि कहीं मुझे क़त्ल न कर दिया जाए क्यूंकि ह़ालते कुफ़्र में इन्हों ने इस्लाम की बहुत ज़्यादा मुख़ालफ़त की थी । इन्हों ने अपने बेटे जो मुसलमान थे, उन के हाथ सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में अमान का पैग़ाम भेजा तो आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें अमान अ़त़ा फ़रमा दी और इस के बाद वोह ईमान ले आए ।[6] ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन सअ़द बिन अबिस्सरह رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه येह भी कुरैश के सरदारों में से थे । ह़ज़रते सैयदना उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के रिज़ाई भाई थे । येह पेहले इस्लाम लाने के बाद मुर्तद हो गए थे, इस लिए येह ह़ुक्म जारी किया गया था कि जहां मिले क़त्ल कर दिया जाए । ह़ज़रते उ़स्मान इन्हें ले कर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवे और इन के लिए अमान त़लब की, सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन्हें अमान अ़त़ा फ़रमाई और बैअ़ते इस्लाम ले ली, यूं येह भी मुसलमान हो गए और ऐसे ज़बरदस्त मुसलमान हुवे कि फिर कोई ऐसी बात इन से सरज़द नहीं हुई जो इन के दीन को दाग़दार करे ।[7] ह़ज़रते सैयदना अमीरे मुआ़विया और इन के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सैयदना अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا समेत कई अहम शख़्सियात फ़त्ह़े मक्का के मौक़ेअ़ पर दाइरए इस्लाम में दाख़िल हुईं, जिन में से चन्द नाम येह हैं : ह़ज़रते अबू क़ुह़ाफ़ा, ह़ज़रते ह़कीम इब्ने ह़िज़ाम, ह़ज़रते जुबैर इब्ने मुत़इम, ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने समुरह, ह़ज़रते अ़त्ताब बिन असीद, ह़ज़रते अ़त्ताब बिन सुलैम और ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ह़कीम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُم ।[8]

अल्लाह पाक अपने प्यारे ह़बीब फ़ातेह़े मक्का صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हुस्ने अख़्लाक़ के सदक़े हमें भी बा अख़्लाक़ बनाए और दुन्या ओ आख़ेरत में इस ख़ुल्क़े अ़ज़ीम वाले आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सायए रेह़मत अ़त़ा फ़रमाए । आमीन

---

(1) مدارج النبوة، 2/281 (2) شرح الزرقانی علی المواهب، 3/384 (3) معرفة السنن والآثار للبیهقی، 13/293، 294، حدیث: 18231، 18236 (4) بخاری، 1/156، حدیث: 397، سبل الهدیٰ والرشاد، 5/242 (5) امتاع الاسماع، 8/388 (6) المغازی للواقدی، 2/846، 847 (7) المغازی للواقدی، 2/856 (8) اسد الغابة، 3/602، سیر اعلام النبلاء، 3/217، 575، 576، 4/233، 267۔

कैसा होना चाहिए ?

राशिद अ़ली अ़त्तारी मदनी

बेटे को कैसा होना चाहिए ?

इस्लामी तालीमात से दूर मुआ़शरे जिन अख़्लाक़ी पस्तियों का शिकार हैं, उन में से एक मां बाप की क़द्रो ताज़ीम का फ़ुक़्दान भी है । पैदा होते ही बेटे के डॉक्टर, इन्जीनीयर, सरकारी ऑफ़ीसर वग़ैरा बनने के ख़यालात और ख़्वाब देखने वाले मां बाप उस वक़्त क़ाबिले रह़म होते हैं, जब उन के पढ़े लिखे (Well Educated) केहलाने वाले बेटे उन्हें एक कमरे तक मेह़दूद रेहने पर मजबूर कर देते हैं, या फिर ओल्ड हाऊस की ज़ीनत बना देते हैं । तोतली ज़बान में आधी आधी बातें करने वाले बेटे की सारी बातें समझ लेने वाले मां बाप जब बुढ़ापे में "आप चुप रहें, आप को क्या पता ?" जैसे (सख़्त) जुम्ले सुनते हैं, तो इन का दिल केहता है : **हमारे बेटे को ऐसा नहीं होना चाहिए ।** क़र्ज़दारी, तंगदस्ती, बे रोज़गारी जैसी न जाने कितनी आज़माइशों का सामना कर के एक से ज़ाइद बच्चों की यक्सां परवरिश करने वाले मां बाप को जब बुढ़ापे में दो वक़्त खाना भी "मांगने" पर मिलता है तब वोह केहते हैं कि हमारे बेटे को ऐसा नहीं होना चाहिए । दुन्यवी तरक़्क़ी की दिलदादा अक्सरियत अपने बेटों को फ़क़त दुन्या सिखाती और इल्मे दीन से दूर रखती है, इन्ही मां बाप को जब बुढ़ापे में येह बेटे अपने लिए बोझ और संभालना मुसीबत समझते हैं तो येही मां बाप केहते हैं कि **हमारे बेटे को ऐसा नहीं होना चाहिए ।** बेटे को इल्मे दीन सिखाया होता, आ़लिम बनाया होता तो मां बाप को शायद ऐसा न केहना पड़ता ।

आख़िर **"बेटे को कैसा होना चाहिए ?"** आइए इस सवाल का जवाब इस्लाम से पूछते हैं । इस्लाम ने अच्छे बेटे की जो ख़ूबियां और ज़िम्मेदारियां बयान की हैं उन में से चन्द मुलाह़ज़ा फ़रमाइए : चुनान्चे,

बेटे को मां बाप के साथ हुस्ने सुलूक और निहायत नर्मी से पेश आने वाला, बूढ़े मां बाप को झिड़कना और गुस्सा दिखाना तो दर किनार उफ़ तक न केहने वाला, शफ़्क़त व मेहरबानी करते हुवे उन के सामने आ़जिज़ी करने वाला और उन के लिए अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की बारगाह से रेह़मत त़लब करने वाला होना चाहिए ।

(माख़ूज़ अज़, पारह 15, बनी इस्राईल : 23 ता 24)

बेटे को मां बाप की ख़िदमत के दौरान पेश आने वाली हर त़रह़ की तकालीफ़ को ख़न्दा पेशानी से बरदाश्त करने वाला होना चाहिए जैसा कि एक सह़ाबी ने अपनी मां को कन्धों पर उठाए, सख़्त गर्म पथ्थरों वाले रस्ते पर चलते हुवे छे मील का सफ़र त़ै किया, वोह पथ्थर इतने गर्म थे कि अगर गोश्त का टुकड़ा उन पर डाला जाता तो कबाब हो जाता । (معجم صغیر، 1/92، حدیث: 257، ملخصاً)

बेटे को दिन रात की परवाह किए बग़ैर वालिदैन की ख़िदमत में मसरूफ़ रेहने वाला होना चाहिए जैसा कि ह़ज़रते सैयदना बायज़ीद बिस्त़ामी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَیْه सख़्त सर्द रात में मां के लिए पानी का प्याला लिए सारी रात खड़े रहे, यहां तक कि पानी बेह कर उंगली पर जम गया और बरतन उंगली से चिमट गया, जब छुड़ाया तो उंगली से जिल्द उखड़ने पर ख़ून बेह निकला ।

(नुज़्हतुल मजालिस, 1 / 261 मुलख़्ख़सन)

बेटे को मां बाप की हर नागवार बात व नारवा सुलूक पर सब्र करने वाला और हर ह़ाल में मां बाप को राज़ी रखने की कोशिश करने वाला होना चाहिए, जैसा कि एक बार रसूले करीम صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने इस ह़ाल में शाम की, कि मां बाप के बारे में अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी करता है उस के लिए सुब्ह़ ही को जहन्नम के दो दरवाज़े खुल जाते हैं तो एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया : अगर्चे मां बाप उस ज़ुल्म करें । फ़रमाया : अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें, अगर्चे ज़ुल्म करें । (شُعَبُ الایمان، 6/206، حدیث: 7916)

बेटे को मां बाप की वफ़ात के बाद भी उन की इ़ज़्ज़तो आबरू की हिफ़ाज़त, उन के क़र्ज़ की अदाएगी और उन की क़समें पूरी करने में कोशिश करने वाला होना चाहिए, चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है : जो शख़्स अपने वालिदैन के (इन्तेक़ाल के) बाद उन की क़सम सच्ची करे और उन का क़र्ज़ उतारे और किसी के मां बाप को बुरा केह कर उन्हें बुरा न कहेलवाए वोह वालिदैन के साथ भलाई करने वाला लिखा जाएगा अगर्चे (उन की ज़िन्दगी में) "ना फ़रमान" था ।

(معجم اَوْسَط، 4/232، حدیث: 5819)

बेटे को ख़िदमत व ज़रूरत की वज्ह से बुलाने पर फ़ौरन मां बाप के पास ह़ाज़िर हो जाना चाहिए यहां तक कि अगर परदेस में हो तब भी, चुनान्चे, बहारे शरीअ़त में है : "येह (यानी बेटा) परदेस में है, वालिदैन इसे बुलाते हैं तो आना ही होगा, ख़त लिखना काफ़ी नहीं है । यूंही वालिदैन को इस की ख़िदमत की ह़ाजत हो तो आए और इन की ख़िदमत करे ।

(बहारे शरीअ़त, 3 / 559)

अल्लाह तआ़ला हर बेटे को इस्लामी अवसाफ़ वाला बेटा बनने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए । आमीन

मुस्बत सोचिए !
Think Positive

मौलाना मुहम्मद इमरान अ़त्तारी

कुछ दिन पेहले की बात है कि हम एक शख़्स से राबिते की कोशिश कर रहे थे, हम में से किसी ने उस का नम्बर मिलाया तो कॉल रीसीव नहीं हो रही थी, मुझे बताया गया तो फ़ौरन ज़ेहन में ख़याल आया कि वोह बाईक पर हो । दिल में ऐसी सोच का पैदा होना येह **अल्लाह** पाक का करम, उस की इनायत, दावते इस्लामी जैसे दीनी माहोल के साथ अटेचमेन्ट और शैख़े तरीक़त, अमीरे एहले सुन्नत हज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के दामन से वाबस्तगी का नतीजा है, वरना येह सोच भी आ सकती थी कि वोह शख़्स जान बूझ कर कॉल नहीं उठा रहा होगा अगर उस वक़्त ऐसी नेगेटीव सोच मेरे ज़ेहन में आती और फिर इसी को मैं अपनी ज़बान पर भी लाता तो इस का मेरे पास क्या सुबूत होता ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हम जब किसी को कॉल, वॉटसएप या मेसेज करते हैं तो रिस्पोन्स न मिलने पर उ़मूमन दर्जे ज़ैल पोज़ीटीव और नेगेटीव बातें हमारे दिल या ज़बान पर आ जाती हैं, मसलन कॉल नहीं उठ रही, कॉल उठा नहीं रहा, नम्बर रिसीव नहीं कर रहा, नम्बर रिसीव नहीं हो रहा, उस ने मेरा वॉट्सएप चेक नहीं किया और वॉट्सएप चेक नहीं हुवा वग़ैरा । मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ़ पर लोग कई नेगेटीव सोचों और बातों के ज़रीए डाइरेक्ट या इनडाइरेक्ट दूसरे की ज़ात और इ़ज़्ज़त पर अटेक कर रहे होते हैं जबकि इस्लामी तालीमात इन चीज़ों से रोक रही होती हैं, आप भी अपनी दिली कैफ़िय्यत के बारे में ग़ौर फ़रमा लीजिए कि जब आप किसी को कॉल, वॉट्सएप या मेसेज करते, किसी के घर की बेल या दरवाज़ा बजाते हैं तो रिस्पोन्स न मिलने पर आप के दिल में पोज़ीटीव सोच आती है या नेगेटीव ? सब से पेहले आप के ज़ेहन में जो भी ख़याल आता है वोही आप की दिली कैफ़िय्यत है । मगर एक बात याद रखिए ! बिला इजाज़ते शरई दूसरे शख़्स के बारे में अपने दिल में बुरे ख़याल और नेगेटीव सोच का लाना दिल के गन्दा होने की निशानी है । "अइम्मए दीन رحمۃُ اللہِ علیہم फ़रमाते हैं : ख़बीस गुमान ख़बीस दिल से पैदा होता है । (فیض القدیر للمناوی، 157/3، تحت الحدیث:2901) दिल में ख़बासत और गन्दगी के होते हुवे इन्सान का ख़ुद को अच्छा और नेक समझना इस की अ़क़्लमन्दी है या बे वुक़ूफ़ी इस का जवाब हर सलामत अ़क़्ल रखने वाले के पास मौजूद होगा । बहर हाल शरीअ़त के दाइरे में रेहते हुवे दूसरों के साथ अच्छाई करना और उन के बारे में अच्छा सोचना, येह इस्लाम की बहुत ही ख़ूब सूरत तालीमात में से है, इस का जहां उख़रवी फ़ाइदा है वहीं दुन्यवी एतिबार से भी इस के बे शुमार फ़वाइद हासिल होते हैं, मसलन इस से आदमी स्ट्रेस (ज़ेहनी दबाव) का शिकार नहीं होता बल्कि अगर ऐसी बीमारी में मुब्तला भी हो तो इस सोच की वज्ह से उस का स्ट्रेस कम होता, उस की ज़ेहनी उलझनें दूर होतीं और ज़ेहनी एतिबार से वोह ख़ुद को हल्का फुल्का मेहसूस करता, उस का इम्यून सिस्टम अच्छा रेहता और उस की ज़िन्दगी ख़ुश गवार हो जाती है, इस के बर ख़िलाफ़ अगर इन्सान दूसरों के साथ बुरा करे या दूसरों के ख़िलाफ़ सोचे, इस की जहां उख़रवी ख़राबियां हैं वहीं दुन्यवी नुक़्सानात भी बहुत से हैं, मसलन इस तरह़ आदमी डिप्रेशन, टेन्शन, एनज़ायटी (घबराहट), बाज़ अवक़ात शूगर लेवल के बढ़ने, ब्लडप्रेशर बिगड़ने, बेचैनी, बे क़रारी, बे सुकूनी, नींद न आने और दीगर कई तरह़ की बीमारियों और परेशानियों से दो चार रेहता है, येही ग़लत और नेगेटीव सोच सगे भाइयों और बहनों में दुश्मनी, सास बहू में लड़ाई, मियां बीवी के एक दूसरे पर एतिमाद की कमी फिर लड़ाई और बिल आख़िर तलाक़ और जुदाई, नीज़ ख़ूनी रिश्तों में दराड़ें आने और हंसते बसते घर उजड़ने का एक बहुत बड़ा सबब होती है । तफ़्सीर सिरातुल जिनान में

नोट : येह मज़मून निगराने शूरा की गुफ़्तगू वग़ैरा की मदद से तैयार कर के उन्हें चेक करवाने के बाद पेश किया गया है ।

लिखा है कि "दूसरों के लिए बुरे ख़यालात रखने वाले अफ़राद पर फ़ालिज और दिल की बीमारियों का ख़तरा ज़्यादा हो जाता है जैसा कि अमेरीकन हार्ट एसोसीएशन की जानिब से जारीकर्दा एक तेहक़ीक़ी रिपोर्ट में येह इन्केशाफ़ किया गया है कि वोह अफ़राद जो दूसरों के लिए मुख़ालिफ़ाना सोच रखते हैं और इस की वज्ह से ज़ेहनी दबाव का शिकार और ग़ुस्से में रेहते हैं उन में दिल की बीमारियों और फ़ालिज का ख़तरा 86 % बढ़ जाता है। (सिरातुल जिनान, 9 / 436) वाक़ेई येह हक़ीक़त है कि कुछ लोगों का ज़ेहन उल्टा ही चलता है, उन के साथ जो अच्छा हुवा उसे सोचने के बजाए जो बुरा हुवा वोह उसे ही सोचते रेहते हैं, बसा अवक़ात तो किसी की अच्छाई को भी बुराई समझ रहे होते हैं, बाज़ तो वैसे ही कुछ देख कर या फिर किसी की कोई बात दूसरे के ख़िलाफ़ या अपने ख़िलाफ़ सुन कर अपनी नेगेटीव सोच के मीटर को ऑन कर लेते हैं, याद रखिए ! अपनी ग़लतियों, ख़ामियों और कमज़ोरियों की तरफ़ देखने और उन्हें दूर करने के बजाए मन्फ़ी सोचते रेहना इन्सान को तिब्बी एतिबार से कहां तक ले जा सकता है मुलाहज़ा कीजिए :

UK के एक माहिरे नफ़्सियात डॉक्टर का केहना है कि जो लोग भी मेन्टल हेल्थ प्रोब्लम का शिकार होते हैं उन में से अक्सर की वज्ह मन्फ़ी सोचें होती हैं, उन की सब से बड़ी प्रोब्लम येही होती है कि वोह अपने साथ होने वाले सिर्फ़ मन्फ़ी रवय्यों को ही याद रखते और उन चीज़ों को सोचते रेहते हैं, फिर बिल आख़िर (Ultimately) ऐसे अफ़राद ज़ेहनी तौर पर प्रेशर, स्ट्रेस, डिप्रेशन, घबराहट (Anxiety), आसाबी बीमारियों (neurotic disorders) और पागल पन (Insanity) के शिकार हो जाते हैं।

इस तरह के अफ़राद का जब इलाज किया जाता है तो दवाई के साथ साथ बल्कि दवाई से भी पेहले मरीज़ की मन्फ़ी सोचों को मरीज़ पर ज़ाहिर किया जाता है, ताकि वोह ख़ुद समझ ले और इस बात को क़बूल कर ले कि "हां" येह मेरी मन्फ़ी सोचें हैं, इस के बाद ऐसे मरीज़ को उस की ज़िन्दगी के पोज़ीटीव पेहलूओं के हवाले से कहा जाता है कि आप सोचिए ! कि ज़िन्दगी में आप के साथ क्या क्या अच्छाई हुई या किस ने आप के साथ क्या अच्छाई की है, येह मन्फ़ी से मुस्बत सोच की जानिब ख़ुद को लाने का बहुत बेहतरीन तरीक़ा है और इस से मरीज़ की सेहत जल्द बेहतर होना शुरूअ हो जाती है।

इस्लाम कितना प्यारा मज़हब है कि जो हमें ज़िन्दगी के हर मोड़ पर ख़ुद को पोज़ीटीव रखने और पोज़ीटीव सोचने का दर्स देता और ऐसी सोच को इबादत केहता है, लेहाज़ा जब तक शरीअत इजाज़त न दे तब तक मुसलमानों के अफ़्आल व अक़्वाल के बारे में अच्छी ही सोच रखिए और बिल ख़ुसूस अपने पैदा करने वाले ख़ालिक़ो मालिक रब्बे करीम के साथ भी अच्छा गुमान रखिए कि वोह करीम जो करता है अच्छा ही करता है, **अल्लाह** पाक के आख़री नबी मुहम्मदे अरबी صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आलीशान है : अच्छा गुमान अच्छी इबादत से है। (ابوداؤد، 4/387، حدیث:4993)

हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : इस फ़रमाने आली के कई मतलब हो सकते हैं : एक येह कि **अल्लाह** पाक के साथ अच्छा गुमान उस से उम्मीद वाबस्ता करना भी इबादत में से एक अच्छी इबादत है। दूसरा येह कि **अल्लाह** पाक से उम्मीद अच्छी इबादत से हासिल होती है जो इबादत करेगा उसे येह उम्मीद नसीब होगी। तीसरा येह कि इबादत के ज़रीए **अल्लाह** पाक से अच्छी उम्मीद रखो, इबादत से ग़ाफ़िल रेह कर उम्मीदें बांधना हमाकत (बे वुक़ूफ़ी) है जैसे कोई "जव" बो कर गन्दुम काटने की उम्मीद करे। चौथा येह कि **अल्लाह** पाक के बन्दों यानी मुसलमानों से अच्छा गुमान करना उन पर बद गुमानी न करना येह भी अच्छी इबादात में से एक इबादत है इस फ़रमान के और भी माना हो सकते हैं मसलन येह कि मुसलमानों पर अच्छा गुमान अच्छी इबादात से हासिल होता है जो आबिद (इबादत करने वाला) होगा वोह ही नेक गुमान होगा, जो ख़ुद बुरा होगा दूसरों को भी बुरा ही समझेगा।

(मिरआतुल मनाजीह, 6 /621 मुलख़्ख़सन)

मेरी तमाम आशिक़ाने रसूल से **फ़रियाद** है ! दुन्यवी और उख़रवी नुक़्सानात से बचने के लिए अपनी सोचों को पोज़ीटीव रखिए, अपनी औलाद, घर वालों और अपने तअल्लुक़ रखने वालों को भी इसी का ज़ेहन दीजिए, मुआशरे में पोज़ीटीव सोच डिलीवर करने वाली दीनी तेहरीक **"दावते इस्लामी"** के साथ अपनी वाबस्तगी को मज़बूत कीजिए, इस के लिए मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र, मदनी मुज़ाकरों में शिर्कत और हर माह **"माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"** को लेना और पढ़ना मत भूलिए। **अल्लाह** पाक हमें अमल की सआदत नसीब फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم



शाने हबीब व ज़बाने हबीब

(क़िस्त : 05)

मौलाना अबुल हसन अत्तारी मदनी

शाने राहतो रेहमत

13 اَنَا رَحْمَةٌ مُهْدَاةٌ यानी मैं रेहमत हूं, रब का हदिया हूं।[1]

येह रेहमते आ़लम ही की शान है कि सारी काइनात में हुक्मे इलाही से तसर्रुफ़ का इख़्तियार रखने वाले हैं लेकिन फिर भी साफ़ अल्फ़ाज़ में फ़रमाते हैं कि मैं तो तुम्हारे लिए रेहमत हूं, तुम्हारे रब की त़रफ़ से हदिया हूं। उ़लमा ए किराम ने رَحْمَةٌ और مُهْدَاةٌ को भी आप के मुबारक अस्मा ओ अल्क़ाबात में शुमार किया है। हदिया वोह होता है जिस का बदल न देना पड़े, सुबुलुल हुदा वर्रशाद में है : "इस का माना येह है कि अल्लाह करीम ने मुझे बन्दों के लिए ऐसी रेहमत बना कर भेजा है जिस का कोई बदला नहीं मांगा जाएगा क्यूंकि जब कोई हदिया रेहमत व शफ़्क़त के त़ौर पर भेजा जाए तो इस से इ़वज़ व बदले का इरादा नहीं किया जाता।"[2]

14 اَنَا رَسُولُ الرَّحْمَةِ وَ رَسُولُ الرَّاحَةِ यानी मैं रेहमतो राहत वाला रसूल हूं।[3]

इस फ़रमाने मुबारक में दो अस्मा ए शाहे मदीना का बयान हुवा है : رَسُولُ الرَّحْمَةِ और رَسُولُ الرَّاحَةِ

यहां अव्वलन इस्मे गिरामी رَسُولُ الرَّاحَةِ के बारे में कुछ मुलाहज़ा करते हैं : यूं तो राहत और रेहमत क़रीबुल माना हैं लेकिन इन में फ़र्क़ भी किया जाता है। राहत को सुकून, आसानी, सहूलत, दिली ख़ुशी और मुश्किलात से रिहाई के त़ौर पर भी जाना जाता है।

इन में से किसी भी मफ़्हूम की रौशनी में रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात को देखा जाए, आप हर लेहाज़ से कामिलो अकमल हैं, आप की तशरीफ़ आवरी एक अ़लाक़ा, क़बीला, शेह्र या मुल्क नहीं बल्कि सारी काइनात के लिए राहत सुकून और आसानी का सबब बनी।

आप की आमद से तौबा आसान हो गई। गुनाह करने वालों के गुनाह उन के दरवाज़ों पर नहीं लिखे जाते। नमाज़ के लिए सिर्फ़ इबादत ख़ानों ही की तख़्सीस न रही बल्कि हर पाक जगह को नमाज़ के लिए जाइज़ क़रार दिया गया। छोटी छोटी नेकियों पर बड़े बड़े सवाब दिए गए। ह़ज, उ़मरा, सदक़ा और दीगर बड़े बड़े नेक आमाल करने की इस्तेत़ाअ़त न रखने वालों को छोटी छोटी नेकियों पर इन आमाल का अज्र दिए जाने का फ़रमाया गया। एक बार سُبْحَانَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ केहने पर जन्नत में दरख़्त लगने की नवीद सुनाई गई। एक ह़र्फ़े क़ुरआनी की क़िराअत पर दस नेकियों का मुज़्दा मिला, तीन बार सूरए इख़्लास की तिलावत पर पूरे क़ुरआन का सवाब मिलने की खुश ख़बरी मिली, गुनाहगारों को मैदाने ह़श्र में शफ़ाअ़त की उम्मीद ने दिलासा दिया, ग़रज़ कि बेशुमा ऐसे उमूर हैं कि जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बरकत से हमें मिले और वोह हमारी दिली राह़त व सुकून का सबब हैं।

शाने रेहमत :

इस्मे गिरामी رَسُولُ الرَّحْمَةِ के मआ़नी ओ मफ़ाहीम और इस के मज़ाहिर बे शुमार हैं। मदनी आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत हमारे लिए रेहमत, आप के अख़्लाक़ रेहमत, आप की ज़ात रेहमत और येह सब ऐसी रेहमतें हैं कि सिर्फ़ चन्द लोगों के लिए नहीं, किसी ख़ास जमाअ़त या गिरोह के लिए नहीं, सिर्फ़ मोमिनीन के लिए

नहीं बल्कि सारे जहानों के लिए रेह़मतें हैं क्यूंकि जिस ने आप को रेह़मत बनाया ख़ुद उसी का फ़रमान है : ﴿وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रेह़मत सारे जहान के लिए।

(پ17، الانبیآء:107)

रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात अख़्लाक़े करीमा का ऐसा मजमूआ़ है कि कोई निहायत नहीं, आप की रेह़मत का कोई किनारा नहीं, आप की मुबारक ज़ात में पाया जाने वाला हर हर वस्फ़े रेह़मत व शफ़्क़त व अ़ज़मत व रिफ़्अ़त बे इन्तिहा है, आप अल्लाह करीम की त़रफ़ से हमारे लिए ऐसा हदिया व तोह़फ़ा व एह़सान व रेह़मत हैं कि 1400 साल से ज़ाइद गुज़र गए, हर ज़माने में आप के अवसाफ़े रेह़मत व अ़ज़मत को लोगों ने हर हर रंग व अन्दाज़ से बयान किया लेकिन आप की शान है कि हर बार जुदा नज़र आती है, रेह़मत की बरसात हर बार अलग अन्दाज़ से बरसती है।

रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने रेह़मत के भी क्या केहने ! आप ने मुआ़शरे के मज़लूम तरीन त़बक़े ग़ुलामों और औ़रतों को इन के हुक़ूक़ दिलवाए, जिन ग़ुलामों के साथ पाउं की जूती से भी बदतर सुलूक होता था उन्हें आक़ा के साथ बैठ कर खाना खाने का मक़ाम दिया, ग़रीबों और फ़ुक़रा मुस्लिमीन को दीगर से पेहले जन्नत में जाने का मुज़्दा सुनाया, गुनाहगार एहले ईमान को बरोज़े क़ियामत शफ़ाअ़त व सिफ़ारिश की नवीद सुना कर ढारस बंधाई।

हुज़ूर नबिय्ये रेह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक रेह़मत के बयान की बुन्यादी त़ौर पर दो क़िस्में की जा सकती हैं : 1 रेह़मत व शफ़्क़त की तालीम 2 ज़ाते गिरामी से रेह़मत शफ़्क़त का ज़ुहूर।

1 रेह़मत व शफ़्क़त की तालीम :

रसूले रेह़मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जहां काइनात की हर मख़्लूक़ के लिए अपनी रेह़मत के दरिया बहाए वहीं दूसरों को भी रेह़मत व शफ़्क़त की तालीमो तरग़ीब दी और कसीर मवाक़ेअ़ पर उस की तकरार भी फ़रमाई, चुनान्चे, एक मौक़ेअ़ पर इरशाद फ़रमाया : اَلرَّاحِمُوْنَ يَرْحَمُهُمُ الرَّحْمٰنُ، اِرْحَمُوا مَنْ فِي الْاَرْضِ يَرْحَمْكُمْ مَنْ فِي السَّمَاءِ रह़म करने वालों पर रह़मान عَزَّوَجَلَّ रह़म फ़रमाता है, तुम ज़मीन वालों पर रह़म करो आस्मान की बादशाहत वाला तुम पर रह़म फ़रमाएगा।(4)

सिलए रेह़मी के ज़रीए रेह़मत व शफ़्क़त के फैलाव की तरग़ीब कैसे प्यारे अन्दाज़ में इरशाद फ़रमाई : اَلرَّحِمُ شُجْنَةٌ مِنَ الرَّحْمٰنِ، فَمَنْ وَصَلَهَا وَصَلَهُ اللّٰهُ रिश्तेदारी रह़मान से तअ़ल्लुक़ रखने वाली एक शाख़ है तो जो शख़्स इस को मिलाएगा अल्लाह करीम उस को मिलाएगा।(5)

बाज़ अवक़ात सरज़निश के अन्दाज़ में भी रेह़मत व शफ़्क़त की तल्क़ीन फ़रमाते जैसा कि एक आराबी को बच्चों के साथ मह़ब्बत व रेह़मत का दर्स दिया। चुनान्चे, एक मरतबा रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इमाम ह़सन رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه को बोसा दिया, अपने सीने से लगाया और सूंघने लगे, इस क़दर शफ़्क़त व मह़ब्बत देख कर एक शख़्स ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! मेरा भी एक बेटा है जो अब जवानी की देहलीज़ पर क़दम रख चुका है, मगर मैं ने उसे कभी नहीं चूमा। आप ने इरशाद फ़रमाया : अगर अल्लाह ने तुम्हारे दिल से रेह़मत निकाल ली है तो इस में मेरा क्या क़ुसूर है।(6)

इसी त़रह़ एक शख़्स ने रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़ज़रते इमामे ह़सन से मह़ब्बत व रेह़मत को देखते हुवे कहा : اِنَّ لِيْ عَشَرَةً مِنَ الْوَلَدِ مَا قَبَّلْتُ مِنْهُمْ اَحَدًا فَنَظَرَ اِلَيْهِ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: مَنْ لَا يَرْحَمُ لَا يُرْحَمُ मेरे दस बेटे हैं और मैं ने उन में से किसी एक को भी नहीं चूमा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस की त़रफ़ देखा और फ़रमाया : "जो शख़्स रह़म नहीं करता उस पर रह़म नहीं किया जाता।"(7)

दूसरी क़िस्म "ज़ाते गिरामी से रेह़मतो शफ़्क़त का ज़ुहूर" अगले माह के शुमारे में बयान किया जाएगा।

---

(1)مصنف ابن ابی شیبہ، 16/504، حدیث:32442 (2)سبل الھدیٰ والرشاد، 1/464 (3)الشفاء، 1/231 (4)ترمذی، 3/371، حدیث:1931 (5)ترمذی، 3/371، حدیث:1931 (6)مستدرک للحاکم، 4/161، حدیث:4846 (7)بخاری، 4/100، حدیث:5997۔



इस्लाम में मज़दूरों के हुक़ूक़

मौलाना शाहज़ैब अत्तारी मदनी

मज़दूर का लफ़्ज़ हमारे यहां उ़मूमी त़ौर पर उन लोगों पर इस्तेमाल होता है जो सामान, मिट्टी, सीमेन्ट की बोरियां, ईंटें वग़ैरा उठाते हैं, घरों, इ़मारतों, सड़कों और दीगर तामीराती काम करते हैं, जबकि इसी काम के माहिरीन को मिस्त्री और कारीगर वग़ैरा के लफ़्ज़ से पुकारा जाता है।

मज़दूर के काम को मज़दूरी केहते हैं जिसे अ़रबी में कस्ब या अ़मल से भी ताबीर किया जाता है, लुग़वी और इस्तेलाह़ी माना के ह़िसाब से देखा जाए तो हर वोह काम जिस के बदले में उजरत मिलती है वोह मज़दूरी में शुमार होता है।

दुन्या जहान में कोई एक भी ऐसा त़बक़ा या शोबा नहीं है जिस के मुतअ़ल्लिक़ इस्लामी तालीमात में मोतदिल और ज़मानी ज़रूरियात के मुवाफ़िक़ राहनुमाई न मिलती हो। मज़दूरों, मुलाज़िमों, अजीरों और मा तह़तों के ह़वाले से भी तालीमाते इस्लामिया में वाज़ेह़ राहनुमाई मौजूद है। दीने इस्लाम ने हर त़ब्क़ए ज़िन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखने वाले अफ़राद की त़रह़ मज़दूरों को भी हुक़ूक़ दिए हैं यानी मज़दूरों के हुक़ूक़ की अदाएगी, इन की मज़दूरी व मेह़नत का बदला वक़्त पर देना, इन से इन की त़ाक़त के मुत़ाबिक़ काम लेना, काम लेने में नर्मी, शफ़क़त और इन्सानियत से काम लेना वग़ैरा।

मज़दूरों के साथ हुस्ने सुलूक करने के ह़वाले से प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : इन्हें (यानी गुलामों, अजीरों और मज़दूरों को) इतने ज़्यादा काम का मुकल्लफ़ न करो कि वोह उन की त़ाक़त से ज़्यादा हो, अगर ऐसा करो तो उन की मुआ़वनत भी करो।[1]

मज़दूर से पेहले काम ले लिया और जब मज़दूरी और उजरत देने की बारी आई तो झगड़ा खड़ा हो गया, मज़दूर ज़्यादा मांगता है, काम वाला कम देता है, दीने इस्लाम ने इस का भी ह़ल पेहले ही से इरशाद फ़रमा दिया चुनान्चे, ह़दीसे पाक में है : जब किसी अजीर को उजरत पर रखो तो उसे उस की उजरत पेहले ही बता दो।[2]

एक और ह़दीसे पाक में है : नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मज़दूर की उजरत उसे वाज़ेह़ बता देने से पेहले काम लेने की मुमानअ़त फ़रमाई है।[3]

मज़दूरों की मज़दूरी न देने वालों को तम्बीह फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : मैं क़ियामत के दिन तीन अफ़राद का मुक़ाबिल होऊंगा (यानी सख़्त सज़ा दूंगा) : 1 एक वोह शख़्स जो मेरे नाम पर वादा दे फिर अ़ह्द शिकनी करे 2 वोह शख़्स जो किसी आज़ाद इन्सान को बेच दे और फिर उस की क़ीमत खा ले 3 वोह शख़्स जिस ने कोई मज़दूर उजरत पर लिया और फिर उस से काम तो पूरा लिया लेकिन उस की उजरत उसे न दी।[4]

मज़दूर की मज़दूरी बर वक़्त देना अख़्लाक़ी व शरई दोनों त़रह़ से बहुत ज़रूरी है, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तरग़ीब देते हुवे फ़रमाया : मज़दूर का पसीना ख़ुश्क होने से पेहले उस की मज़दूरी अदा करो।[5]

मज़दूरों को माली व जानी तह़फ़्फ़ुज़ में दीने इस्लाम सब से आगे है, रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तो जंग में भी उन मज़दूरों को क़त्ल करने से मन्अ़ फ़रमा दिया जो लड़ने के लिए न आए हों।[6]

अल्लाह करीम हमें मज़दूरों और तमाम ह़क़दारों के हुक़ूक़ बर वक़्त और सह़ीह़ सह़ीह़ अदा करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन।

---

(1) بخاری، 1/23، حدیث:30، اللامع الصبیح شرح الجامع الصحیح، 1/210، تحت الحدیث: 30 (2) نسائی، ص629، حدیث:3862 (3) کنز العمال، جز3، 2/366، حدیث:9123 (4) بخاری، 2/52، حدیث:2227 مراۃ المناجیح، 4/334 (5) ابن ماجہ، حدیث:2443 (6) ابو داؤد، 3/73، حدیث:2669۔



(दूसरी और आख़री क़िस्त)

केरीअर बेहतर बनाने के 30 तरीक़े

30 Methods to Improve Your Career

मौलाना अबू रजब मुहम्मद आसिफ़ अत्तारी मदनी

16 **वेल डिसिप्लिन्ड बनिए :** डिसिप्लिन (उसूलो ज़वाबित़) की पाबन्दी बहुत अच्छी ख़ूबी है। दिल न भी चाहे तो डिसिप्लिन पर अ़मल कीजिए। वक़्त पर दफ़्तर पहुंचना, वक़्त ख़त्म होने से पेहले न जाना, ब्रेक टाइम ख़त्म होते ही काम शुरूअ़ कर देना, अपनी टेबल को बे तरतीबी से बचा कर इन ऑडर रखना, ड्यूटी के दौरान गप शप, ज़ाती कॉल्ज़ और सोश्यल मीडिया पर मसरूफ़ होने से परहेज़ रखना, वॉश रूम के बहाने वक़्त ज़ाएअ़ न करना (बरत़ानिया के 8 शेहरों में होने वाली एक तेह़क़ीक़ में बताया गया कि मुलाज़िमीन बाथरूम में रोज़ाना अवसत़न 28 मिनट गुज़ारते हैं जो कम्पनियों की कारकर्दगी को भी मुतास्सिर करता है), दौराने ड्यूटी नमाज़ पढ़ने में उतना ही वक़्त सर्फ़ करना जितना नमाज़ के लिए आने जाने, वुज़ू करने और नमाज़ पढ़ने में लगता है, नमाज़ के बहाने ज़्यादा देर तक ग़ाइब न रेहना, आने जाने की ह़ाज़री लगाने में सुस्ती न करना, अपना कारकर्दगी फ़ॉर्म पुर करते रेहना, इसी त़रह़ डिसिप्लिन से जुड़ी हुई दीगर बातों का ख़याल रखना आप के इम्प्रेशन को मुस्बत बनाएगा। अगर आप वेल डिसिप्लिन्ड नहीं होंगे तो तरक़्क़ी में सब से बड़ी रुकावट आप ख़ुद होंगे।

17 **पेन्डिंग की आ़दत से बचिए :** बॉस या अफ़्सरान की त़रफ़ से आप को जो प्रोजेक्ट या टास्क दिया जाए उसे मुक़र्ररा वक़्त में मुकम्मल करने के लिए मुसलसल लगन से काम कीजिए। इसे आख़री वक़्त तक पेन्डिंग में रखने से आप ज़ेहनी दबाव में आ जाएंगे और वक़्त पर काम न मिलने की वज्ह से आप का बॉस दीगर अफ़राद को भी आप पर इन्ह़ेसार न करने का मश्वरा देगा। जहां काम करने की लगन न पाई जाती हो वहां बात बात पर बहाने तराशने या ईजाद करने का "हुनर" तेज़ी से परवान चढ़ता है।

18 **वेल्यू बढ़ाइए :** आ़म आदमी का सादा काग़ज़ पर दस्तख़त़ करना, बैंक एकाऊन्ट होल्डर के चैक पर दस्तख़त़ और मुल्क के सद्र का किसी क़ानूनी मुसव्वदे पर दस्तख़त़ कर देना बराबर नहीं हैं क्यूंकि सादा काग़ज़ पर दस्तख़त़ से कुछ नहीं मिलेगा और चैक बैंक से केश करवाया जाए तो रक़म मिलेगी और सद्र के दस्तख़त़ से वोह क़ानून पूरे मुल्क में नाफ़िज़ हो जाएगा। इन तीनों दस्तख़त़ों में फ़र्क़ वेल्यू का है, लेहाज़ा अपनी वेल्यू में इज़ाफ़ा कीजिए। ख़िदमात का बदला सिर्फ़ रक़म ही नहीं वेल्यू भी होती है। ड्यूटी से बढ़ कर कुछ न कुछ इज़ाफ़ी काम कर देने की आ़दत बनाएं इस से भी वेल्यू बढ़ती है मसलन आप से घास काटने को कहा जाए तो फ़ालतू जड़ी बूटियां मुफ़्त में तल्फ़ कर दीजिए। बॉस की ग़ैर मौजूदगी में भी उसी त़रह़ मेह़नत कीजिए जिस त़रह़ उस की मौजूदगी में करते हैं। वेल्यू बढ़ाने का एक फ़ाइदा येह भी होगा कि तरक़्क़ी देने का वक़्त आएगा तो बॉस का पेहला इन्तिख़ाब आप होंगे।

19 साज़िशी थियरियों पर यक़ीन न कीजिए : बाज़ लोगों को येह ख़ौफ़ लगा रेहता है कि कोई मेरे ख़िलाफ़ साज़िश कर के मुझे तरक़्क़ी से मेहरूम न कर दे या नौकरी ही से न निकलवा दे । ऐसे लोगों का ख़ौफ़ मज़ीद बढ़ जाता है जब कोई उन को आ कर बताता है कि फ़ुलां शख़्स तुम्हारे पीछे लगा हुवा है या अफ़्सरान को तुम्हारी शिकायतें पहुंचा रहा है । ऐसों को चाहिए कि हर किसी पर यक़ीन कर के परेशान न हों कि जो आप के नसीब में है उस से न कम मिलेगा न ज़्यादा । मज़ीद येह कि ख़ुद भी ह़सद से बचिए और किसी के ख़िलाफ़ दफ़्तरी साज़िशों का हिस्सा न बनिए क्यूंकि दूसरे की टांगें काटने से आप का क़द बड़ा नहीं हो जाएगा । इसी त़रह़ डबल एजन्ट क़िस्म के लोगों से बचिए जो लगाई बुझाई कर के लोगों को आपस में लड़वाते हैं । ग़ीबत, तोहमत और बोहतान के बारे में इस्लामी तालीमात पर अ़मल करेंगे तो बहुत सारी परेशानियों से बच जाएंगे, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

20 फ़ीडबेक को नज़र अन्दाज़ न कीजिए : फ़ीडबेक (तास्सुरात) हमारी कारकर्दगी को बेहतर करने में अहम किरदार अदा करता है, इसे नज़र अन्दाज़ न कीजिए, बिल ख़ुसूस जब फ़ीडबेक आप के सीनियर्ज़ या बॉस की त़रफ़ से हो । अगर निगरान या बॉस कहे कि आप अपने काम के मेयार को बेहतर करें तो ऐसा ज़रूर करें अगर्चे आप की नज़र में आप की कारकर्दगी बेस्ट क्यूं न हो ! अगर आप फ़ीडबेक को मुसलसल नज़र अन्दाज़ करेंगे तो आप को ज़िद्दी, ख़ुद पसन्द और मुश्किल शख़्सिय्यत समझा जाएगा जिस से आप का इम्प्रेशन बिगड़ेगा बल्कि अगर आप दूसरी जगह जॉब करने जाएंगे तो वोह इदारा भी पिछले इदारे का फ़ीडबेक ले सकता है, इस लिए फ़ीडबेक की मदद से ख़ुद को बेहतर कीजिए । दूसरों के फ़ीडबेक के साथ साथ अपनी कारकर्दगी का ख़ुद भी तन्क़ीदी जाइज़ा लीजिए, फिर जो ख़ामियां नज़र आएं उन पर क़ाबू पाइए और ख़ूबियों को बढ़ाइए । एक नौजवान ने फ़ीडबेक लेने का बड़ा अनोखा अन्दाज़ अपनाया, आप भी पढ़िए : एक नौजवान PCO में दाख़िल हुवा और एक नम्बर मिलाया, कॉल मिलने पर केहने लगा कि मैं बाग़बानी का काम करता हूं, सर ! आप मुझे अपने बाग़ीचे की सफ़ाई सुथराई और देख भाल के लिए मुलाज़िम रख लीजिए, दूसरी त़रफ़ से जवाब मिला : फ़िलह़ाल तो हमारे पास इस काम के लिए एक मुलाज़िम मौजूद है । लड़के ने इसरार करते हुवे कहा : सर ! मैं आप का काम मौजूदा मुलाज़िम से आधी तनख़्वाह पर करने के लिए तैयार हूं । उस शख़्स ने जवाब दिया कि मेरा मुलाज़िम बहुत अच्छा काम कर रहा है मैं किसी क़ीमत पर भी उसे तब्दील नहीं करना चाहूंगा । अब लड़का बा क़ाइदा मिन्नतों पर उतर आया और आ़जिज़ी से बोला : सर ! मैं बाग़ीचे के काम के इ़लावा आप के घर के सामने वाली गुज़रगाह और फ़ुटपाथ की भी सफ़ाई करूंगा और आप के बाग़ीचे को शेह़र का सब से ख़ूब सूरत बाग़ीचा बना दूंगा । इस बार भी जवाब नफ़ी में मिला । इस पर लड़के ने फ़ोन बन्द कर दिया । PCO के मालिक ने उस की गुफ़्तगू सुन ली थी, उस ने लड़के से हमदर्दी करते हुवे कहा : कोई बात नहीं, दिल छोटा न करो, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ तुम्हें जल्द नौकरी मिल जाएगी । लड़का मुस्कुराया और केहने लगा कि मैं उसी शख़्स के पास नौकरी करता हूं मैं तो सिर्फ़ इस बात को चेक करना चाह रहा था कि वोह मेरे काम के मेयार से किस ह़द मुत़मइन है ?

आप एक लम्ह़े के लिए सोचिए कि अगर उस शख़्स की जगह आप का बॉस होता और उसे कोई शख़्स आप की जगह काम करने की इस अन्दाज़ में पेशकश करता तो बॉस का जवाब नफ़ी में होता या....? अपनी सलाह़ियतों की बदौलत इदारे की ऐसी ज़रूरत बन जाइए कि वोह आप की जगह किसी और को रखने का तसव्वुर भी न करे ।

21 अपना किरदार बेहतर बनाइए : कामयाबी में शख़्सिय्यत का बड़ा किरदार होता है, अपने रब को राज़ी करने के लिए इस्लाम के सिखाए हुवे अख़्लाक़ व अवसाफ़ अपनाए । आप की शख़्सिय्यत में बेहतरी आएगी और आप दफ़्तर, घर, बाज़ार, स्कूल, जामिआ़, कॉलेज हर जगह कामयाब रहेंगे । चेहरे पर मुस्कुराहट रखना, जज़्बए हमदर्दी, दूसरों की भलाई चाहना, एह़तिरामे मुस्लिम, ख़ुश लिबास, साफ़ सुथरा रेहना ह़सद, तकब्बुर, बुग़्ज़, ग़ीबत, चुग़ली, तोहमत से बच कर आ़जिज़ी, मह़ब्बते मुस्लिम इख़्तियार करना आप की शख़्सिय्यत को चार चांद लगा देगा । इस के साथ साथ आप के उठने बैठने, चलने फिरने, खाने पीने, बोल चाल का अन्दाज़ इस्लाम की तालीमात के मुत़ाबिक़ होगा तो आप की शख़्सिय्यत में निखार आएगा । उम्मीद दिलाइए, मायूसी न फैलाइए, सिर्फ़ अपने मफ़ाद को अ़ज़ीज़ न रखिए, पुर जोश रहिए, लोग आप को पसन्द करने लगेंगे ।

22 राज़दार बनिए : हर इदारे के कुछ न कुछ राज़ होते हैं जिन्हें वोह अ़वाम में ज़ाहिर करना पसन्द नहीं करते क्यूंकि इस से इदारे का नुक़्सान हो सकता है मसलन इदारा अपनी नई मसनूआ़त मार्केट में लाने की तैयारी कर

रहा होता है अगर इन के मद्दे मुक़ाबिल को इस की सुन गुन हो जाए तो वोह पेहल कर के उन्हें नुक़्सान पहुंचा सकता है। इदारे के मुलाज़िमीन को चूंकि इन मालूमात से आगाही होती है तो इन की ज़िम्मेदारी है कि वोह इन मालूमात का किसी से हरगिज़ तबादला न करें क्यूंकि येह मालूमात भी इदारे की अमानत हैं।

23 महारत में इज़ाफ़ा कीजिए : जॉब मिलने पर आप का सफ़र ख़त्म नहीं बल्कि शुरूअ़ हुवा है क्यूंकि आप को तरक़्क़ी की बुलन्दियों तक पहुंचना है। कहा जाता है : (*To earn more learn more*) यानी ज़्यादा कमाने के लिए ज़्यादा सीखिए। कम क़ीमत पर बड़ी कामयाबी नहीं मिलती। शायद इसी लिए कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो तरक़्क़ी करना ही नहीं चाहते क्यूंकि इस के लिए मेहनत करना पड़ती है इस के नतीजे में वोह तरक़्क़ी के फ़वाइद से भी मेहरूम रेहते हैं, जिस पोस्ट पर नोकरी शुरूअ़ करते हैं 10 साल बाद भी वहीं दिखाई देते हैं जब कि इन के साथी कहीं के कहीं पहुंच चुके होते हैं बहर हाल अगर आप तरक़्क़ी चाहते हैं तो अपनी महारत में इज़ाफ़ा कीजिए मसलन अगर आप आइसक्रीम बनाने का काम करते हैं तो ऐसे माहिर बनिए कि पूरे शेहर में आप जैसी बेहतरीन आइसक्रीम बनाने वाला कोई न हो। इस के लिए अपने काम की तफ़्सीलात का इल्म बढ़ाइए। जो काम आप करते हैं, इस के लिए मालूमात इकठ्ठी कीजिए कि दुन्या में इस हवाले से क्या प्रोग्रेस हो रही है ? आईडियाज़ की दुन्या बड़ी वसीअ़ है, इन्टरनेट के ज़रीए कम वक़्त में दुन्या जहान की मालूमात हासिल की जा सकती हैं। किताबें पढ़िए, अपना मुशाहदा और तजरिबे बढ़ाइए। अपनी फ़ील्ड के माहिर अफ़राद के साथ उठिए बैठिए, उन के साथ तबादलए ख़याल कीजिए। सीखने का सफ़र जारी रखिए, इस के लिए बोलिए कम और सुनिए ज़्यादा, क्यूंकि इन्सान बोलने से नहीं सुनने से ज़्यादा सीखता है। येह भी ज़ेहन में रहे कि हर इन्सान हर फ़ील्ड में माहिर नहीं हो सकता कि माहिर पाइलॉट ट्रेन चलाने का भी माहिर हो फिर वोह कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग का भी माहिर हो, इस लिए उसी काम में आगे बढ़िए जो आप को आता हो या आप सीख सकते हों, हर फ़न मौला बनने की कोशिश न कीजिए, रूसी कहावत है कि अगर आप तीन ख़रगोशों को एक साथ पकड़ने की कोशिश करेंगे तो किसी को नहीं पकड़ पाएंगे।

24 तब्दीली को तरक़्क़ी की सीढ़ी समझिए : अगर ऑफ़िस में आप के काम की नोइय्यत बदल दी जाए या आप को चन्द अफ़राद पर निगरान बना दिया जाए या किसी के मा तहत कर दिया जाए तो घबराएं नहीं बल्कि नई ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह अदा कर के येह साबित करें कि आप बा सलाहिय्यत हैं। बाज़ लोग तब्दीली से डर जाते हैं आप उन में शामिल न हों, एक साहब को दफ़्तर ने प्रमोशन दी तो उन के हाथ पाउं फूल गए। उन के चेहरे से परेशानी झलक रही थी। वोह बुरा सा मुंह बना कर केहने लगे : "यार ! अच्छा भला एक तरफ़ बैठ कर नौकरी कर रहा था, अब सेक्शन इन्चार्ज बना दिया गया हूं, अपना भी ख़याल रखना पड़ेगा और दूसरों का भी !"

25 घर की टेन्शन दफ़्तर में न लाइए : घर हर इन्सान की ज़िन्दगी का अहम तरीन हिस्सा है, घरेलू परेशानियां किसे नहीं होतीं लेकिन अच्छी बात येह है कि घर की टेन्शन ऑफ़िस न लाई जाए। आप ज़रा सी बात पर अपने साथियों से उलझ पड़ेंगे या काम में आप का जी नहीं लगेगा जिस से आप की कारकर्दगी पर मन्फ़ी असर पड़ेगा जो मज़ीद परेशानी का सबब बन सकता है।

26 सेहत का भी ख़याल रखें : आप की जॉब का तअ़ल्लुक़ आप की सेहत से भी है कि आए रोज़ आप बीमारी की वज्ह से छुट्टियां करेंगे या हर दूसरे दिन लेट ऑफ़िस पहुंचेंगे तो इदारा दूसरा मुलाज़िम रखने की भी सोच सकता है। इस लिए अपनी सेहत का ख़याल रखिए। इस के लिए अपनी कमाई में से ख़ुद पर भी ख़र्च कीजिए और सेहत बख़्श ख़ूराक मसलन गोश्त, मछली, दूध, फल, ड्राई फ़ूड वग़ैरा खाने का मामूल बनाइए। रोग़नी खाने खाना, ग़ैर मेयारी मशरूबात पीना, नींद पूरी न करना, वॉक न करना, सिग्रेट और पान गुटके की आ़दत वग़ैरा सेहत के लिए अच्छी नहीं है।

27 अपने ज़ाती मसाइल दफ़्तर से बाहर हल कीजिए : घर में बिजली पानी गेस वग़ैरा के मसाइल होते रेहते हैं, कभी बाइक वग़ैरा भी ख़राब हो जाती है, किसी को डॉक्टर के पास भी ले जाना पड़ जाता है, गोया "ड्यूटी" के इलावा भी काम हैं ज़माने में। लेकिन प्रोब्लम उस वक़्त होती है जब लोग ड्यूटी के दौरान अपने ज़ाती काम निमटाने के लिए चले जाते हैं, जिस से ऑफ़िस के काम का भी हरज होता है और उन का इम्प्रेशन भी बिगड़ता है। इदारे ने प्रोफ़ेशनल कामों के लिए जॉब दी है न कि आप के ज़ाती कामों के लिए ! इस लिए जहां तक मुमकिन हो सके इस तरह के काम ड्यूटी टाइम ख़त्म होने के बाद कर लिए जाएं। प्लम्बर, इलेक्ट्रीशन, मिकेनिक और डॉक्टर वग़ैरा शाम के वक़्त भी मिल जाते हैं, हफ़्तावार छुट्टी के दिन भी बहुत से काम मुकम्मल किए जा सकते हैं।

28 तनख़्वाह के मुआ़मले पर जज़्बाती न बनिए : तनख़्वाह ऐसी चीज़ है जिस पर गुफ़्तगू हर मुलाज़िम के लिए दिलचस्पी का सबब होती है । अक्सरिय्यत का रोना येही होता है कि उन की तनख़्वाह कम है और मुलाज़िमीन उ़मूमन इस इन्तेज़ार में रेहते हैं कि किसी त़रह़ उन की तनख़्वाह में इज़ाफ़ा हो जाए ! इन में से कुछ को आमदनी और अख़राजात में तवाज़ुन न होने की प्रोब्लम होती है और कुछ अपनी सहूलियात में इज़ाफ़े के लिए तनख़्वाह में इज़ाफ़ा चाहते हैं । एक बुन्यादी बात हम सब को पेशे नज़र रखनी चाहिए पेहले हम ने इदारे को मुन्तख़ब किया फिर इदारे ने हमें मुन्तख़ब किया और तनख़्वाह वग़ैरा के मुआ़मलात एग्रीमेन्ट (मुआ़हदे) में शामिल होते हैं, ऐसी सूरत में नाशुक्रे बन कर तनख़्वाह की कमी का रोना न रोएं । हां ! येह ज़रूर देखा जा सकता है कि इदारा हम से जो काम ले रहा है उस के मुत़ाबिक़ तनख़्वाह दे रहा है तो इज़ाफ़े का मुत़ालबा अच्छी बात नहीं और अगर कम तनख़्वाह दे कर काम ज़्यादा ले रहा है तो मोहज़्ज़ब अन्दाज़ में बात की जा सकती है । मज़ीद येह कि बाज़ इदारों में तनख़्वाह में ज़रूरतन इज़ाफ़े का त़रीक़ए कार बना होता है इस के मुत़ाबिक़ दरख़्वास्त दी जा सकती है । अगर आप के इदारे में ऐसा कोई निज़ाम नहीं है फिर भी अगर आप ज़्यादा तनख़्वाह चाहते हैं तो इस के मुत़ाबिक़ वक़्त ज़्यादा दे दीजिए या अपनी महारत बढ़ा लीजिए ।

29 नौकरी छोड़ने में जल्द बाज़ी न कीजिए : आप को कई लोग ऐसे भी मिलेंगे जो एक जगह टिक कर जॉब नहीं करते, ज़रा सी बात पर नौकरी छोड़ देते हैं । दफ़्तरी साथी से छोटा मोटा झगड़ा हो गया तो इस्तेफ़ा, बॉस ने किसी ग़लत़ी पर डांट दिया तो इस्तेफ़ा, किसी और की तनख़्वाह बढ़ गई लेकिन इस की तनख़्वाह में इज़ाफ़ा नहीं किया तो इस्तेफ़ा, इदारे वालों ने छुट्टियां नहीं दीं तो इस्तेफ़ा, ऐसे लोग बड़े फ़ख़्र से लोगों को जताते हैं कि मैं तो अपना इस्तेफ़ा जेब में डाल कर घूमता हूं । अपनी इसी आ़दत की वज्ह से वोह इस ह़ाल तक पहुंच जाते हैं कि कोई इदारा इन के पिछले रेकॉर्ड को देखते हुवे जॉब देने का रिस्क नहीं लेता । ऐसे लोगों को बे रोज़गारों के ह़ालात देख कर क़द्रे नेमत करनी चाहिए ।

30 जॉब से निकाल दिया जाए तो ! कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन को जॉब से निकाल दिया जाता है, येह कैसा दिल तोड़ देने वाला तजरिबा होता है बताने की ह़ाजत नहीं । ऐसों को हिम्मत रखनी चाहिए कि दुन्या अभी ख़त्म नहीं हुई, एक दर बन्द होता है तो सौ दरवाज़े खुल जाते हैं, अल्लाह पर तवक्कुल रखें और नई नौकरी तलाश करने में देर न करें वरना परेशानी बढ़ जाएगी ।

जुदाई का अन्दाज़ कैसा हो ? बहर ह़ाल जॉब ख़ुद छोड़ें या आप से माज़ेरत की जाए दोनों सूरतों में रुख़्सत होने का अन्दाज़ मोहज़्ज़ब होना चाहिए कि ज़िन्दगी दोबारा भी आप को मिला सकती है । अगर आप लड़ झगड़ कर दोबारा बॉस या अफ़्सरान की शक्ल न देखने का दावा कर के ग़ुसीले अन्दाज़ में रुख़्सत होंगे तो दोबारा वहीं जॉब पर मजबूर होने की सूरत में शर्मिन्दगी होगी ।

सोच समझ कर फ़ील्ड तब्दील कीजिए : इसी त़रह़ बाज़ों की अच्छी ख़ासी जॉब होती है लेकिन उन्हें कोई समझा देता है कि नौकरी में क्या रखा है ! बिज़नेस करो बहुत तरक़्क़ी करोगे । इस में बज़ाहिर कोई बुराई नहीं है, हो सकता है कारोबार में आप को ज़्यादा कामयाबी मिले लेकिन सिर्फ़ येह देख लीजिए कि आप कारोबारी तक़ाज़ों पर पूरे उतर सकते हैं ? किसी शख़्स ने पुराने कारोबारी से पूछा : क्या मैं कारोबार करने का अह्ल हूं, कारोबारी ने जवाब दिया : हां ! अगर आप 12 में से 8 घन्टे मुस्कुरा सकते हैं । इसी त़रह़ अगर आप से एक बॉस बरदाश्त नहीं होता तो क्या आप दरजनों सेंकड़ों बॉस बरदाश्त कर पाएंगे ? क्यूंकि कारोबार में हर कस्टमर गोया बॉस के अन्दाज़ में बात करता है कि तुम्हारे माल में येह ख़राबी है, क़ीमत ज़्यादा है, बहुत पुराना है वग़ैरा वग़ैरा, अगर आप अकड़ दिखाएंगे तो वोह कहीं और से सामान ले लेगा । कामयाब कारोबारी वोही बन सकता है जो कस्टमर के नख़रे और मार्केट का उतार चढ़ाव बरदाश्त कर सकता हो । इसी त़रह़ आप का मिज़ाज ही मुलाज़मत वाला है और कारोबारी महारत आप में नहीं है तो नाकामी का चान्स ज़्यादा है क्यूंकि ज़रूरी नहीं एक फ़ील्ड में कामयाब होने वाला दूसरी फ़ील्ड में भी कामयाबी के झन्डे गाड़ दे क्यूंकि मछली पानी में तैरने और बाज़ फ़ज़ा में उड़ने का माहिर होता है । फिर भी आप तजरिबा करना चाहते हैं तो ज़रूर कीजिए लेकिन फ़ाइदे के साथ नुक़्सान बरदाश्त करने की हिम्मत भी जम्अ़ रखिए । अल्लाह करीम हमें रिज़्क़े ह़लाल कमाने और खाने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

नोट : कमाई के ह़वाले से शरई अह़कामात जानने के लिए इन्टरनेशनल मज़हबी स्कॉलर ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का शानदार रिसाला "ह़लाल त़रीक़े से कमाने के 50 मदनी फूल" (मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना) ज़रूर मुत़ालआ़ कीजिए ।



जन्नत का सब से बुलन्द दरजा

मौलाना काशिफ़ शेहज़ाद अत्तारी मदनी

अल्लाह पाक के आख़री नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को अपने रब की बारगाह से जो बे शुमार ख़ुसूसी शानें अ़ता फ़रमाई गई हैं उन में से 3 येह हैं :

1 **मक़ामे वसीला अ़ता किया गया :** जन्नत का बुलन्द तरीन दरजा मक़ामे वसीला **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए ख़ास है ।[1]

अल्लाह के प्यारे नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : سَلُوا اللّٰهَ لِیَ الْوَسِیلَةَ यानी **अल्लाह** पाक से मेरे लिए मक़ामे वसीला का सवाल करो । अ़र्ज़ की गई : या रसूलल्लाह ! मक़ामे वसीला क्या है ? इरशाद फ़रमाया : اَعْلٰی دَرَجَةٍ فِی الْجَنَّةِ لَا یَنَالُهَا اِلَّا رَجُلٌ وَاحِدٌ اَرْجُو اَنْ اَکُوْنَ اَنَا هُوَ यानी वोह जन्नत का आला तरीन दरजा है जो सिर्फ़ एक शख़्स को ह़ासिल होगा और मैं उम्मीद करता हूं कि वोह शख़्स मैं ही होऊंगा ।[2]

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : اَلْوَسِیلَةُ دَرَجَةٌ عِنْدَ اللّٰهِ لَیْسَ فَوْقَهَا دَرَجَةٌ فَسَلُوا اللّٰهَ اَنْ یُؤْتِیَنِی الْوَسِیلَةَ यानी वसीला **अल्लाह** पाक के यहां एक ऐसा दरजा है जिस से ऊपर कोई और दरजा नहीं, **अल्लाह** करीम से दुआ़ करो कि वोह मुझे मक़ामे वसीला अ़ता फ़रमाए ।[3]

शिहाबुल मिल्लते वद्दीन ह़ज़रते अ़ल्लामा अह़मद बिन मुह़म्मद ख़फ़ाजी मिसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه लिखते हैं : मक़ामे वसीला जन्नत के दीगर तमाम मक़ामात से ज़्यादा अ़र्श के नज़दीक है और येह मक़ाम ख़ास सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए है ।[4]

शफ़ाअ़ते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पाने का नुस्ख़ा : फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जब तुम मोअज़्ज़िन को (अज़ान केहते हुवे) सुनो तो अज़ान के कलिमात दोहराते जाओ और फिर मुझ पर दुरूद पढ़ो क्यूंकि जो मुझ पर एक मरतबा दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** पाक इस के बदले में उस पर दस रेह़मतें नाज़िल फ़रमाता है । इस के बाद **अल्लाह** पाक से मेरे लिए मक़ामे वसीला की दुआ़ मांगो क्यूंकि वोह जन्नत का एक ऐसा मक़ाम है जो **अल्लाह** के बन्दों में से सिर्फ़ एक बन्दे को मिलेगा और मुझे उम्मीद है कि वोह बन्दा मैं हूं । فَمَنْ سَاَلَ لِیَ الْوَسِیلَةَ حَلَّتْ لَهُ الشَّفَاعَةُ यानी जो शख़्स मेरे लिए मक़ामे वसीला की दुआ़ मांगे तो उस के लिए मेरी शफ़ाअ़त लाज़िम हो जाती है ।[5]

शारेह़े बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : इस (ह़दीस में शफ़ाअ़त) से ख़ास शफ़ाअ़त मुराद है, मसलन : जन्नत में बिला ह़िसाबो किताब दाख़िल करना, दर्जे बुलन्द कराना ।[6]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! जब भी अज़ान शुरूअ़ हो तो तमाम काम काज रोक कर ख़ामोशी से अज़ान सुनें और इस का जवाब दें। जब अज़ान मुकम्मल हो जाए तो फिर अज़ान के बाद की दुआ़ पढ़ें जिस में रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिए मक़ामे वसीला की दुआ़ भी शामिल है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बे शुमार नेकियां ह़ासिल होने के साथ साथ सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त भी नसीब होगी।[7]

बनाए गए हम शफ़ाअ़त की ख़ातिर
हमारे लिए है शफ़ाअ़त नबी की[8]

2 मख़्सूस फ़रिश्तों की ह़ाज़री : ह़ज़रते सैयदना इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की एक ख़ुसूसी शान येह है कि आप की ख़िदमत में बाज़ ऐसे फ़रिश्तों ने भी ह़ाज़िरी दी जो इस से पेहले कभी ज़मीन पर नहीं आए थे, इस्माईल नामी फ़रिश्ता और ह़ज़रते सैयदना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام भी उन फ़रिश्तों में शामिल हैं।[9]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़ज़रते सैयदना इसराफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام मुर्सलीने मलाइका (यानी मन्सबे रिसालत पर फ़ाइज़ होने वाले फ़रिश्तों) में से हैं[10] और मुर्सलीने मलाइका बिल इजमाअ़ तमाम ग़ैर अम्बिया से अफ़्ज़ल हैं।[11]

मदनी फूल : मुर्सलीने मलाइका उन फ़रिश्तों को कहा जाता है जो **अल्लाह** पाक के अह़कामात तमाम फ़रिश्तों तक पहुंचाते हैं।[12]

3 जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام का इयादत करना : **अल्लाह** पाक के हुक्म से ह़ज़रते सैयदना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام मरज़े विसाल में 3 दिन तक सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इयादत के लिए ह़ाज़िर होते रहे।[13]

ह़ज़रते सैयदना इमाम बाक़िर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه अपने वालिदे माजिद ह़ज़रते सैयदना अ़ली औसत़ इमाम ज़ैनुल आ़बेदीन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत करते हैं : सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी से 3 दिन पेहले ह़ज़रते सैयदना जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ गुज़ार हुवे : **अल्लाह** पाक ने आप की ख़ुसूसिय्यत के इज़हार और इ़ज़्ज़तो तकरीम के लिए मुझे आप के पास भेजा है। **अल्लाह** करीम आप से उस चीज़ के बारे में पूछता है जिसे वोह आप से बेहतर जानता है, और फ़रमाता है कि आप ख़ुद को (इस वक़्त) कैसा पाते हैं ? **अल्लाह** के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ जिब्रील ! मैं ख़ुद को ग़म और तक्लीफ़ की ह़ालत में पाता हूं। दूसरे और तीसरे दिन भी जिब्रीले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर हो कर येही पैग़ाम देते रहे और दोनों दिन सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने वोही जवाब अ़ता फ़रमाया जो पेहले दिन दिया था।[14]

फ़िक्रे उम्मत : ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! रेह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मरज़े विसाल में जिस ग़म व तक्लीफ़ का इज़हार फ़रमाया, مَعَاذَاللّٰه येह दुन्या की मह़ब्बत या जिस्मानी तक्लीफ़ के इज़हार के लिए नहीं था बल्कि येह दीने इस्लाम का ग़म और अपनी उम्मत की फ़िक्र थी। मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه शैख़े मोह़क़्क़िक़ शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मोह़द्दिसे देहल्वी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से नक़्ल फ़रमाते हैं : (सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की) येह ग़म व तक्लीफ़ अपनी उम्मत और अपने दीन की फ़िक्र से थी कि मेरी उम्मत और मेरे दीन का मेरे बाद क्या बनेगा ![15]

फ़िदा हो जाए उम्मत इस हिमायत इस मह़ब्बत पर
हज़ारों ग़म लिए हैं एक दिल पर शादमां हो कर[16]

(1) شرف المصطفٰی، 4/218، مواھب لدنیہ، 2/317 (2) ترمذی، 5/352، حدیث: 3632 (3) مسند احمد، 4/165، حدیث: 11783 (4) نسیم الریاض، 3/226 (5) مسلم، ص162، حدیث: 849 (6) نزہۃ القاری، 2/302

(7) अज़ान का जवाब देने का त़रीक़ा और अज़ान के बाद की दुआ़ सीखने के लिए अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की मुरत्तब कर्दा किताब "नमाज़ के अह़काम" में शामिल रिसाले "फ़ैज़ाने अज़ान" का मुत़ालआ़ फ़रमाइए। येह रिसाला मक्तबतुल मदीना से अलग भी ह़ासिल किया जा सकता है।

(8) قبالہ بخشش، ص313 (9) الحاوی للفتاوی، 2/177، انموذج اللبیب، ص224 (10) تفسیر خازن، 3/318 (11) فتاوی رضویہ، 29/629 (12) نبراس، ص767 (13) مواھب لدنیہ، 2/312، زرقانی علی المواھب، 7/358 (14) مشکاۃ المصابیح، 2/406، حدیث: 5972، زرقانی علی المواھب، 12/127 (15) اشعۃ اللمعات، 4/628، مرآۃ المناجیح، 8/308 (16) ذوق نعت، ص130۔



(क़िस्त : 1)

फ़रिश्ते दुआए मग़फ़िरत करते हैं

मौलाना मुहम्मद अफ़ज़ल अ़त्तारी मदनी

तौबा ओ इस्तिग़फ़ार अल्लाह रब्बुल आ़लमीन और उस के बन्दों के दरमियान तअ़ल्लुक़ात की मज़बूती और बन्दों को रेह़मत व इ़नायत मिलने का एक ऐसा ज़रीआ़ है जो ख़ुद अल्लाह करीम ने अपने बन्दों को सिखाया है। कुरआने करीम और फ़रामीने नबिय्ये रह़ीम में बेशुमार मरतबा इस्तिग़फ़ार का फ़रमाया गया है । इस्तिग़फ़ार जिसे दुआ़ए मग़फ़िरत भी केहते हैं जिस त़रह़ ख़ुद करना बाइ़से अज़्रो नजात है इसी त़रह़ अल्लाह के नेक बन्दों, फ़रिश्तों, छोटे बच्चों और वालिदैन की त़रफ़ से मग़फ़िरत की दुआ़ मिलना भी बहुत ख़ुश नसीबी की बात है । कुरआने पाक में अल्लाह करीम ने गुनाहगारों को बारगाहे रिसालत में ह़ाज़िर होने और रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इन के ह़क़ में दुआ़ए मग़फ़िरत करने का फ़रमाया है ।[1]

फ़रिश्तों के बारे में भी कुरआने पाक में है : اَلَّذِیْنَ یَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ یَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْاۚ-رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَیْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِیْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِیْلَكَ وَ قِهِمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ۝ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** वोह जो अ़र्श उठाते हैं और जो इस के गिर्द हैं अपने रब की तारीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसलमानों की मग़फ़िरत मांगते हैं ऐ रब हमारे तेरे रेह़मत व इ़ल्म में हर चीज़ की समाई है तू उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले ।[2]

इसी त़रह़ रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुबारक फ़रमान भी है कि मेरी उम्मत को माहे रमज़ान में पांच बातें दी गईं कि मुझ से पेहले किसी नबी को न मिलीं (उन में से एक येह है कि) हर दिन और हर रात में फ़रिश्ते उन के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं ।[3]

जिस त़रह़ पीछे आयते मुबारका में बयान हुवा कि तौबा करने और राहे ख़ुदा पर चलने वालों के लिए अल्लाह के मासूम फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं, इसी त़रह़ **अह़ादीसे मुबारका में कई ऐसी नेकियों का ज़िक्र मिलता है जिन के करने वालों के लिए फ़रिश्ते इस्तिग़फ़ार करते हैं ।**

जिब्रीले अमीन शबे क़द्र में दुआ़ए मग़फ़िरत करते हैं :

रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जिस ने ह़लाल खाने और पानी से रोज़ा इफ़्त़ार कराया । फ़रिश्ते माहे रमज़ान के अवक़ात में उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام शबे क़द्र में उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं ।[4]

रोज़ादार के लिए फ़रिश्तों की दुआ़ए मग़फ़िरत :

ह़ज़रते उम्मे उ़मारा अन्सारिया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا फ़रमाती हैं कि प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाए तो मैं ने आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खाना पेश किया, आप ने इरशाद फ़रमाया : तुम भी खाओ, मैं ने अ़र्ज़ किया : मैं रोज़े से हूं । तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है फ़रिश्ते उस रोज़ेदार के लिए दुआ़ए मग़फ़िरत करते रेहते हैं । एक रिवायत में है कि "खाने वाला जब तक पेट भर ले ।"[5]

इसी त़रह़ एक मौक़ेअ़ पर रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते बिलाले ह़बशी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से फ़रमाया : ऐ बिलाल ! आओ नाश्ता करें, तो उन्हों ने अ़र्ज़ किया : मैं रोज़े से हूं, तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : हम अपना रिज़्क़ खा रहे हैं और बिलाल का रिज़्क़ जन्नत में बढ़ रहा है, फिर फ़रमाया : ऐ बिलाल ! क्या तुम्हें मालूम है कि जितनी देर तक रोज़ादार के सामने खाना खाया जाता है तो उस की हड्डियां तस्बीह़ करती हैं और मलाइका उस के लिए इस्तिग़फ़ार करते रेहते हैं ।[6]

---

(1) پ5، النسآء:64 (2) پ24، المؤمن:7 (3) شعب الایمان، 3/303، حدیث:3603 (4) معجم کبیر، 6/261، حدیث:6162 (5) الاحسان بترتیب ابن حبان، 5/181، حدیث:3421 (6) ابن ماجہ، 2/348، حدیث:1749۔



बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

मौलाना अ़ब्दुल्लाह नईम अ़त्तारी मदनी

बातों से ख़ुश्बू आए

बद मज़्हब से मह़ब्बत का वबाल

जिस ने किसी बद मज़्हब से मह़ब्बत की **अल्लाह** पाक उस का अ़मल ज़ाएअ़ फ़रमा देगा और उस के दिल से ईमान का नूर निकाल देगा। (इरशादे ह़ज़रते सैयदना फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه)

(الصواعق المحرقة، ص250)

जवां मर्दी

अपने दुश्मन से अच्छा सुलूक करना, ना पसन्द शख़्स पर माल ख़र्च करना और जो दिल को न भाए उस से अच्छी वाबस्तगी रखना जवां मर्दी है। (इरशादे अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद इब्नुल मुक़री رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) (طبقات الصوفية للسلمي، ص378)

फ़रिश्तों को नेकी व बदी का इ़ल्म कैसे होता है ?

ह़ज़रते सैयदना सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से पूछा गया कि मलाइका बन्दे का इरादा किस त़रह़ लिखते हैं ? (यानी वोह फ़रिश्ते जो नेकी व बदी लिखने पर मामूर हैं वोह बन्दे का इरादा कैसे जानते हैं ह़ालांकि उस ने अब तक अ़मल नहीं किया होता ?) आप ने फ़रमाया : वोह इस त़रह़ जानते हैं कि जब बन्दा नेकी करने का इरादा करता है तो उस से मुश्क की सी ख़ुश्बू निकलती है और वोह फ़रिश्ते ख़ुश्बू से मालूम कर लेते हैं कि उस ने नेकी का इरादा किया है और जब बन्दा बुराई का इरादा करता है तो उस से बदबू निकलती है तो उन फ़रिश्तों को मालूम हो जाता है कि उस ने बदी का इरादा किया है। यहां इरादे से अ़ज़्मे मुसम्मम (यानी पक्का इरादे) मुराद है। (تنبيه المغترين، ص48)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

तब्दीले बैअ़त का ह़ुक्म

तब्दीले बैअ़त बिला वज्हे शरई ममनूअ़ है और तजदीद जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है।

(मल्फ़ूज़ाते आला ह़ज़रत, स. 64)

शैत़ान के मस्ख़रे !

फ़ोह़श गीत शैत़ानी रस्म और काफ़िरों की रीत (यानी रस्म) है, शैत़ान मलऊ़न बे ह़या है और **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) कमाल ह़या वाला, बे ह़याई की बात से ह़या वाला नाराज़ होगा और वोह बे ह़याओं का उस्ताद (यानी शैत़ान) उन्हें (यानी इस त़रह़ के कामों में पड़ने वालों को) अपना मस्ख़रा बनाएगा।

(फ़तावा रज़विया, 22/213)

सुन्नी की तारीफ़

सुन्नी वोह (है) जो तमाम अ़क़ाइदे एहले सुन्नत में उन (यानी एहले सुन्नत व जमाअ़त) के मुवाफ़िक़ हो, अगर एक (अ़क़ीदे) में भी ख़िलाफ़ करता हो हरगिज़ सुन्नी नहीं, बिदअ़ती है। (مطلع القمرين، ص139)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन !

नमाज़ की पाबन्दी कैसे मिले ?

पांचों नमाज़ें पाबन्दी से पढ़ने की आ़दत बनाने का अस्ल वज़ीफ़ा एह़सास है कि नमाज़ मेरे रब ने मुझ पर फ़र्ज़ की है। (मदनी मुज़ाकरा, 20 जुल क़ादतिल ह़राम 1441 हिजरी, 11 जुलाई 2020 ईसवी)

घर के सुकून का नुस्ख़ा

मियां बीवी की आपस में लड़ाई हो जाए तो दोनों में से जिस की भी ग़लती हो उसे मुआ़फ़ी मांग लेनी चाहिए। (मदनी मुज़ाकरा, 13 जुल क़ादतिल ह़राम 1441 हिजरी, 4 जुलाई 2020 ईसवी)

हमारी इबादतें और **अल्लाह** की नेमतें

हमारी हज़ारों इबादतें **अल्लाह** पाक की किसी एक नेमत के हज़ारवें ह़िस्से के शुक्र का ह़क़ अदा नहीं कर सकतीं। (मदनी मुज़ाकरा, 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1442 हिजरी, 12 अक्तूबर 2020 ईसवी)



अह़कामे तिजारत

मुफ़्ती अबू मुह़म्मद अ़ली असग़र अ़त्तारी मदनी

नापाक दूध या तेल बेचना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि हमारी दूध की दुकान है, कभी ऐसा होता है कि दूध में कोई नापाक चीज़ गिर जाती है और दूध नापाक हो जाता है । येह इरशाद फ़रमाएं कि वोह नापाक दूध गाहक को बेचना कैसा है ? येह मस्अला बसा अवक़ात पर्चून वालों को भी पेश आता है कि उन के तेल वग़ैरा में भी चूहा मर जाता है लेहाज़ा दोनों के मुतअ़ल्लिक़ बयान फ़रमा दें ।

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में नापाक दूध या नापाक तेल बेचना जाइज़ नहीं क्यूंकि उ़मूमन लोग खाने पीने में इस्तेमाल करने के लिए ही दूध या तेल ख़रीदते हैं नीज़ दूध या तेल का नापाक होना ऐ़ब है और ऐ़बदार चीज़ ऐ़ब बताए बग़ैर बेचना जाइज़ नहीं । हां, अगर ख़रीदार को इस का नापाक होना बता कर बेचें ताकि ख़रीदार नापाक दूध या तेल को जाइज़ त़रीक़े से इस्तेमाल करे तो फिर बेचना, जाइज़ है ।

ह़ज़रते सैयदना उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "المسلم اخو المسلم ولا یحل لمسلم باع من اخیه بیعا فیه عیب الا بینه له" यानी मुसलमान आपस में भाई भाई हैं लेहाज़ा किसी मुसलमान को येह जाइज़ नहीं है कि वोह अपने भाई को ऐ़बदार चीज़ का ऐ़ब बताए बग़ैर बेचे। हां, ऐ़ब बता कर बेचना जाइज़ है । (ابن ماجه، ص162)

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्त़रीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी علیه الرحمه लिखते हैं : "तेल नापाक हो गया इस की बैअ़ जाइज़ है और खाने के इ़लावा इस को दूसरे काम में लाना भी जाइज़ है, मगर येह ज़रूरी है कि मुश्तरी को इस के नजिस होने की इत्तेलाअ़ दे दे ताकि वोह खाने के काम में न लाए और येह भी वज्ह है कि नजासत ऐ़ब है और ऐ़ब पर मुत्त़लअ़ करना ज़रूरी है ।"

(बहारे शरीअ़त, 2 / 707)

एक मक़ाम पर लिखते हैं : "मबीअ़ में ऐ़ब हो तो उस का ज़ाहिर कर देना बाएअ़ पर वाजिब है, छुपाना ह़राम व गुनाहे कबीरा है ।" (बहारे शरीअ़त, 2 /673)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

चूहे ख़रीदना और पालना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि बाज़ लोग सफ़ेद रंग के चूहे पालते हैं और इन्हें पालने के लिए ख़रीदते बेचते भी हैं । क्या येह जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : चूहे को पालना मकरूह है क्यूंकि येह मूज़ी और फ़ासिक़ जानवर है जिस से सिवाए ईज़ा के कुछ ह़ासिल नहीं होगा, ह़दीसे पाक में चूहों को मारने का हुक्म दिया गया है और पालना इस के ख़िलाफ़ है । नीज़ चूहे को ख़रीदना बेचना भी जाइज़ नहीं चाहे वोह किसी भी रंग का हो क्यूंकि चूहा ह़शरातुल अर्ज़ में से है और ह़शरातुल अर्ज़ की बैअ़ नाजाइज़ है ।

हदीसे पाक में : ”خمس فواسق، يقتلن فى الحل والحرم: الحية، والغراب الأبقع، والفأرة، والكلب العقور، والحدأة“ तर्जमा : पांच जानवर फ़ासिक़ हैं, इन को हिल और हरम में क़त्ल किया जाए : सांप, कव्वा, चूहा, कटखना (बहुत ज़्यादा काटने वाला, पागल) कुत्ता, और चील। (ابن ماجه، ص223)

बहारे शरीअ़त में है : ''मछली के सिवा पानी के तमाम जानवर मेंडक, केकड़ा वग़ैरा और ह़शरातुल अर्ज़ चूहा, छछून्दर, घूंस, छिपकली, गिरगिट, गोह, बिच्छू, च्यूंटी की बैअ़ नाजाइज़ है।'' (बहारे शरीअ़त, 2/810)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

कटाई से पेहले बेची गई फ़स्ल का उ़श्र बेचने वाले पर है या ख़रीदने वाले पर ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि गन्ने की फ़स्ल पक कर मुकम्मल तैयार हो चुकी है, अब सिर्फ़ कटाई करना बाक़ी है, लेकिन कटाई करने से पेहले ही गन्ने की फ़स्ल को बेच दिया। पूछना येह है कि गन्ने की फ़स्ल का उ़श्र बेचने वाले पर होगा ? या ख़रीदने वाले पर ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में गन्ने की फ़स्ल का उ़श्र बेचने वाले पर होगा, ख़रीदने वाले पर नहीं होगा।

सदरुश्शरीआ़, बदरुत्तरीक़ा मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ बहारे शरीअ़त में फ़रमाते हैं : ''बेचने के वक़्त ज़राअ़त तैयार थी, तो उ़श्र बाएअ़ पर है। (बहारे शरीअ़त, 1 /920)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

सोना बतौ़रे क़र्ज़ लिया तो सोना ही वापस करना होगा

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए किराम इस मस्अले के बारे में कि तीन साल पेहले मेरे भाई को पैसों की ज़रूरत थी, मेरे पास बाईस केरेट सोने के तीन बिस्किट थे जो मैं ने अपनी बेटी की शादी के लिए रखे हुवे थे, मैं ने येह सोने के बिस्किट बतौ़रे क़र्ज़ अपने भाई को दे दिए साथ में येह कहा कि जब मेरी बेटी की शादी होगी तो आप मुझे इसी केरेट के सोने के बिस्किट दे दीजिएगा ताकि मैं अपनी बेटी का कुछ ज़ेवर बनवा लूं, भाई ने उस वक़्त पैसों की ज़रूरत की वज्ह से वोह बिस्किट बेच दिए जो कि डेढ़ लाख के बिके थे, अब कुछ अ़र्से बाद मेरी बेटी की शादी होने वाली है मैं भाई से अपना सोना त़लब कर रहा हूं लेकिन मस्अला येह है कि सोने की क़ीमत बहुत बढ़ चुकी है वोह केह रहे हैं कि मैं डेढ़ लाख रुपिये दूंगा जबकि मेरा मुत़ालबा येह है कि मैं ने सोने के बिस्किट दिए थे लेहाज़ा मुझे आप सोने के बिस्किट दें, बराहे करम इस बारे में रेहनुमाई फ़रमाएं कि मेरा मुत़ालबा शरअ़न दुरुस्त है या नहीं ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप का सोने के बिस्किट का मुत़ालबा करना शरअ़न दुरुस्त है, आप के भाई पर लाज़िम है कि वोह आप को क़र्ज़ की वापसी सोने ही की सूरत में करें क्यूंकि सोना मिस्ली चीज़ है और मिस्ली चीज़ जब क़र्ज़ में दी जाए तो लोटाते वक़्त उस की मिस्ल ही देना लाज़िम है उस के मेहंगे या सस्ते होने का कोई एतेबार नहीं होता।

सदरुश्शरीआ़ बदरुत्तरीक़ा ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आज़मी علیہ الرحمہ फ़रमाते हैं : ''जो चीज़ क़र्ज़ दी जाए, ली जाए उस का मिस्ली होना ज़रूरी है यानी माप की चीज़ हो या तोल की हो या गिनती की हो मगर गिनती की चीज़ में शर्त येह है कि उस के अफ़राद में ज़्यादा तफ़ावत न हो जैसे अन्डे, अख़रोट, बादाम और अगर गिनती की चीज़ में तफ़ावत ज़्यादा हो जिस की वज्ह से क़ीमत में इख़्तेलाफ़ हो जैसे आम, अमरूद, इन को क़र्ज़ नहीं दे सकते। यूंही हर क़ीमी चीज़ जैसे जानवर, मकान, ज़मीन इन का क़र्ज़ देना सह़ीह़ नहीं।

मज़ीद लिखते हैं : ''अदाए क़र्ज़ में चीज़ के सस्ते मेहंगे होने का एतेबार नहीं मसलन दस सेर गेहूं क़र्ज़ लिए थे उन की क़ीमत एक रुपिया थी और अदा करने के दिन एक रुपिये से कम या ज़्यादा है इस का बिल्कुल लेहाज़ नहीं किया जाएगा वोही दस सेर गेहूं देने होंगे।''

(बहारे शरीअ़त, 2 755/757)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم



(क़िस्त : 12)

ताजिर सहाबए किराम

मौलाना बिलाल हुसैन अ़त्तारी मदनी

ह़ज़रते सैयदना ज़ाहिर बिन ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

ह़ज़रते ज़ाहिर बिन ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक बदवी यानी देहात के रेहने वाले सह़ाबी हैं। आप देहात के उ़म्दा फल वग़ैरा प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में बत़ौरे तोह़फ़ा लाया करते थे और जब रुख़्सत होते तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم शेहर की चीज़ें उन को दे दिया करते थे। सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन से मह़ब्बत थी और फ़रमाया करते थे कि ज़ाहिर हमारा देहाती भाई है और हम उस के शेहरी भाई हैं। जबकि एक रिवायत में इस त़रह़ भी आया है कि "हर शेहरी का कोई न कोई देहाती भाई होता है, आले मुह़म्मद (صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) के देहाती भाई ज़ाहिर बिन ह़िराम हैं।"

ह़ज़रते ज़ाहिर बिन ह़िराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ देहात से सामान ला कर शेहर में बेचा करते थे। एक रोज़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बाज़ार की त़रफ़ निकले तो देखा कि आप अपना सामान बेच रहे हैं। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने पीठ की त़रफ़ जा कर उन की आंखों पर अपना दस्ते मुबारक रखा, उन्हों ने अ़र्ज़ की : कौन है ? मुझे छोड़ दो। जब पीछे की त़रफ़ तवज्जोह की तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पेहचान लिया। और पेहचानते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़र्त़े मह़ब्बत से पूरी कोशिश करने लगे कि अपनी पीठ को हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सीने से मिलाए रखें। हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने (मिज़ाह़न) फ़रमाया कि मुझ से येह ग़ुलाम कौन ख़रीदेगा ? ह़ज़रते ज़ाहिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! फिर तो आप मुझे कम क़ीमत पाएंगे। प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : "लेकिन ख़ुदा के नज़दीक तुम गिरां क़दर (भारी क़ीमत वाले) हो।" (معجم الصحابہ للبغوی، 2/518، 519)

ह़ज़रते सैयदना आबिल्लह़म ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ

आप का नाम अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मलिक है, आप का तअ़ल्लुक़ क़बीलए ग़िफ़ार से है, आप बद्री सह़ाबी हैं, जंगे हुनैन में शहीद हुवे। आबिल्लह़म (यानी गोश्त के इन्कारी) आप का लक़ब है, चूंकि आप गोश्त नहीं खाते थे इस लिए आप को आबिल्लह़म केहते हैं या फिर इस लिए कि आप ज़मानए जाहिलिय्यत में बुतों के नाम पर ज़ब्ह़ किए हुवे जानवर का गोश्त नहीं खाते थे।

आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गोश्त की तिजारत किया करते थे, आप के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ गोश्त के पारचे सुखाने और दीगर मुआ़मलात में आप की मुआ़वनत किया करते थे।

(اسد الغابہ، 1/57، مراۃ المناجیح، 3/130)



ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ का इ़ल्मी मक़ाम

मौलाना उवेस यामीन अ़त्तारी मदनी

ख़लीफ़ए चहारुम, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने एक क़ौल के मुत़ाबिक़ 10 साल की उ़म्र में इस्लाम क़बूल कर के बच्चों में सब से पेहले इस्लाम क़बूल करने का शरफ़ पाया[1] और बचपन से ले कर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी विसाल फ़रमाने तक सफ़रो ह़ज़र और एहले बैत होने की वज्ह से बसा अवक़ात घर में भी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ होते और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों को दिल जान से अपनाते, ह़ज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ लोगों में सुन्नत को ज़्यादा जानने वाले हैं।[2]

ह़ज़रते अ़ली इ़ल्मो ह़िक्मत का दरवाज़ा : मौला अ़ली मुश्किल कुशा, शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ इ़ल्मी एतिबार से सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن में एक ख़ास मक़ाम रखते थे और क्यूं न रखते हों कि ख़ुद नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप की इ़ल्मी शान बयान करते हुवे आप को इ़ल्मो ह़िक्मत का दरवाज़ा फ़रमाया है, चुनान्चे 2 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुलाह़ज़ा फ़रमाइए : (1) اَنَا مَدِیْنَۃُ الْعِلْمِ وَعَلِیٌّ بَابُہَا यानी मैं इ़ल्म का शेहर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।[3]

(2) اَنَا دَارُ الْحِکْمَۃِ وَعَلِیٌّ بَابُہَا यानी मैं ह़िक्मत का घर हूं और अ़ली उस का दरवाज़ा हैं।[4]

दुआए मुस्त़फ़ा : ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे सीने पर हाथ रख कर यूं दुआ़ की : اَللّٰھُمَّ اِمْلَأْ قَلْبَہٗ عِلْماً وَفَھْماً وَحِکْماً وَنُوراً यानी ऐ Allah ! अ़ली के सीने को इ़ल्म, अ़क़्लो दानाई, ह़िक्मत और नूर से भर दे।[5]

ह़ज़रते अ़ली और इ़ल्म के हज़ार बाब : बाबे इ़ल्मो ह़िक्मत, ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे इ़ल्म के एक हज़ार बाब सिखाए और मैं ने उन में से हर बाब से मज़ीद एक हज़ार बाब निकाले।[6]

जो पूछना है मुझ से पूछ लो : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की इ़ल्मी लियाक़त बयान करते हुवे सह़ाबी ए रसूल ह़ज़रते सैयदना अबू तुफ़ैल आ़मिर बिन वासिला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप ख़ुत़्बा इरशाद फ़रमा रहे थे, आप ने ख़ुत़्बे के दौरान इरशाद फ़रमाया : मुझ से सवाल करो, Allah पाक की क़सम ! तुम मुझ से क़ियामत तक होने वाले जिस मुआ़मले के मुतअ़ल्लिक़ भी पूछोगे मैं तुम्हें उस का जवाब ज़रूर दूंगा।[7] ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सैयदना सईद बिन मुसय्यब رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सह़ाबा में सिवाए ह़ज़रते अ़ली

رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के कोई येह केहने वाला नहीं था कि मुझ से पूछ लो ।[8]

ह़ज़रते अ़ली और कुरआनी आयात की मालूमात : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ कुरआने करीम की आयात के बारे में जानते थे कि कौन सी आयत कब और कहां नाज़िल हुई है । चुनान्चे मम्बए इल्मो ह़िक्मत, मौला ए काइनात ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : मुझ से कुरआने करीम के बारे में पूछो, बेशक मैं कुरआने पाक की हर आयत के बारे में जानता हूं कि वोह रात में नाज़िल हुई है या दिन में, हमवार ज़मीन पर नाज़िल हुई है या पहाड़ पर । एक मक़ाम पर मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अल्लाह पाक की क़सम ! मैं कुरआने करीम की हर आयत के बारे में जानता हूं कि वोह कब और कहां नाज़िल हुई है और किस के बारे में नाज़िल हुई है ।[9]

कुरआने करीम के ज़ाहिरो बातिन के आ़लिम : फ़क़ीहे उम्मत का लक़ब पाने वाले सह़ाबी ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की कुरआन फ़ेहमी बयान करते हुवे फ़रमाते हैं : अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदना अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ऐसे आ़लिम हैं कि जिन के पास कुरआने करीम के ज़ाहिरो बातिन दोनों का इल्म है ।[10] कुरआने करीम की आयत के ज़ाहिर और बातिन की वज़ाह़त करते हुवे ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नई़मी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ज़ाहिरी मुराद इस का लफ़्ज़ी तर्जमा है बातिनी मुराद इस का मन्शा और मक़्सद या ज़ाहिर शरीअ़त है और बातिन त़रीक़त या ज़ाहिर अह़काम हैं और बातिन असरार या ज़ाहिर वोह है जिस पर उ़लमा मुत्तलअ़ हैं और बातिन वोह है जिस से सूफ़िया ए किराम ख़बरदार हैं या ज़ाहिर वोह जो नक़्ल से मालूम हो बातिन वोह जो कश्फ़ से मालूम हो ।[11]

ह़ज़रते अ़ली के फ़तवे पर अ़मल : सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को अगर किसी मुआ़मले में ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के फ़तवे का इल्म हो जाता तो सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان आप के फ़तवे पर अ़मल किया करते थे, चुनान्चे ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि जब कोई मोतबर शख़्स हमें ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ का फ़तवा बताता तो हम उस से तजावुज़ न करते ।[12]

मसाइल में ह़ज़रते अ़ली की त़रफ़ रुजूअ़ : सह़ाबए किराम बल्कि उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सैयदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا भी मसाइल के ह़ल के लिए ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास भेजा करती थीं । जैसा कि ताबेई़ बुज़ुर्ग ह़ज़रते शुरैह़ बिन हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से मोज़ों पर मस्ह़ के बारे में सवाल किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के पास जाओ और उन से पूछो क्यूंकि वोह इस मस्अले के बारे में मुझ से ज़्यादा जानते हैं ।[13]

ह़ज़रते अ़ली और इल्मे मीरास : ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एहले मदीना में इल्मे मीरास सब से ज़्यादा जानते थे ।[14]

तादादे रिवायात : आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से 586 अह़ादीसे मुबारका मरवी हैं जो कुतुबे अह़ादीस में अपनी ख़ुश्बूएं बिखैर रही हैं ।

शहादत : सिने 40 हिजरी में 17 या 19 रमज़ानुल मुबारक को फ़ज्र की नमाज़ के लिए जाते हुवे रास्ते में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ पर क़ातिलाना ह़म्ला हुवा जिस में आप शदीद ज़ख़्मी हो गए और 21 रमज़ानुल मुबारक की रात को जामे शहादत नोश फ़रमा गए ।[15]

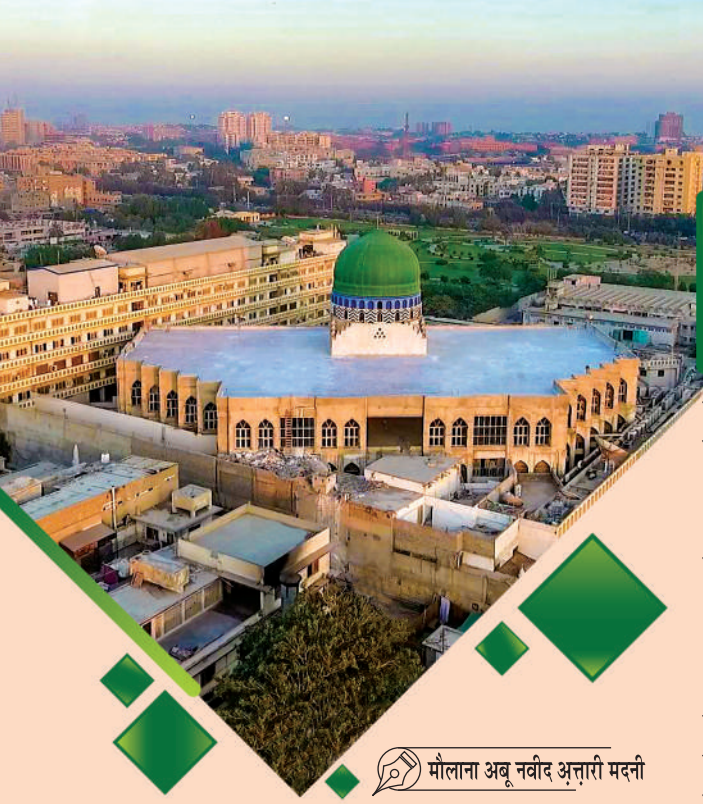
अल्लाह पाक की इन पर रेह़मत हो और इन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की सीरत के बारे में मज़ीद जानने के लिए मक्तबतुल मदीना का रिसाला ''करामाते शेरे ख़ुदा'' पढ़िए ।)

---

(1) سیرتِ ابن اسحاق، ص137، مقدمۃ ابن الصلاح، ص300 (2) تاریخ ابن عساکر، 42/408 (3) مستدرک للحاکم، 4/96، حدیث:3744 (4) ترمذی، 5/402، حدیث: 3744 (5) تاریخ ابن عساکر، 42/386 (6) تفسیر کبیر، 3/200 (7) جامع بیان العلم وفضلہ، ص157، رقم: 508 (8) مصنف ابن ابی شیبۃ، 13/457، رقم:26948 (9) طبقاتِ ابن سعد، 2/257 (10) تاریخ ابن عساکر، 42/400 (11) مراٰۃ المناجیح، 1/210 (12) طبقات ابن سعد، 2/258 (13) مسلم، ص130، 131، حدیث:639، 641 ملخصاً (14) الاستیعاب، 3/207 (15) طبقات ابن سعد، 3/27، کراماتِ شیر خدا، ص13 ملخصاً۔



अमीरे एहले सुन्नत अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी की 5 नुमायां दीनी ख़िदमात

मौलाना अबू नवीद अ़त्तारी मदनी

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मख़्लूक़ की राहनुमाई के लिए वक़्तन फ़ वक़्तन अम्बिया ए किराम علیہمُ السّلام को मबऊ़स फ़रमाया, नबुव्वत व रिसालत का येह सिलसिला चलते चलते नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां जनाबे मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तक पहुंचा और आप पर नबुव्वत का सिलसिला हमेशा के लिए ख़त्म हो गया, अब मख़्लूक़ की हिदायत की ज़िम्मेदारी उम्मते मुह़म्मदिया के सिपुर्द हुई, ज़मानए सह़ाबा से ता ह़ाल हर दौर में बड़ी बड़ी अ़ज़ीम, साह़िबे अ़क़्लो फ़िरासत और दूर अन्देश हस्तियां तशरीफ़ लाईं जिन्हों ने हर दौर के लेह़ाज़ से नए नए अन्दाज़ और त़रीक़ों से पैग़ामे तौह़ीदो रिसालत को आ़म किया, इस्लाम का सूरज मक्कए मुकर्रमा से त़ुलूअ़ हुवा और सारी दुन्या तक इस का नूर पहुंचा, वक़्त गुज़रते गुज़रते बीसवीं सदी ईसवी का दौर आन पहुंचा, येह दौर जदीद टेक्नोलोजी के साथ साथ इस्लाम से दूरी, दीनी अह़्कामात पर अ़मल से बेज़ारी और त़रह़ त़रह़ के फ़ितनों से भरा हुवा था, इन ह़ालात में ऐसे राहबर, राहनुमा और लीडर की ज़रूरत थी कि जो नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों का हरसू प्रचार करे, सह़ाबए किराम علیہمُ الرّضوان, एहले बैते अत़्हार और औलिया ए किराम رحمۃُ اللہِ علیہم के नक़्शे क़दम पर चलाने वाला हो, हुज़ूर ग़ौसे समदानी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी के ख़लीफ़ा व नाइब होने का ह़क़ अदा करे, अल्लाह पाक का करम हुवा कि इस फ़ितनों के दौर में भी कसीर उ़लमा ए इस्लाम और मुस्लेह़ीने उम्मत के साथ साथ उम्मते मुस्लिमा को अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ जैसी अ़ज़ीम हस्ती अ़त़ा हुई।

अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने 1981 ई. में दावते इस्लामी का आग़ाज़ किया जबकि आप उस से पेहले भी तन्ज़ीमों और अन्जुमनों की सूरत में दीन का काम कर रहे थे। दावते इस्लामी के क़ियाम के बाद लोगों को अ़मली ज़िन्दगी की त़रफ़ राग़िब करने के लिए आप ने मुख़्तलिफ़ अच्छे और दीनी कामों को अ़वाम में राइज किया। दीने इस्लाम की तब्लीग़, इ़श्क़े रसूल की तरवीज और पैग़ामे इलाही की तशहीर के लिए जो भी अच्छा और ऐसा त़रीक़ा अपनाया जाए जो क़ुरआनो अह़ादीस के अह़्कामात के ख़िलाफ़ न हो उस की तेह़सीन की गई है, चुनान्चे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमान है : مَنْ سَنَّ فِی الْاِسْلَامِ سُنَّةً حَسَنَةً فَلَهٗ اَجْرُهَا، وَاَجْرُ مَنْ عَمِلَ بِهَا بَعْدَهٗ، مِنْ غَيْرِ اَنْ يَّنْقُصَ مِنْ اُجُوْرِهِمْ شَيْءٌ यानी जो इस्लाम में किसी अच्छे त़रीक़े को राइज करेगा उस को उस त़रीक़े को राइज करने का भी सवाब मिलेगा और उन लोगों के अ़मल करने का भी जो उस के बाद इस त़रीक़े पर अ़मल करते रहेंगे और अ़मल करने वालों के सवाब में कोई कमी भी न होगी।

(مسلم، ص394، حدیث: 2351)

ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जिन लोगों ने इ़ल्मे फ़िक़्ह, फ़न्ने ह़दीस, मीलाद शरीफ़, उ़र्से बुज़ुर्गां, ज़िक्रे ख़ैर की मजालिस, इस्लामी मद्रसे (और) त़रीक़त के सिलसिले ईजाद किए उन्हें क़ियामत तक सवाब मिलता रहेगा।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/196)

अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने मुसलमानों में जिन अच्छे कामों को रवाज दिया अगर उन सब का ज़िक्र किया जाए तो पूरी किताब बन सकती है, उन में से सिर्फ़ पांच का ज़िक्र किया जाता है : (1) लोगों को क़ुरआने करीम की तालीमात से रूशनास कराने के लिए आप ने अपने मुहिब्बीन, मुतअ़ल्लिक़ीन और मुरीदीन को ताकीद फ़रमाई कि फ़ज्र की नमाज़ के बाद मस्जिद में क़ुरआने पाक की तीन आयात तर्जमा ओ तफ़्सीर के साथ तिलावत करें या सुनें । और इस काम को बा क़ाइदा तन्ज़ीम के कामों का हिस्सा बनाया गया (2) क़ुरआने पाक की त़रह़ अह़ादीसे मुबारका और ह़क़ीक़ी इस्लामी तालीमात को लोगों तक पहुंचाने के लिए मसाजिद में नमाज़ों के बाद दर्स देने का त़रीक़ा राइज फ़रमाया, मसाजिद में दर्सो बयान का त़रीक़ा अगर्चे अस्लाफ़ ही से चलता आ रहा है लेकिन इस अन्दाज़ में कसीर मसाजिद में पाबन्दी के साथ कहीं एक नमाज़ के बाद और कहीं दो नमाज़ों के बाद दर्स का सिलसिला जारी फ़रमाना येह आप ही का फ़ैज़ान है (3) तब्लीग़े दीन का एक अन्दाज़ जो प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सीरत का हिस्सा है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सफ़र कर के दूसरी जगह जाते और अपने सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को भी भेजा करते थे । तब्लीग़े दीन के लिए बानी ए दावते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने इस त़रीक़े को बा क़ाइदा और मुनज़्ज़म अन्दाज़ में राइज फ़रमाया कि हर माह तीन दिन का मदनी क़ाफ़िला, एक साल में तीस दिन और उ़म्र भर में एक साल का मदनी क़ाफ़िला करने का ज़ेहन दिया और इस के इ़लावा बड़े और अहम मवाक़ेअ़ पर मसलन मुह़र्रमुल ह़राम, रबीउ़ल अव्वल, ईदैन और वोह अय्याम जिन में सरकारी सत्ह़ पर दो या इस से ज़ाइद तात़ीलात आ रही हों, उन दिनों में राहे ख़ुदा में सफ़र करने का ख़ुसूसी ज़ेहन देते हैं बल्कि इसे बा क़ाइदा निज़ाम के तह़्त राइज फ़रमा दिया है और बाज़ आ़शिक़ाने रसूल तो ऐसे हैं कि उन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां तब्लीग़े दीन के लिए वक़्फ़ कर दी हैं जो कि यक़ीनन अमीरे एहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की तरग़ीबो तेह़रीक ही का नतीजा है (4) किताब पढ़ना, मुत़ालआ़ करना इ़ल्म ह़ासिल करने का बहुत बड़ा और अहम ज़रीआ़ है, बानी ए दावते इस्लामी ने हर हफ़्ते एक मुख़्तसर रिसाला पढ़ने, सुनने का त़रीक़ा राइज फ़रमाया और इस की तरग़ीबो तशवीक़ के लिए पढ़ने सुनने वालों को अपनी दुआ़ओं से भी नवाज़ते हैं । मज़ीद सोने पर सुहागा येह कि जो पढ़ना लिखना नहीं जानते और कहीं इज्तेमाई़ सूरत में किसी से सुन भी नहीं सकते उन को भी किताब के फ़ैज़ान से मेह़रूम न रेहने दिया बल्कि हर हफ़्ते मुत़ालए़ के लिए दिए जाने वाले रिसाले को ऑडियो की सूरत में भी जारी फ़रमाया जो कि मुख़्तलिफ़ मुबल्लिग़ीन की आवाज़ में जारी होता है । सब से पेहला रिसाला "करामाते फ़ारूक़े आज़म" जो आप ने मुत़ालए़ के लिए दिया उस के पढ़ने और सुनने वालों की तादाद 793 थी और اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तादमे तेह़रीर जो आख़री रिसाला "ड्राइवर की मौत" आप ने मुत़ालआ़ करने का फ़रमाया है इस के पढ़ने और सुनने वाले ख़ुश नसीबों की तादाद 41 लाख 602 से भी बढ़ गई है । तादमे तेह़रीर कुल 185 रसाइल मुत़ालए़ के लिए दिए जा चुके हैं (5) उ़मूमी त़ौर पर शेहरों और गुन्जान आबाद अ़लाक़ों में रेहने वाले लोगों के अन्दर दीनी शुऊ़र कुछ न कुछ होता है, जबकि गाऊं, देहात और शेहरों से दूर रेहने वाले लोग बाज़ दफ़्आ़ दीनी तालीमात से मेह़रूम रेह जाते हैं, तो दूर अन्देश और साह़िबे ह़िक्मत व फ़िरासत हस्ती बानी ए दावते इस्लामी ने इस ज़रूरत को भी मेह़सूस किया और ख़ैर ख़्वाही ए उम्मत के पेशे नज़र अपने चाहने वालों को हफ़्ते में एक दिन अपने अ़लाक़े से बाहर दूसरी मसाजिद और गिर्दो नवाह़ के गाऊं वग़ैरा में जा कर दीनी तालीमात आ़म करने का ज़ेह्न दिया जो कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ बा क़ाइदा मुनज़्ज़म अन्दाज़ में जारी है ।

येह सिर्फ़ पांच त़रीक़ों का ज़िक्र किया गया है जो तब्लीग़े दीन के लिए बानी ए दावते इस्लामी ने राइज और आ़म फ़रमाए हैं, **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त की रेह़मत से उम्मीद है कि आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की कोशिश से जहां जहां तक दीन का पैग़ाम पहुंचा और उन से आगे जहां तक और जब तक दीन का पैग़ाम व तालीमात पहुंचती रहेंगी इन सब का सवाब ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه भी मिलता रहेगा, اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

अल्लाह करीम अपने प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े इस मर्दे क़लन्दर, अ़ज़ीम इ़ल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत की उ़म्र, इ़ल्म, अ़मल और जुम्ला उमूर व मुआ़मलात में लाखों लाख बरकतें अ़त़ा फ़रमाए । اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मौलाना अबू माजिद मुहम्मद शाहिद अत्तारी मदनी


मज़ार हज़रते अबुल हसन अमीर ख़ुसरू رحمۃ اللہ علیہ


मज़ार सैयद मुहम्मद ग़ौस बाला पीर رحمۃ اللہ علیہ

शव्वालुल मुकर्रम इस्लामी साल का दसवां महीना है। इस में जिन सहाबए किराम, औलिया ए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमा ए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 15 का मुख़्तसर तआ़रुफ़ मुलाहज़ा फ़रमाइए :

सहाबए किराम عَلَیۡہِمُ الرِّضۡوَان : (1,2) **हज़रते साबित बिन वक़श अशहली औसी अन्सारी** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ और उन के भाई **हज़रते रिफ़ाआ़ बिन वक़श अन्सारी** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ बूढ़े थे मगर जज़्बए शहादत की वज्ह से ग़ज़वए उहुद (15 शव्वाल 3 हिजरी) में शरीक हो गए और शहादत की सआ़दत पाई ।[1] हज़रते साबित رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ के दो बेटे भी ग़ज़वए उहुद में शहीद हुवे : (3) **हज़रते सलमा बिन साबित अन्सारी** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ येह ग़ज़वए बद्र में भी शरीक हुवे थे ।[2] (4) **हज़रते उसैरम अम्र बिन साबित अन्सारी** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنۡہ ग़ज़वए उहुद के दिन ईमान लाए थे अभी कोई नमाज़ नहीं पढ़ी थी, ग़ज़वए उहुद में शरीक हुवे और शहीद हो गए, जब नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को उन के बारे में बताया गया तो फ़रमाया : اِنَّهٗ لَمِنۡ اَهۡلِ الۡجَنَّةِ यानी बेशक वोह एहले जन्नत से है ।[3]

औलिया ए किराम رحمہم اللہ السلام : (5) **मलकुश्शोरा, तूती ए हिन्द हज़रते अबुल हसन अमीर ख़ुसरू देहल्वी चिश्ती निज़ामी** رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत 653 हिजरी को पटियाली (यू.पी) में हुई और यहीं 18 शव्वाल 725 हिजरी को विसाल फ़रमाया, तदफ़ीन ख़ानक़ाहे निज़ामिया देहली में हुई । आप आ़लिमे दीन, अदीबो ख़तीब, क़ादिरुल उ़लूम शाइ़र, मेह़बूबे मुर्शिद और मश्हूर तरीन शख़्सियत के मालिक हैं । आप ने पांच लाख अश्आ़र तेह़रीर फ़रमाए ।[4] (6) शैख़े त़रीक़त, सैयद मुहम्मद ग़ौस बाला पीर गीलानी क़ादरी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत ख़ानदाने ग़ौसुल आज़म में हुई और 5 शव्वाल 959 हिजरी को क़दीमी तारीख़ी क़स्बे सत घरा शरीफ़ ज़िल्आ़ ओकाड़ा में विसाल फ़रमाया । यहीं मज़ारे फ़ैज़ बार है । आप अपने जद्दे अमजद सैयद अ़ब्दुल क़ादिर सानी के मुरीद व ख़लीफ़ा, इल्मो फ़ज़्ल और इबादतो रियाज़त में बे मिसाल थे । आप ख़ानदाने सादात सत घरा और शैख़ू शरीफ़ के जद्दे अमजद हैं ।[5]

(7) शैख़े त़रीक़त ह़ज़रते शैख़ मानून शाह यूसुफ़ ज़ई मुजद्दिदी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत 1001 हिजरी को देहली में हुई, इल्मे दीन उ़लमा ए एहले सुन्नत से ह़ासिल किया, ह़ज़रते ह़ाजी बहादुर कोहाटी से बैअ़तो ख़िलाफ़त ह़ासिल हुई, मुर्शिद के हुक्म पर ज़िन्दगी भर अफ़ग़ानिस्तान में इल्मो इरफ़ान को आ़म किया, 14 शव्वाल 1099 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार मौज़ए तेहकाल ज़िल्आ़ पेशावर में है ।[6] (8) शैख़े त़रीक़त मौलाना सैयद अ़ब्दुस्सलाम हसवी मुजद्दिदी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ 1234 हिजरी को हसवा (ज़िल्आ़ फ़त्ह़ पूर, यूपी) हिन्द में पैदा हुवे और यहीं 4 शव्वाल 1299 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार ज़ियारत गाहे आ़म है । आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे दीन, तल्मीज़े अ़ल्लामा सैयद अह़मद दह़लान मक्की, मुरीद व ख़लीफ़ा शाह अह़मद सईद मुजद्दिदी और साह़िबे करामत वलिय्युल्लाह थे ।[7] (9) मरजउ़ल उ़लमा व औलिया ह़ज़रते शैख़ सैयद मुह़म्मद मुस्त़फ़ा माअल ईनीन क़ादरी رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत ह़ौज़ (मूरीत़ानिया) में 1246 हिजरी को हुई और 27 शव्वाल 1328 हिजरी को तज़नियत मराकिश में विसाल फ़रमाया, यहीं मज़ार वाक़ेअ़ है । आप जामेए उ़लूम व फ़ुनून, क़ुरआनो ह़दीस पर गेहरी नज़र रखने वाले आ़लिमे दीन, इल्मे सिरुल हुरूफ़ में दर्जए इमामत पर फ़ाइज़, शैख़े त़रीक़त, उस्ताज़ व मुर्शिदुल उ़लमा, बा करामत वलिय्युल्लाह, मुसन्निफ़े कुतुबे कसीरा और मुजाहिदे इस्लाम थे, आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा رَحۡمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ने अपने पेहले सफ़रे ह़ज में आप की ज़ियारत की, क़ुत़बे मदीना अ़ल्लामा ज़ियाउद्दीन मदनी भी आप के





शागिर्द और ख़लीफ़ा हैं । دلیل الرفاق علی شمس الاتفاق आप की बेहतरीन तस्नीफ़ है ।[8] 10 पीरे त़रीक़त ह़ज़रते पीर सैयद हुसैन शाह जमाअ़ती رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1285 हिजरी में खेवा शरीफ़ ज़िल्अ़ मन्डी बहाउद्दीन (पंजाब) के एक सादात घराने में हुई और यहीं 19 शव्वाल 1363 हिजरी को विसाल फ़रमाया । आप ह़ज़रत पीर सैयद ह़यात मुह़म्मद शाह सियालकोटी के मुरीद और अमीरे मिल्लत सैयद जमाअ़त अ़ली शाह साह़ब के ख़लीफ़ा, शरीअ़तो त़रीक़त के जामेअ़ और ज़ोहदो तक़्वा के पैकर थे ।[9] 11 आरिफ़े रब्बानी ह़ज़रत पीर मुह़म्मद मासूम शाह नूरी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1315 हिजरी को एक सूफ़ी घराने में हुई और 29 शव्वाल 1388 हिजरी को विसाल फ़रमाया, मज़ार ख़ानक़ाहे क़ादरिया चक सादा (ज़िल्अ़ गुजरात, पंजाब) में है । आप आ़लिमे दीन, मुसन्निफ़े कुतुब, शैख़े त़रीक़त, ह़ज़रत दाता गंज बख़्श के आ़शिक़े सादिक़, बानी ए नूरी कुतुब ख़ाना, मर्जए़ उ़लमा ओ मशाइख़, नूरी मस्जिद (रेल्वे स्टेशन लाहोर) समेत 20 मसाजिद के बानी और कई मदारिस के मुआ़विन थे । ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने आप की तरग़ीब पर कई कुतुब तस्नीफ़ फ़रमाईं ।[10]

उ़लमा ए इस्लाम رحمہم اللہ السلام :

12 **अ़ल्लामा इब्नुल फ़रज़ी अबुल वलीद अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद कुरतुबी** رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 351 हिजरी को हुई और 6 शव्वाल 403 हिजरी को शहीद हुवे । आप जलीलुल क़द्र आ़लिमे दीन, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, सिक़ह रावी, फ़क़ीहे मालिकी, क़ाज़ी ए बिन्नसीह, अ़रबी शाइ़र, मोअर्रिख़ और कई कुतुब के मुसन्निफ़ हैं । तारीख़े उ़लमाउल अन्दुलुस आप की यादगार तस्नीफ़ है ।[11] 13 आ़लिमे बा अ़मल ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मोह़युद्दीन बगवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत बगह (तेह़सील पिन्ड दादुन ख़ान) ज़िल्अ़ जेहलुम के एक इ़ल्मी घराने में 1210 हिजरी को हुई और यहीं 30 शव्वाल 1273 हिजरी को विसाल फ़रमाया, आप ह़ज़रते शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मोह़द्दिस देहल्वी के शागिर्द, ह़ज़रते शाह ग़ुलाम अ़ली मुजद्दिदी देहल्वी के मुरीद व ख़लीफ़ा, मुफ़्ती ए पंजाब, उस्ताज़ुल उ़लमा, अ़र्सए दराज़ तक बगह फिर लाहोर में तिश्नगाने इ़ल्म की प्यास बुझाते रहे ।[12] 14 ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ मह़मूद बिन रशीद अ़त्तार दिमश्क़ी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1284 हिजरी दिमश्क़ में हुई और यहीं 20 शव्वाल 1362 हिजरी को विसाल फ़रमाया, बाबुस्सग़ीर क़ब्रिस्तान दिमश्क़ में दफ़्न किए गए । आप ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, जैयद आ़लिमे दीन, तिल्मीज़े इमाम बदरुद्दीन ह़सनी, मुफ़्ती ए ह़नफ़िया क़ज़ाउत्तुफ़ैला (उर्दन) और उस्ताज़ुल उ़लमा थे । आप दिमश्क़, उर्दन, जिद्दा और बम्बई के मदारिस में मुदर्रिस रहे । आप ने आला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की आ़लमी शोहरत याफ़्ता किताब "अद्दौलतुल मक्किय्यह" पर तक़रीज़ भी लिखी । استحباب القیام عند ذکر ولادته علیه الصلاة والسلام आप की यादगार तस्नीफ़ है ।[13]

15 उस्ताज़ुल उ़लमा ह़ज़रते अ़ल्लामा क़ाज़ी मुह़म्मद अ़ब्दुस्सुबह़ान हज़ारवी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत 1315 हिजरी को ख़ुलाबट (हरीपुर हज़ारा) KPK के एक इ़ल्मी घराने में हुई और यहीं 12 शव्वाल 1377 हिजरी को विसाल फ़रमाया । आप बहुत बड़े आ़लिमे दीन, बेहतरीन मुनाज़िर, कई कुतुब के मुसन्निफ़ व मह़शी, फ़ाज़िल आ़लिमे दीन, उस्ताज़ुल उ़लमा, सिलसिलए क़ादरिया में बैअ़त थे । आप की किताब मवाहिबुर्रह़मान मत़बूअ़ है । उस्ताज़ुल उ़लमा अ़ल्लामा क़ाज़ी ग़ुलाम मह़मूद हज़ारवी आप के लाइक़ फ़रज़न्द हैं ।[14]

---

(1)الاستیعاب، 1/279، 2/81 (2)اسد الغابہ، 2/496 (3)معرفۃ الصحابہ لابی نعیم، 1/311، 3/381 (4)انسائیکلوپیڈیا اولیائے کرام، 4/51 (5)خزینۃ الاصفیاء، 1/198 (6)تذکرۂ مشائخ مجددیہ افغانستان، ص81 (7)تذکرۂ علمائے حال، ص318 تا325، تذکرہ علماء اہلسنت، ص124 (8)دلیل الرفاق، ترجمۃ المؤلف، سیدی ضیاء الدین احمد القادری، 1/715 (9)خلفائے امیر ملت، ص127 (10)تذکرہ علماء اہلسنت، ص247 (11)سیر اعلام النبلاء، 13/106، معجم المؤلفین، 2/295 (12)تذکرہ علماء اہلسنت و جماعت لاہور، ص145 (13)الدولۃ المکیۃ، ص411، تاریخ الدولۃ المکیۃ، ص137 (14)تذکرۂ اکابر اہل سنت، ص227۔



बच्चों में एलर्जी की अ़लामात व अस्बाब और उन का ह़ल

डॉक्टर उम्मे सारिब अ़त्तारिया

मार्च के शुमारे में बच्चों की बुख़ार की जांच करने के त़रीक़े और कुछ इब्तेदाई अ़लामात के ह़वाले से बयान हुवा था जबकि इस मज़मून में आप बच्चों में एलर्जी के ह़वाले से जानेंगे।

एलर्जी (Allergy) **:** मुदाफ़ेअ़ती निज़ाम (Immune system) हमें नुक़्सान देह अ़नासिर से बचाता है और एलर्जी किसी ऐसे ही अ़न्सर के ख़िलाफ़ मज़बूत मुदाफ़ेअ़ती रद्दे अ़मल होता है, उस को एलर्जी केहते हैं।

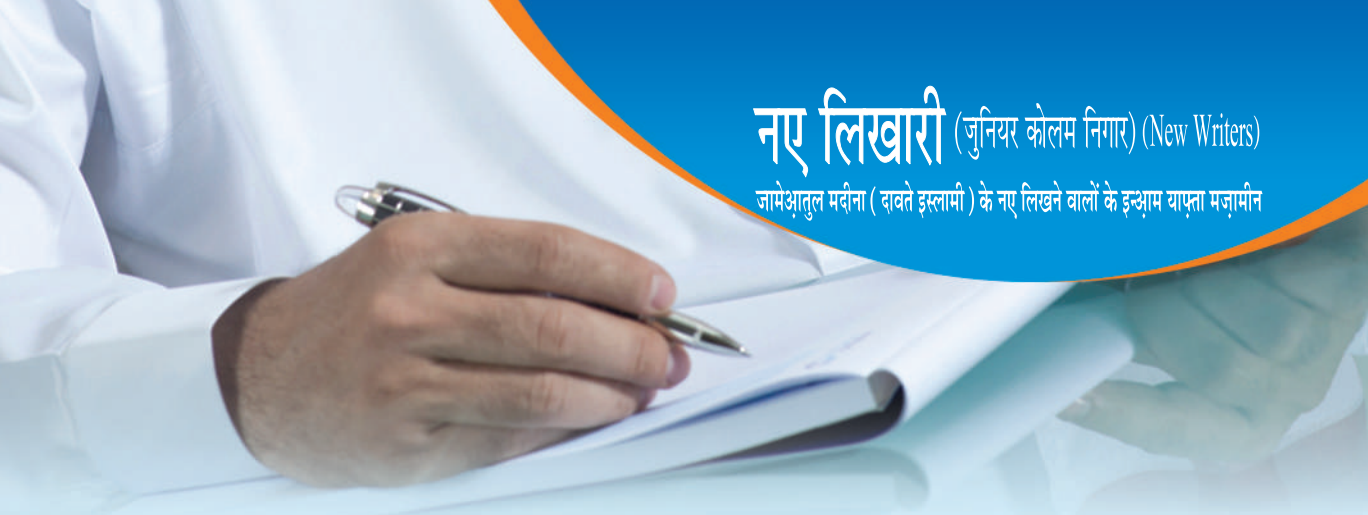
एलर्जी की अक़्साम : (1) बच्चों में खाने की चीज़ों के रद्दे अ़मल को बर्दाशत करने की सलाह़िय्यत कम होती है, इस को खाने की एलर्जी (Food allergy) कहा जाता है (2) इस के इ़लावा सांस की एलर्जी जिस को (Airborne allergy) कहा जाता है, इस से मुतास्सिर होने वाले बच्चों को दम्मा की बीमारी होती है और येह मिट्टी के छोटे ज़र्रात (Dust Particles), फूलों और पौदों के ज़र्रात (Pollens), पालतू जानवरों के ज़र्रात (Pet Dander) और इस के इ़लावा कपड़ों, फफून्दी और लाल बेग वग़ैरा से भी होती है (3) कीड़ों के डंक से एलर्जी (4) दवाइयों से एलर्जी (5) कीमियाई अदवियात से एलर्जी।

एलर्जी की अ़लामात (Symptoms of Allergy) **:** (1) सांस लेने में दुश्वारी (2) आंखों में ख़ारिश, जलन या फटना और लाल सूजी हुई आंखें (3) खांसी (4) नाक का बेहना (5) जिल्द का लाल हो जाना, ख़ारिश और छत्ते (लाल उभरे हुवे फोड़े) (6) Anaphylactic shock यानी सदमे में चले जाना।

एलर्जी का इलाज (Treatment of allergies) **:** डॉक्टर बच्चे का मुआ़इना करेगा और आप से बच्चे की एलर्जी से मुतअ़ल्लिक़ मालूमात लेगा, आप के बच्चे के टेस्ट भी कराए जा सकते हैं, जिस में ख़ून के टेस्ट के इ़लावा जिल्द का टेस्ट, सीने का एक्स रे वग़ैरा शामिल हैं।

घर में बच्चे का ख़याल : अपने बच्चे की एलर्जी का इ़लाज डॉक्टर की तजवीज़ कर्दा दवाइयों से करने के इ़लावा जहां तक मुमकिन हो अपने बच्चे का एलर्जी से तअ़ल्लुक़ कम करें यानी जिन चीज़ों से आप के बच्चे को एलर्जी होती है उन से बचाएं, मसलन पालतू जानवरों और परिन्दों से घर को साफ़ रखें घर से क़ालीन हटा दें क्यूंकि इस में मिट्टी जम जाती है घर में नमी कम से कम हो बिस्तर गर्म पानी से धोएं खिड़कियों को बन्द रखें घर को साफ़ सुथरा रखें और घर से ऐसी चीज़ें निकाल दें जिन में मिट्टी जमती है जैसे पुराना फ़र्नीचर अगर बच्चे को खाने की किसी चीज़ से एलर्जी है तो वोह चीज़ बच्चे को न दें।

त़िब्बी इमदाद त़लब करें (Seek medical attention) **:** अगर इन अ़लामात "मुंह, गला, होंट, और ज़बान का सूज जाना, आवाज़ बैठ जाना, सर का भारी पन वग़ैरा" में से कोई भी अ़लामत बच्चे में ज़ाहिर हो तो अपने बच्चे को क़रीबी अस्पताल या क्लीनिक में ले जाएं।



नए लिखारी (जुनियर कोलम निगार) (New Writers)

जामेअ़तुल मदीना (दावते इस्लामी) के नए लिखने वालों के इन्आ़म याफ़्ता मज़ामीन

1 तिलावत में रोने वालों के वाक़ेआ़त

मौलाना आज़ाद मिस्बाही

बुलन्द मरातिब पर फ़ाइज़ होने के बावुजूद अल्लाह पाक के मेह़बूब बन्दों की दिली कैफ़िय्यात येह होती हैं कि जब उन के रूबरू आयाते ख़ौफ़ की तिलावत होती है तो उन्हें सुन कर ख़ौफ़े ख़ुदा से थर थर कांपने और रोने लगते हैं और बाज़ तो बेहोश हो जाते हैं चुनान्चे

(1) ह़ज़रते हिशाम बिन ह़स्सान केहते हैं कि एक दिन मैं ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के साथ ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा। जिस वक़्त हम उन के पास पहुंचे वोह एक क़ारी से क़ुरआने मजीद की तिलावत सुन रहे थे। जब उस ने इस आयत को पढ़ा :

﴿اِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۙ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तेरे रब का अ़ज़ाब ज़रूर होना है, उसे कोई टालने वाला नहीं। (پ26، الطور:7،8)

इस आयत को सुनते ही ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ज़ारो क़ितार रोने लगे। मजलिस में मौजूद दीगर ह़ज़रात भी गिर्या कुनां हो गए मगर ह़ज़रते मालिक बिन दीनार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का ह़ाल येह था कि वोह माही ए बे आब की त़रह़ तड़पने लगे और बेहोश हो कर ज़मीन पर गिर पड़े।

(موسوعۃ ابن ابی الدنیا، 3/187، رقم:92)

(2) ह़ज़रते यह़या बिन बकार رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के सामने इस आयते मुक़द्दसा की तिलावत की गई :

﴿وَلَوْ تَرٰۤى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और कभी तुम देखो जब अपने रब के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे। (پ7، الانعام:30) तो आप ने एक चीख़ मारी और फिर चार महीने तक बीमार रहे, बसरा के अत़राफ़ से लोग उन की इ़यादत के लिए आया करते। (احیاء العلوم، 4/543)

(3) एक मरतबा अपने वक़्त के मशहूर शैख़ मुज़िर अल क़ारी ने इस आयते करीमा की तिलावत की :

﴿هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۲۹﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हमारा येह नविश्ता तुम पर ह़क़ बोलता है हम लिखते रहे थे जो तुम ने किया। (پ25، الجاثیۃ:29)

येह आयत सुन कर ह़ज़रते सैयदना अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ैद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه (वफ़ात 177 हिजरी) इतना रोए कि आप पर बेहोशी त़ारी हो गई। जब इफ़ाक़ा हुवा तो बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ करने लगे : ऐ अल्लाह ! तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम ! मैं हमेशा अपनी त़ाक़त भर तेरी ना फ़रमानी से बचता रहूंगा, तो अपनी इबादत करने पर मेरी मदद फ़रमा। (احیاء العلوم، 4/543)

(4) ह़ज़रते हिशाम बिन ह़सन رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه जब क़ुरआने करीम की कोई आयते करीमा तिलावत करते तो आप का सांस रुक जाता और इस क़दर रोते कि ज़मीन पर तशरीफ़ ले आते, फिर घर से बाहर तशरीफ़ न लाते यहां तक कि लोग आप को मरीज़ समझ कर इ़यादत के लिए आते।

(अल्लाह वालों की बातें, 1/123)

अल्लाह पाक हमें भी अपने ख़ौफ़ से रोने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। आमीन

2 ख़ातूने जन्नत की सीरत से मिलने वाले दर्स

मुह़म्मद अरशद अ़त्तारी

तारीख़े इस्लाम की अ़ज़ीम ख़वातीन में एक अहम नाम ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते सैयदतुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का भी है। सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सीरत व सूरत में सब से ज़्यादा मुशाबेह थीं। आप इबादतो रियाज़त, ईसार व सख़ावत, ज़ोहदो क़नाअ़त

में मुनफ़रिदुल मिसाल थीं। ज़ैल में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की सीरते तैयबा और इन से मिलने वाले दुरूस ज़िक्र किए जाते हैं :

ख़ातूने जन्नत का ईसार व सख़ावत : मोहद्दिस इब्ने जौज़ी ने रिवायत किया है कि प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने जहेज़ में सैयदा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا को एक नई क़मीस दी। कुछ अर्से के बाद एक साइल ने आप के दरवाज़े पर सवाल किया और कहा: ऐ नबी के घर वालो ! मैं मोहताज हूं, कोई फटा पुराना कपड़ा दे दो । सैयदा ज़हरा के पास उस वक़्त एक पुरानी क़मीस थी, जैसे ही उस को देने का इरादा फ़रमाया तो फ़ौरन **अल्लाह** पाक का फ़रमान : ﴿لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तुम हरगिज़ भलाई को न पहुंचोगे जब तक राहे ख़ुदा में अपनी प्यारी चीज़ न ख़र्च करो। (پ4، آلِ عمرٰن:92) याद आ गया। फ़ौरन पुरानी क़मीस रख दी और नई क़मीस साइल को अ़ता कर दी।

(सफ़ीनए नूह, हिस्सा दुवुम, स. 32 मुलख़्ख़सन)

दर्स : क़ारेईने किराम ! देखा आप ने कि सैयदा फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने वोह चीज़ जिस की उन को ख़ुद भी ह़ाजत व ज़रूरत थी इस के बा वुजूद एक साइल के सवाल पर सदक़ा कर दी। हमें इस से येह दर्स मिलता है कि हम **अल्लाह** पाक की राह में वोह चीज़ सदक़ा करें जो हम को सब से ज़्यादा पसन्दीदा हो क्यूंकि **अल्लाह** करीम इरशाद फ़रमाता है :

﴿وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَیْءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِیْمٌ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम जो कुछ ख़र्च करो **अल्लाह** को मालूम है। (پ4، آلِ عمرٰن:92) यानी **अल्लाह** पाक जानता है कि तुम उस की राह में उ़म्दा, नफ़ीस और अपनी पसन्दीदा चीज़ ख़र्च कर रहे हो या रद्दी, नाकारा और अपनी ना पसन्दीदा चीज़ ख़र्च कर रहे हो, जो भी चीज़ तुम ख़र्च करोगे उसी के मुताबिक़ **अल्लाह** पाक तुम्हें जज़ा अ़ता फ़रमाएगा।

(روح البیان، 2/63 پ4، اٰلِ عمرٰن، تحت الآیۃ:92 ملخصًا)

ख़ातूने जन्नत की घरेलू ज़िन्दगी : ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ह़ज़रते सैयदतुना फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا मेरे पास ख़ुद ही चक्की चलाया करतीं, जिस की वज्ह से उन के हाथों में छाले पड़ जाते, मश्कीज़े में पानी भी ख़ुद ही भर कर लातीं जिस की वज्ह से उन के सीने पर निशान पड़ गए। घर की सफ़ाई वग़ैरा भी ख़ुद ही करती थीं जिस की वज्ह से कपड़े ग़ुबार आलूद हो जाते और हांडी के नीचे आग भी ख़ुद ही जलाया करतीं जिस की वज्ह से कपड़े मैले हो जाते। बाज़ अवक़ात तन्हा घर के तमाम काम काज करने की वज्ह से उन्हें काफ़ी तकलीफ़ का सामना करना पड़ता था। (مسند احمد، 1/322، حدیث:1312)

दर्स : सैयदा फ़ातिमा के इस अ़मल से येह बात नुमायां हुई कि आप घर के तमाम काम काज ख़ुद किया करती थीं जिस के सबब आप को मुसीबत व आज़माइश का भी सामना होता मगर आप ने कभी भी किसी ख़ादिमा को नहीं रखा बल्कि हमेशा ख़ुद ही काम किया करती थीं लेहाज़ा हमें भी चाहिए कि अपने काम ख़ुद किया करें।

अल्लाह पाक ख़ातूने जन्नत ह़ज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का हमें भी सदक़ा अ़ता फ़रमाए और इन की सीरत पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।

3 किताबों का अदब
अह़मद नवाज़ अ़त्तारी

इ़ल्म और अदब का आपस में बड़ा गेहरा तअ़ल्लुक़ है, इ़ल्म मानिन्दे जिस्म के और अदब रूह़ की त़रह़ है। जैसे रूह़ के बग़ैर बदन की कोई हैसियत नहीं ऐसे ही वोह इ़ल्म जो अदब से ख़ाली हो किसी काम का नहीं, यूं समझिए कि जहां अदब नहीं वहां इ़ल्म का कोई फ़ाइदा नहीं। अदब इन्सान को मोअ़ज़्ज़ज़ बनाता है और बे अदबी से इन्सान ज़लीलो रुस्वा होता है। इस लिए हर त़ालिबे इ़ल्म को उस्ताद, किताब और मादरे इ़ल्मी (तालीमी इदारे) का अदब मल्हूज़ रखना निहायत ही ज़रूरी है ताकि इ़ल्म की रूह़ पा सके।

ह़ुसूले इ़ल्म के ज़राएअ़ में से सब से बड़ा ज़रीआ़ किताबें हैं, इस लिए किताबों का अदबो एह़तिराम मल्हूज़ रखना अज़ ह़द ज़रूरी है। येह सच है कि अदब से ही इ़ल्म के दरवाज़े ख़ुलते हैं जबकि बे अदबी से राहे इ़ल्म में रुकावटें खड़ी होती हैं, बाज़ दफ़्आ़ बड़े से बड़े ज़हीनो फ़तीन त़लबा भी सूए अदब (बे अदबी) की वज्ह से ह़ुसूले इ़ल्म से मेह़रूम हो जाते हैं।

किताब का अदब इस लिए भी ज़रूरी है कि येह किताब ही है जिस से हम अदबो एह़तेराम सीखते हैं तो जब हम इस किताब की ही बे ह़ुर्मती करना शुरूअ़ कर दें तो फिर हमारे लिए इ़ल्मो फ़न के ख़ज़ाने तक रसाई ह़ासिल करना ना मुमकिन है।

देखिए हमारे अस्लाफ़ अदब के ह़वाले से कितने फ़िक्र मन्द हुवा करते थे और इस बारे में उन का त़र्ज़े अ़मल क्या हुवा करता था। चुनान्चे दयारे मिस्र के मुफ़्ती, सिक़ह मोहद्दिस, इमाम ह़ाफ़िज़ अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते थे : मैं ने बीस साल इमाम मालिक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में गुज़ारे। अठ्ठारह साल अदब सीखा और दो साल इ़ल्म, काश कि मेरा सारा वक़्त अदब सीखते गुज़रता।

(تنبیہ المغترین، ص33)

मोहद्दिसे आज़म मौलाना सरदार अहमद क़ादरी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه न सिर्फ़ ख़ुद कुतुबे अहादीस का अदब करते बल्कि तलबा में भी अदब का जौहर पैदा करते। चुनान्चे कुतुब रखते वक़्त हिफ़्ज़े मरातिब का ख़याल रखने की तलक़ीन करते हुवे फ़रमाते हैं : हदीसे पाक की किताब के ऊपर क़ुरआन के इलावा कोई और किताब नहीं रखनी चाहिए। एक मरतबा एक तालिबे इल्म ने बुख़ारी शरीफ़ के ऊपर गुलाब का फूल रख दिया तो आप ने मन्अ करते हुवे फ़रमाया : फूल अगर्चे बड़ी नर्म व नाज़ुक चीज़ है बहर हाल बुख़ारी शरीफ़ से अफ़्ज़ल नहीं। (फ़ैज़ाने मोहद्दिसे आज़म, स. 20 मुलख़्ख़सन)

इसी तरह मुजद्दिदे अल्फ़ेसानी हज़रते सैयदना शैख़ अहमद सरहिन्दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه किताब तो किताब काग़ज़ का भी इस क़दर एहतेराम फ़रमाते कि एक रोज़ अपने बिस्तर पर तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानक बे क़रार हो कर नीचे उतर आए और फ़रमाने लगे : लगता है बिस्तर के नीचे कोई काग़ज़ है। (आदाबे मुर्शिदे कामिल, स. 29 मुलख़्ख़सन) येह थे हमारे अस्लाफ़ ! इल्म का पहाड़ होने के बा वुजूद बड़े ख़ाकसार व बा अदब होते, किताबों का ऐसा एहतेराम करते कि हम सोच भी नहीं सकते, और एक आज के तलबा हैं जिन्हें असातेज़ा के एहतेराम का पास है न किताबों के अदब का लेहाज़, जैसे चाहा पढ़ लिया और जहां चाहा रख दिया। शायद आज के तलबा में पुख़्ता इल्म, तबहहुरे इल्मी और वुस्अते मुतालआ की कमी का बाइस किताबों के तअल्लुक़ से ना रवा रवय्या है, इस लिए अगर हम हक़ीक़ी इल्म के ख़्वाहां हैं तो हमें अपने अन्दर अदब का जौहर पैदा करना होगा क्यूंकि "बा अदब बा नसीब"। लेहाज़ा किताबों का ख़ूब ख़ूब एहतेराम करें, उन्हें बुलन्द जगह रखें, बा वुज़ू मुतालआ करें, न उन की तरफ़ पुश्त करें न पैर फैलाएं।

अल्लाह पाक हमें किताबों का अदब करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

आओ बच्चो ! हदीसे रसूल सुनते हैं



नमाज़ और बच्चे

मौलाना मुहम्मद जावीद अत्तारी मदनी

रेहमत के शामियानों में ख़ुश्बू के साथ साथ
ठन्डी हवा चलाएगी ऐ भाइयो ! नमाज़

अल्लाह पाक हमें पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ते रेहने और दीन के दीगर अहकामात पर भी अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

हमारे आख़री नबी हज़रते मुहम्मद صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : مُرُوْا اَوْلَادَکُمْ بِالصَّلٰوۃِ यानी अपने बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो। (ابو داؤد، 1/208، حدیث: 495)

प्यारे बच्चो ! नमाज़ दीने इस्लाम का एक अहम बुन्यादी रुक्न (यानी ज़रूरी हिस्सा) है। दिन रात में मुसलमान पर पांच नमाज़ें फ़र्ज़ हैं। नमाज़ हमारे प्यारे नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आंखों की ठन्डक है, नमाज़ पढ़ने से दिली सुकून मिलता है, नमाज़ जन्नत की चाबी है, नमाज़ दोज़ख़ से नजात दिलाती है, नमाज़ अल्लाह पाक और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करने का सबब बनती है।

एक दफ़्आ एक शख़्स नमाज़े फ़ज्र अदा करने के लिए मस्जिद में नहीं आया, हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने पैग़ाम भेज कर उसे बुलवाया तो उस ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : मैं बीमार था, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : अगर तुम किसी और के (यानी मेरे) पास आ सकते हो तो नमाज़ के लिए भी निकला करो।

(مصنف ابن ابی شیبہ، 1/379، حدیث: 1، فیضان نماز، ص223 ملخصاً)

अच्छे बच्चो ! जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो होम वर्क, बच्चों के साथ मिल कर बातें करना, खेल कूद और दीगर काम काज रोक कर नमाज़ पढ़नी चाहिए। थोड़ी सी कोशिश करने से हम ब आसानी नमाज़ों की पाबन्दी कर सकते हैं।

बच्चों के लिए अमीरे एहले सुन्नत की नसीहत



रोड कैसे पार करें ?

अच्छे बच्चो !

अमीरे एहले सुन्नत अल्लामा मुहम्मद इल्यास क़ादरी साहब फ़रमाते हैं :

मौलाना उवैस यामीन अत्तारी मदनी

जब भी रोड पार करना हो तो पेहले रोड के किनारे खड़े हो कर दोनों तरफ़ देख लें कि कोई गाड़ी वग़ैरा तो नहीं आ रही और फिर रोड पार करें। (मल्फ़ूज़ाते अमीरे एहले सुन्नत (क़िस्त 15) जूठा पानी फ़ेंक देना कैसा ? स. 18 मुलख़्ख़सन)

प्यारे बच्चो ! अकेले रोड पार (Cross) नहीं करना चाहिए बल्कि अपने अम्मी अब्बू या बड़े भाई वग़ैरा के साथ रोड पार करना चाहिए, अगर कभी अकेले रोड पार करना पड़े तो कोशिश कीजिए कि क़रीब ही किसी बड़े आदमी को केह दें कि हमें रोड पार करवा दें और अगर क़रीब कोई भी नहीं तो पेहले अच्छी तरह दाएं और बाएं यानी रोड के दोनों तरफ़ देख लीजिए कि कोई गाड़ी वग़ैरा तो नहीं आ रही और फिर बग़ैर भागे आराम से रोड पार कीजिए। कुछ बच्चे भाग कर रोड पार करते हैं जो हादिसे और चोट लगने का सबब बन सकता है लेहाज़ा हमें इस से बचते हुवे ख़ूब एहतियात से रोड पार करना चाहिए।



खाना और शैतान

फ़ुज़ैल अ़त्तारी मदनी

अम्मी और कितनी देर लगेगी ? नन्हे मियां ने भूक से पेट पर हाथ फेरते हुवे पूछा,

बस 5 मिनट और.....

आज तो मैं नन्हे मियां के लिए मज़ेदार बिरयानी बना रही हूं और साथ में लबे शीरीं भी।

अभी पांच मिनट और ! अम्मी की आवाज़ सुनते ही नन्हे मियां एक दम बोले।

क्या हुवा नन्हे मियां ? सब ख़ैरियत तो है ? अब्बू ने नन्हे मियां के सर पर हाथ फेरते हुवे पूछा।

अब्बू को देखते ही नन्हे मियां के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कुराहट तो आई लेकिन भूक की वज्ह से जल्द ही ग़ाइब हो गई फिर नन्हे मियां सामने पड़ी ख़ाली प्लेट में चम्चा घुमाने लगे।

लगता है हमारे नन्हे मियां को आज बहुत तेज़ भूक लगी है, देखो नन्हे मियां ! ख़ाली प्लेट में चम्चा घुमाने से पेट तो नहीं भरने वाला, चलें ऐसा करते हैं जब तक आप का खाना आ रहा है मैं आप को एक सच्ची कहानी सुनाता हूं, अब्बू की बात सुनते ही नन्हे मियां सरक कर अब्बू के पास आ बैठे। जी ! येह ठीक है लेकिन येह स्टोरी कब की है ? नन्हे मियां ने अब्बू को देखते हुवे पूछा।

येह स्टोरी आज से 1400 साल पेहले की है। (Fourteen Hundred Years) ? नन्हे मियां ने हैरत से अब्बू को देखते हुवे कहा।

जी नन्हे मियां ! हुवा कुछ यूं कि एक बार कुछ मुसलमान एक साथ खाना खा रहे थे और उन लोगों के दरमियान एक बहुत ही इ़ज़्ज़तदार बुज़ुर्ग भी तशरीफ़ फ़रमा थे अचानक एक छोटी बच्ची भागती हुई आई और अपना हाथ खाने की त़रफ़ बढ़ाने लगी जैसे ही उन बुज़ुर्ग ने बच्ची को देखा तो उस बच्ची का हाथ पकड़ लिया।

अब्बू ! उन्हों ने उस का हाथ क्यूं पकड़ा ? क्या खाने से पेहले उस ने हाथ नहीं धोए थे ?

नन्हे मियां का सवाल सुनते ही अब्बू मुस्कुराने लगे और कहा :

अरे नन्हे मियां इतनी भी क्या जल्दी है अभी तो कहानी शुरूअ़ हुई है फिर पता है क्या हुवा ? थोड़ी ही देर बाद एक और शख़्स जल्दी जल्दी आया और उस ने भी खाने की त़रफ़ हाथ बढ़ाया !

अब्बू की बात पूरी होने से पेहले ही नन्हे मियां बोल पड़े : और उन बुज़ुर्ग ने उस का भी हाथ पकड़ लिया !

नन्हे मियां की बात सुनते ही अब्बू ने नन्हे मियां के हाथों को थामा और कहा : हां उन बुज़ुर्ग ने उस शख़्स का भी हाथ पकड़ लिया और फिर उन दोनों से फ़रमाया : खाने पर **अल्लाह** पाक का नाम नहीं लिया जाए तो शैत़ान वोह खाना अपने लिए ह़लाल कर लेता है। (ماخوذ از مسلم، ص860، حدیث:5259)

अब्बू ! ह़लाल कर लेता है इस का क्या मत़लब ? नन्हे मियां ने परेशान नज़रों से अब्बू को देखते हुवे पूछा।

यानी नन्हे मियां जिस खाने पर **अल्लाह** पाक का नाम नहीं लिया जाए, बिस्मिल्लाह शरीफ़ न पढ़ी जाए तो उस खाने में शैतान भी शरीक हो जाता है और खाने लग जाता है।

अच्छा जभी उन बुजुर्ग ने उन दोनों का हाथ पकड़ा था नन्हे मियां ने गर्दन को हिलाते हुवे कहा।

जी नन्हे मियां ! आप ठीक समझे, अब्बू ने नन्हे मियां के सर पर हाथ रखते हुवे जवाब दिया।

आप ने हमारे नन्हे मियां को येह तो सिखा दिया कि बग़ैर बिस्मिल्लाह पढ़े खाना नहीं चाहिए लेकिन येह भी तो बताएं वोह बुजुर्ग कौन थे ?

नन्हे मियां की अम्मी जान ने दस्तर ख़्वान पर खाना रखते हुवे कहा।

नन्हे मियां वोह बुजुर्ग हम सब के प्यारे और **अल्लाह** पाक के आख़री नबी हज़रत मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थे।

अब्बू के मुंह से येह नाम सुनते ही सब ने अदब से صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ा और फिर बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाने में शरीक हो गए।



दुआए अ़त्तार पर
मदनी रसाइल के मुत़ालए़ की धूम

शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने जुमादल ऊला और जुमादल उख़रा 1442 हिजरी में दर्जे ज़ैल इस्लामी रसाइल पढ़ने सुनने की तरग़ीब दिलाई और पढ़ने सुनने वालों को अपनी पुर ख़ुलूस दुआओं से भी नवाज़ा। आप भी मुत़ालआ़ कर के दुआए अ़त्तार के ह़क़दार बनिए :

1 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "शाने रफ़ाई" पढ़ या सुन ले उस को ह़ज़रते शैख़ सैयद अह़मद कबीर रफ़ाई का फ़ैज़ान नसीब फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "सर्दी के बारे में दिलचस्प मालूमात" पढ़ या सुन ले उस को जहन्नम के हर अ़ज़ाब से ख़ुसूसन जहन्नम के ठन्डक के शदीद अ़ज़ाब से बचा कर जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िले से नवाज़ दे। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

3 या **अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "शाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत" पढ़ या सुन ले उस को अपने नेक बन्दे ह़ाफ़िज़े मिल्लत की बरकतें अ़त़ा कर और उस की बे ह़िसाब बख़्शिश फ़रमा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

4 या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "साबिर बूढ़ा" पढ़ या सुन ले उसे मुसीबतों पर सब्र करने का ह़ौसला अ़त़ा फ़रमा, उस को पुल सिरात़ से सलामती के साथ गुज़ार और उस की बे ह़िसाब मग़्फ़िरत फ़रमा। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रिसाला	पढ़ने सुनने वाले इस्लामी भाई	इस्लामी बहनें	कुल तादाद
शाने रफ़ाई	17 लाख 3 हज़ार 771	6 लाख 78 हज़ार 600	23 लाख 82 हज़ार 371
सर्दी के बारे में दिलचस्प मालूमात	19 लाख 13 हज़ार 272	6 लाख 57 हज़ार 573	25 लाख 70 हज़ार 845
शाने ह़ाफ़िज़े मिल्लत	20 लाख 28 हज़ार 938	6 लाख 60 हज़ार 485	26 लाख 89 हज़ार 423
साबिर बूढ़ा	21 लाख 7 हज़ार 540	7 लाख 38 हज़ार 221	28 लाख 45 हज़ार 761



जंगली पड़ोसी

(दूसरी और आख़री क़िस्त)

मौलाना अबू मुआविया अत्तारी मदनी

कुछ देर बाद दोनों सफ़ेद कुत्ते अपने पड़ोसी ज़ेब्रे के घर पर थे, इन दोनों के उतरे हुवे चेहरे देख कर बड़े ज़ेब्रे ने पूछा : भाइयो ! ख़ैरियत तो है आप दोनों परेशान नज़र आ रहे हैं, ऐसा लगता है कि किसी से डरे हुवे हो ?

हां भाई ! आप ने दुरुस्त अन्दाज़ा लगाया है, येह केहते हुवे बड़े कुत्ते ने छोटे चीते वाली सारी कहानी सुना दी।

ओ हो ! बिल्कुल ग़लत किया उन्हों ने, बड़े ज़ेब्रे ने अफ़्सोस का इज़हार किया।

लेकिन ! इस में हम क्या कर सकते हैं, येह तो तुम्हारा और चीतों का मस्अला है, छोटे ज़ेब्रे ने जान छुड़ाते हुवे कहा।

चुप करो तुम ! बड़े ने डांटते हुवे रोका, फिर समझाते हुवे केहने लगा : येह बात बिल्कुल भी हमें ज़ेब नहीं देती, येह दोनों सफ़ेद कुत्ते हमारे पड़ोसी हैं, हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि मुश्किल वक़्त में इन की मदद करें और इन्हें अकेला न छोड़ें। वरना आज इन की बारी है तो कल हमारी बारी होगी।

सोरी भय्या ! ग़लती हो गई, मगर ! हम कर भी क्या सकते हैं ? ग़लती को मानने के बाद छोटे ने परेशानी बताते हुवे कहा।

छोटे कुत्ते ने दुख भरे अन्दाज़ में कहा : हम तो उन का मुक़ाबला नहीं कर सकते, वोह हम से ज़्यादा ताक़तवर हैं।

तसल्ली देते हुवे बड़े ज़ेब्रे ने कहा : परेशान होने की ज़रूरत नहीं, वोह अगर्चे ताक़तवर हैं लेकिन तादाद में हम से कम हैं, और मुक़ाबले में ताक़त नहीं जज़्बे की ज़्यादा ज़रूरत होती है। हां ! पेहले हम उन से बात करेंगे और समझाने की कोशिश करेंगे, अगर वोह नहीं माने तो फिर जो ज़रूरी होगा वोह करेंगे।

बड़े कुत्ते ने शुक्रिया अदा करते हुवे कहा कि आप की बड़ी मेहरबानी, परेशानी के वक़्त आप ने हमारा साथ दिया।

शाम का वक़्त हुवा था, चीतों के घर दस्तक हुई तो छोटा चीता उठ कर दरवाज़े पर गया।

तुम सब यहां ! क्या काम है जो इधर जम्अ हुवे हो ?

बड़े कुत्ते ने गुस्से से कहा : आज सुब्ह जो तुम ने हरकत की है, इस की वज्ह से हम सब यहां हैं, पेहले अपने बड़े भाई को बाहर बुलाओ फिर हम बात करेंगे।

आवाज़ें सुन कर बड़ा चीता भी बाहर आ गया, और सारे पड़ोसियों को एक साथ देख कर केहने लगा : क्या मस्अला है ? क्यूं सब ने हमारे दरवाज़े पर रश लगाया हुवा है ?

बड़े ज़ेब्रे ने हौसले के साथ कहा : हम तुम्हारे पड़ोसी हैं, दुख दर्द में काम आने वाले हैं, परेशानी में तुम्हारा साथ देते हैं, पिछली सर्दियों में जब तुम ज़ख़्मी हो गए थे तो तुम्हारा इलाज भी हम ने मिल कर किया था, आज जब तुन्दरुस्त हो ! जान वापस आ गई है तो

अपने ही पड़ोसियों को धमका रहे हो।

छोटे कुत्ते ने भी बात बढ़ाते हुवे कहा : येह तो एह़सान का सिला नहीं था, पड़ोसी के साथ येह अन्दाज़ बिल्कुल भी मुनासिब नहीं है।

पड़ोसियों की बातों से बड़े चीते को समझ आ गया कि वोह दोनों ग़लती पर थे, उन्हें हरगिज़ ऐसा नहीं करना चाहिए था, इस लिए उस ने नर्म अन्दाज़ में केहना शुरूअ़ किया :

भाइयो ! हम लालच में आ गए थे, और ख़ुद के फ़ाइदे की वज्ह से अपने ही मददगारों को तक्लीफ़ पहुंचाने का इरादा कर बैठे थे। बेहतर होगा कि आप हमें मुआ़फ़ कर दें और हम पेहले की त़रह़ मिल कर चैनो सुकून से रहें।

बड़े ज़ेब्रे ने भी इस बात की ताईद करते हुवे कहा : हम भी येही चाहते हैं सब मिल कर रहें, किसी को मुसीबत व तक्लीफ़ देने का सबब न बनें।

फिर सुल्ह़ सफ़ाई हुई, मुआ़फ़ी तलाफ़ी के बाद दोबारा सारे मिल कर ख़ुशी से रेहने लगे।

प्यारे बच्चो ! मालूम हुवा कि मुश्किल वक़्त में अपने पड़ोसियों, दोस्तों को अकेला नहीं छोड़ना चाहिए बल्कि उन के साथ मिल कर इस परेशानी को ह़ल करना चाहिए कि साथ मिल कर करने की बरकत से वोह काम भी हो जाता है और मुसलमान की मदद करने का सवाब भी मिल जाता है।



ज़ह़ीन बच्चे

ज़बानी ग़लती बता दी

मौलाना अबू तैयब अ़त़्त़ारी मदनी

बुख़ारा शेहर में एक बच्चा था, जिस की उ़म्र तक़रीबन दस साल थी, इब्तिदाई तालीम ह़ासिल कर रहा था कि इ़ल्मे ह़दीस का शौक़ हुवा, प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लबों से निकलने वाले अल्फ़ाज़ और जुम्लों के इ़ल्म की ख़्वाहिश दिल में पैदा हुई। इस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए वोह अपने शेह़्र के इ़ल्मे ह़दीस के बड़े बड़े असातेज़ा के पास पहुंच गया।

इ़ल्म ह़ासिल करने का सिलसिला जारी था, रोज़ाना सबक़ लिया जाता और इसे याद किया जाता था, एक दिन एक उस्ताज़ साह़ब से लेक्चर देते हुवे ग़लती हो गई और वोह सह़ीह़ बात बयान नहीं कर सके तो इस छोटे बच्चे ने शरमाए और डरे बग़ैर, अदब के साथ अ़र्ज़ की : जनाब ! जैसा आप ने पढ़ा है वैसा नहीं है, किताब में तो कुछ और लिखा है।

उस्ताज़ साह़ब ने अपनी किताब उठा कर उस में चेक किया और फिर बच्चे से पूछा : बताओ दुरुस्त क्या है ? तो बच्चे ने ज़बानी सारी तफ़्सील सह़ीह़ सह़ीह़ बता दी। (نزھۃ القاری، مقدمہ، 1/107 ماخوذاً)

समझदार बच्चो ! येह छोटे बच्चे वोह थे जिन्हें दुन्या आज "इमाम बुख़ारी" से जानती है, आप का नाम मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी है, अह़ादीस की मश्हूर किताब "सह़ीह़ बुख़ारी" आप ही की है।

इमाम बुख़ारी की त़रह़ हमें भी चाहिए कि अपनी तालीम पर भरपूर तवज्जोह दें, जो पढ़ें उसे समझें, याद रखें और हमेशा अपने टीचर्ज़ से अदब के साथ पूछते और सीखते रहें।



बच्चा हमें देख कर क्या सीखता है ?

मौलाना आसिफ़ जहानज़ेब अ़त्तारी मदनी

बच्चा जब तरबियती उ़म्र में होता है उस वक़्त बच्चा अल्फ़ाज़ से इतनी नसीह़त ह़ासिल नहीं करता जितनी वालिदैन के अफ़आ़ल से ह़ासिल करता है क्यूंकि बच्चों पर अल्फ़ाज़ से ज़्यादा किरदार असर अन्दाज़ होता है, अब वालिदैन का जैसा किरदार होगा बच्चा उसी अख़्लाक़ व किरदार के साथ नश्वो नुमा पाएगा मसलन आप मुस्कुराएंगे तो बच्चा भी मुस्कुराएगा, आप नाराज़ होंगे तो बच्चा भी नाराज़ होना सीखेगा वग़ैरा । आज हमारे मुआ़शरे की येह एक बदनुमा ह़क़ीक़त है कि वालिदैन का अख़्लाक़ तो मन्फ़ी होता है लेकिन बच्चे के अख़्लाक़ को मुस्बत देखने की ख़्वाहिश होती है, वालिदैन ख़ुद चाहे कितने ही ग़ुसीले मिज़ाज के हों लेकिन बच्चा ख़ुश मिज़ाज होना चाहिए, वालिदैन ख़ुद बे परवाह हों लेकिन बच्चा एह़सासे ज़िम्मेदारी वाला होना चाहिए, वालिदैन ख़ुद गाली गलोच के आ़दी हों लेकिन बच्चे की ज़बान पर गाली नहीं आनी चाहिए, ग़रज़ येह कि बच्चे की तरबियत के इस दोहरे मेयार की वज्ह से हमारी मौजूदा नस्ल अ़मली तौ़र पर कमज़ोर और मुज़्तरिब नज़र आती है, इन में न अख़्लाक़ की मज़बूती होती है न अ़मल की रग़बत, इस दोहरे मेयार की चन्द मिसालें मुलाह़ज़ा कीजिए और अपना तजज़िया ख़ुद कीजिए कि हम बच्चों से क्या चाहते हैं और बच्चा हमें देख कर क्या सीखता है ?

1 वालिदैन बच्चों से अक्सर येह केहते हैं कि कोई मुश्किल में हो तो उस की मदद करनी चाहिए इस से **अल्लाह** पाक ख़ुश होता है और सवाब भी मिलता है, लेकिन वोही बच्चा जब वालिद या वालिदा से अपनी पढ़ाई के सिलसिले में मदद चाहता है तो वालिदैन मसरूफ़ियत की बिना पर उसे टाल देते हैं, गोया आप उसे येह तास्सुर देते हैं कि मुश्किल काम में मदद उसी वक़्त हो सकती है जब आप बिल्कुल फ़ारिग़ हों । इस तास्सुर से बच्चे के नन्हे ज़ेह्न में येह बैठ जाता है कि मुश्किल में किसी दूसरे की मदद करना बहुत मुश्किल है क्यूंकि ज़िन्दगी बहुत मसरूफ़ है ।

2 बच्चे को येह नसीह़त की जाती है कि ज़िन्दगी में हमेशा सच बोलना चाहिए, लेकिन इस ने इस बात का भी मुशाहदा किया कि जब अब्बू का कोई दोस्त मिलने आया तो अब्बू ने उसी बच्चे को दरवाज़े पर येह पैग़ाम दे कर भेजा कि उस से केह दो कि अब्बू घर पर नहीं हैं इस अ़मली मुशाहदे से बच्चे ने सीखा कि जब किसी काम से बचना हो तो झूट का सहारा ले लेना चाहिए ।

3 बच्चे ने येह भी सुन रखा था कि ग़ुस्सा करना, लड़ाई झगड़ा करना, गाली गलोच येह सब गन्दी बातें हैं अच्छे लोग ऐसे काम नहीं करते, लेकिन बच्चे ने बारहा येह भी देखा कि मम्मी पापा की तो अक्सर लड़ाई होती है और जब भी पापा को ग़ुस्सा आता है पापा मम्मा को गालियां भी देते हैं और मारते पीटते भी हैं, बच्चे के ला शुऊ़र में येह बात बैठ गई कि ग़ुस्सा करना, लड़ाई झगड़ा करना, गाली गलोच येह सब बातें बुरी तो हैं लेकिन जिस पर ग़ुस्सा आ जाए तो इस का ह़ल येही है कि उस पर ग़ुस्सा उतार दिया जाए और बुरा भला केह कर दिल ठन्डा कर लिया जाए ।

4 बच्चे को कोई काम देते हुवे येह नसीह़त की जाती है कि काम वक़्त पर करना चाहिए, लेकिन अक्सर दादाजान अब्बू को कोई काम केहते हैं तो अब्बू उस काम को तीन चार दिन तक लटका देते हैं, बच्चे के ज़ेह्न पर येह नक़्श हो गया कि काम में ताख़ीर करने में कोई ह़रज नहीं ।

मोह़तरम वालिदैने किराम ! येह चन्द मिसालें और इन के नतीजे हमारे सामने हैं कि बच्चे हमारे अफ़आ़ल से क्या सीख रहे हैं ? अगर वालिदैन की येह ख़्वाहिश है कि बच्चे की तरबियत आला अख़्लाक़ पर हो तो पेहले वालिदैन को ख़ुद अपनी अख़्लाक़ी ह़ालत दुरुस्त करनी होगी, अपने रवय्ये और ज़िन्दगी गुज़ारने के अन्दाज़ में तब्दीली लानी होगी ।

अल्लाह पाक हम सब को अच्छे अख़्लाक़ अपनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रौशन मुस्तक़्बिल



दायां या बायां ?

मौलाना शाहज़ेब अत्तारी मदनी

शदीद गर्मी और ऊपर से मेहमानों की गेहमा गेहमी !

आज उ़ज़ैर ने पेहला रोज़ा रखा था, सब रिश्तेदार और मेहमान बातों में मसरूफ़ थे, लेकिन ! उ़ज़ैर ख़ामोश बैठा दरवाज़े को घूरे जा रहा था जैसे कि किसी का इन्तेज़ार कर रहा हो।

जब इफ़्तार का वक़्त क़रीब हो गया तो सअ़द के पहुंचने पर उ़ज़ैर का चेहरा खिल सा उठा और वोह ख़ुशी से पुकारा : सअ़द ! सअ़द !! वोह भी इस की त़रफ़ मुतवज्जेह हुवा। उ़ज़ैर ने हाथ मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया तो सअ़द ने भी बायां हाथ (Left Hand) आगे बढ़ा दिया। उ़ज़ैर ने मुस्कुराते हुवे सअ़द का दायां हाथ (Right Hand) पकड़ कर खुद ही हाथ मिलाते हुवे कहा : अरे सअ़द ! कितना अ़र्सा हो गया मगर दायां बायां अभी तक याद नहीं कर सके।

उ़ज़ैर !, सअ़द !! पीछे से किसी की आवाज़ आई तो दोनों ने मुड़ कर देखा। बाक़िर !! दोनों ने एक साथ पुकारा, सलाम दुआ़ के बाद येह तीनों भी दस्तर ख़्वान पर इफ़्तारी के लिए बैठ गए।

रंग बि रंगे फलों से सजे दस्तर ख़्वान और त़रह़ त़रह़ के मशरूबात को देख कर बाक़िर केहने लगा : سُبْحٰنَ الله ! अल्लाह पाक की कैसी प्यारी नेमतें हैं, उ़ज़ैर और सअ़द भी हां में हां मिलाते हुवे बोले : سُبْحٰنَ الله ! سُبْحٰنَ الله !

मग़रिब का वक़्त शुरूअ़ होते ही इफ़्तारी के एलान होने शुरूअ़ हो गए, इन तीनों ने भी बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ कर खजूर से रोज़ा खोला।

अचानक उ़ज़ैर की नज़र सअ़द के हाथ पर गई वोह उल्टे हाथ से खा रहा था। अरे सअ़द ! येह क्या है ? आप फिर बाएं हाथ से खा रहे हैं, हमेशा दाएं हाथ से खाना खाना चाहिए।

कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हें बाएं और दाएं हाथ का पता नहीं चलता ? बाक़िर ने सअ़द से सवाल किया।

अम्मी बहुत समझाती हैं मगर मुझे दायां और बायां समझ नहीं आता। अच्छा ! तो येह बताओ कि दिल कहां है ? बाक़िर ने सवाल किया ? यहां, सअ़द ने दिल पर हाथ रखते हुवे बताया।

बस ! बाएं हाथ की येही निशानी है कि जिस त़रफ़ आप का दिल है, बाक़िर ने उसे समझाया।

अच्छा भई ! येह बताओ कि अगर मैं बाएं हाथ से खा लूं तो क्या फ़र्क़ पड़ता है ? सअ़द ने इन दोनों से सवाल किया।

हम मुसलमान हैं और मुसलमान हर काम में अपने नबी की पैरवी करता है। खाना खाना, हाथ मिलाना, कपड़े पेहनना जैसे सारे काम हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सीधे हाथ से किया करते थे, बाक़िर ने सअ़द को तसल्ली से समझाते हुवे बताया। ठीक ! आप दोनों का बहुत शुक्रिया, सअ़द ने कहा।

अब तो दायां और बायां ज़रूर याद रहेगा, उ़ज़ैर ने मुस्कुरा कर पूछा ? सअ़द ने झट से अपना बायां हाथ दिल पे रखा और कहा : जी हां ! येह बायां और येह दायां।

क्या आप जानते हैं ?

मौलाना अबू मुहम्मद अ़त्तारी मदनी

सवाल : अल्लाह करीम ने ज़मीन पर चलने वाले हर जानदार को किस से पैदा फ़रमाया है ?

जवाब : पानी से । (پ18، النور:45)

सवाल : हिजरत के बाद मुसलमानों के लिए बैतुल मुक़द्दस कितने अ़र्से तक क़िब्ला रहा ?

जवाब : 16 या 17 माह तक।

(طبقات ابن سعد،1/186)

सवाल : क़िब्ले की तब्दीली किस दिन और किस तारीख़ को हुई ?

जवाब : एक क़ौल के मुताबिक़ बरोज़ पीर 15 रजबुल मुरज्जब सिन दो हिजरी में । (طبقات ابن سعد،1/186)

सवाल : रमज़ान के रोज़े कब फ़र्ज़ हुवे ?

जवाब : शाबान सिन दो हिजरी में ।

(طبقات ابن سعد،1/191)

सवाल : सदक़ए फ़ित्र का हुक्म कब हुवा था ?

जवाब : सिन दो हिजरी में । (طبقات ابن سعد،1/191)

हुरूफ़ मिलाइए !

ج	م	و	د	ع	ر	د	س	ا
ب	پ	ل	ک	ز	ج	ھ	گ	ف
ر	ے	ت	ش	ر	ف	و	ع	ر
ا	ل	ی	ف	ا	ر	س	ا	ن
ء	ہ	ل	ی	ء	ا	ک	ی	م
ی	ی	ت	ث	ی	ٹ	ڑ	ص	غ
ل	ئ	ے	چ	ل	ط	ب	ن	م
ز	ی	ل	ع	ک	م	ا	ر	ذ

प्यारे बच्चो ! फ़रिश्तों को अल्लाह पाक ने नूर से पैदा किया है । फ़रिश्तों को मासूम केहते हैं क्यूंकि वोह गुनाह नहीं कर सकते । कुछ फ़रिश्ते इन्सानों की हिफ़ाज़त करते हैं । हर किसी के साथ दो फ़रिश्ते होते हैं जो इन्सान की हर अच्छी और बुरी बात लिखते हैं । उन्हें किरामन कातिबीन केहते हैं । फ़रिश्तों की तादाद अल्लाह पाक को मालूम है । चार फ़रिश्ते बहुत मश्हूर हैं :

(1) ह़ज़रते जिब्राईल (2) ह़ज़रते मीकाईल (3) ह़ज़रते इसराफ़ील (4) ह़ज़रते इ़ज़राईल علیہم الصلوٰۃ والسلام

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर 5 नाम तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ "**फ़रिश्ते**" को तलाश कर के बताया गया है ।

1 جبرائیل 2 میکائیل 3 اِسرافیل 4 عزرائیل 5 رَعْد۔



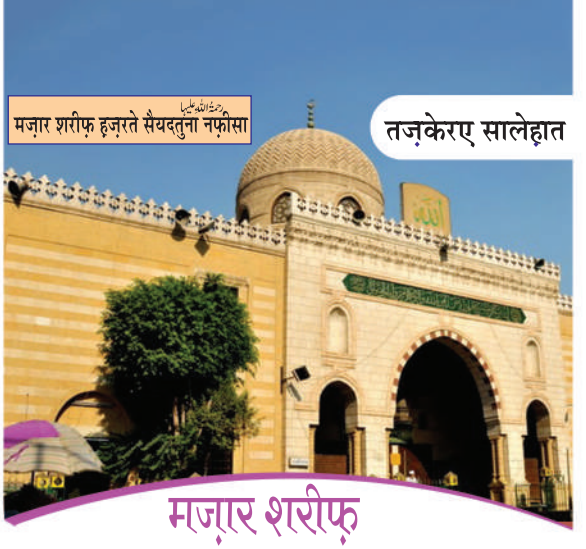
कितनी ईदी मिली ?

उम्मे मीलाद अ़त्तारिया

यक़ीनन रमज़ानुल मुबारक आ़शिक़ाने रमज़ान के लिए निहायत ही ख़ुशी का महीना है, येही वज्ह है कि इस मुबारक माह के रुख़्सत होने पर कई उ़श्शाक़ के दिल ग़म में डूब जाते हैं, लेकिन इस के साथ साथ अल्लाह पाक ने रमज़ानुल मुबारक के शुक्राने में एक ख़ुशी का मौक़अ़ भी अ़ता फ़रमाया जिसे ईदुल फ़ित्र के नाम से जाना जाता है, जो कि एक अहम इस्लामी मज़हबी तेहवार है इसे मुसलमान यकुम शव्वाल को जोशो ख़रोश के साथ मनाते हैं नीज़ ईद अ़रबी ज़बान का लफ़्ज़ है और इसे ख़ुशी, फ़रहत वग़ैरा के मआ़नी से भी ताबीर किया जाता है और इस दिन रोज़ा रखने से शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने मन्अ़ फ़रमाया है।

मुसलमानों में ईदुल फ़ित्र मनाने के मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ पाए जाते हैं, मसलन ईद के मौक़ेअ़ पर नए कपड़े पेहनना, घरों में लज़ीज़ और त़रह़ त़रह़ के खाने बनवाना, रिश्तेदारों या दोस्तों से मुलाक़ात के लिए जाना और बैरूने मुल्क से आ कर अपने वालिदैन के साथ ईद मनाना वग़ैरा लेकिन इन सब मामूलात के साथ साथ ईद के मौक़ेअ़ पर ईदी लेने और देने का भी सिलसिला होता है, जिस में मां बाप अपने बच्चों को ईदी के त़ौर पर पैसे देते हैं, इसी त़रह़ बच्चे बड़े बहन भाइयों से भी ईदी त़लब करते हैं नीज़ दीगर रिश्तेदारों के बच्चों को भी ईदी पेश की जाती है।

इसी त़रह़ शादी शुदा बेटी के घर ईदी भिजवाने का भी रवाज पाया जाता है, यक़ीनन येह बेटियों से मह़ब्बत के इज़हार का एक त़रीक़ा है, लेकिन इस मौक़ेअ़ पर बाज़ नाख़ुश गवार मुआ़मलात हो जाते हैं जिन से सब को बचना चाहिए और वोह येह कि ईदी मिलने के बाद ख़वातीन एक दूसरे से इस ईदी का तज़केरा करती हैं और मुक़ाबला बाज़ी शुरूअ़ हो जाती है कि मेरे घर वालों ने तो मुझे इतना सारा सामान भेजा, तुम्हें "कितनी ईदी मिली" और तुम्हारे घर वालों ने तुम्हें ईदी में क्या दिया ? याद रखिए ! इस त़रह़ के सवालात दूसरी इस्लामी बहन को परेशान कर सकते हैं, ह़ालांकि हमारा रवय्या इस के बर अ़क्स हमदर्दाना और दूसरी इस्लामी बहनों की ख़ैर ख़्वाही वाला होना चाहिए, जिसे जो भी ईदी मिले उसे उस पर राज़ी और ख़ुश रेहना चाहिए और अल्लाह करीम की बारगाह में शुक्र अदा करना चाहिए कि शुक्र करने से नेमतों में इज़ाफ़ा होता है। इसी त़रह़ यहां येह बात भी ज़रूर मद्दे नज़र रहे कि ईदी देना कोई वाजिब या लाज़मी नहीं लेहाज़ा वालिदैन या दीगर रिश्तेदार जो भी ईदी दें अगर वोह अपनी ख़ुशी और इस्तेत़ाअ़त से दे सकते हैं तो बेशक दें, लेकिन इस के लिए ख़ुद को मशक़्क़त में डालने या ख़ुद पर जब्र करने की क़त़अ़न ज़रूरत नहीं और जिसे ईदी न मिली तो वोह भी नाराज़ न हो और न ही दिल छोटा करे। नीज़ सुसराल वालों को और बिल ख़ुसूस सास को चाहिए कि इस मुआ़मले में भी अपनी बहू को परेशान न करें बल्कि आपस में मह़ब्बत से रहें। اِنْ شَآءَ اللّٰه ईद की ख़ुशियां दो बाला हो जाएंगी। अल्लाह पाक हमें शरीअ़त की रौशनी में ईद मनाने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए, आमीन।



मज़ार शरीफ़
हज़रते सैयदतुना नफ़ीसा رحمۃ اللہ علیہا

मौलाना मुहम्मद बिलाल सईद अत्तारी मदनी

हज़रते सैयदा नफ़ीसा رحمۃ اللہ علیہا सैयदना इमाम हसन मुज्तबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की पड़पोती जबकि इमाम हसन के पोते हज़रते हसन अन्वर बिन ज़ैद की बेटी हैं । आप की विलादते बा सआदत मक्कतुल मुकर्रमा में 145 हिजरी में हुई, आप رحمۃ اللہ علیہا निहायत नेक, परहेज़गार, हाफ़िज़ा, मोहद्दिसा, आलिमा, आबिदा, ज़ाहिदा और वलिया थीं । **निकाह़ मुबारक :** आप का मुबारक निकाह़ हज़रते सैयदना इस्हाक़ बिन जाफ़र सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से हुवा, इन से आप की एक बेटी उम्मे कुल्सूम और एक बेटा क़ासिम पैदा हुवे ।[1] आप अपने शौहर के साथ मदीनए मुनव्वरा से मिस्र की त़रफ़ चली गई थीं ।[2] **इबादतो रियाज़त :** हज़रते सैयदा नफ़ीसा رحمۃ اللہ علیہا का मामूल था कि **दिन को रोज़ा रखतीं और रात भर नमाज़ें पढ़तीं, नीज़ आप ने 30 ह़ज किए ।** आप की भतीजी का क़ौल है : मैं ने अपनी फूफीजान ह़ज़रते नफ़ीसा की 40 साल ख़िदमत की, इस अ़र्से में कभी इन को रात में सोते हुवे नहीं देखा, एक बार मैं ने इन से अ़र्ज़ की : आप आराम क्यूं नहीं करतीं ? फ़रमाया : कैसे आराम करूं ? जबकि मेरे सामने दुश्वार मन्ज़िलें हैं जो कामयाब लोग ही त़ै कर सकते हैं । सैयदा नफ़ीसा رحمۃ اللہ علیہا की भतीजी से पूछा गया कि आप رحمۃ اللہ علیہا क्या खाती थीं ? जवाब दिया : वोह तीन रोज़ में बस एक लुक़्मा खा लिया करती थीं ।[3] **विसाले पुर मलाल :** आप رحمۃ اللہ علیہا यकुम रजब को बीमार हो गईं और रमज़ान शरीफ़ के महीने तक बीमार रहीं, रमज़ान में जब मरज़ बढ़ा तो आप को मश्वरा दिया गया कि आज रोज़ा तोड़ दें, आप ने फ़रमाया : 30 साल से मैं येह दुआ कर रही थी कि **जब मौत आए उस वक़्त मेरा रोज़ा हो और अब येह ख़्वाहिश पूरी होने वाली है तो मैं रोज़ा क्यूं तोड़ूं ?** येह फ़रमा कर सैयदा नफ़ीसा क़ुरआने करीम की तिलावत में मश्ग़ूल हो गईं और इसी ह़ालत में आप का इन्तेक़ाल हो गया ।[4] आप का विसाल शरीफ़ 208 हिजरी में रमज़ानुल मुबारक के पुरनूर महीने में मिस्र में हुवा । आप के मज़ारे पुर अन्वार के पास दुआएं क़बूल होती हैं ।[5] **करामात :** यूं तो ह़ज़रते सैयदतुना नफ़ीसा رحمۃ اللہ علیہا की कई करामतें किताबों में बयान की गई हैं लेकिन यहां इन में से 2 करामात ज़िक्र की जाती हैं : (1) आप رحمۃ اللہ علیہا की भतीजी का बयान है कि सैयदा नफ़ीसा رحمۃ اللہ علیہا जहां नमाज़ें पढ़ती थीं वहां एक टोकरी थी, जब वोह किसी चीज़ की ख़्वाहिश करतीं तो वोह चीज़ टोकरी में ख़ुद ब ख़ुद मिल जाती, मैं इन के पास ऐसी ऐसी चीज़ें देखती जो मेरे वेहमो गुमान में भी नहीं होती थीं, मैं नहीं जानती कि वोह कौन लाता था, एक बार मैं ने इन से ह़ैरत का इज़्हार किया तो फ़रमाने लगीं : ज़ैनब ! जो **अल्लाह** पाक पर भरोसा कर लेता है, दुन्या उस की फ़रमां बरदार हो जाती है ।[6] (2) **ह़ाजत पूरी हो जाएगी :** अगर किसी शख़्स को कोई सख़्त ह़ाजत दरपेश हो तो उसे चाहिए कि नज़्र माने कि अगर मेरा काम बन गया तो सैयदा नफ़ीसा के ईसाले सवाब के लिए नियाज़ का एहतिमाम करूंगा, اِنْ شَآءَ اللّٰہ उस शख़्स का जैसा भी मुश्किल मस्अला होगा ह़ल हो जाएगा, येह बहुत ही मुजर्रब अ़मल है । **अल्लाह** करीम की उन पर रेह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो, **अल्लाह** पाक हमें उन के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए, आमीन ।

(1) نور الابصار، ص207 (2) سیر اعلام النبلاء، 8/427 (3) نور الابصار، ص207 (4) تنویر الازھار، ص89، 90 ملخصاً (5) سیر اعلام النبلاء، 8/427 (6) نور الابصار، ص207 ملخصاً (7) الطبقات الکبریٰ للامام الشعرانی، 2/102 ملخصاً۔



आओ क़ुरआन पढ़ाएं

बिन्ते इस्माईल बदायूनी

ऐमन : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

अरीबा बाजी : وَعَلَيْكُمُ السَّلَام وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

ऐमन : كَيْفَ حَالُكِ يَا اُخْتِي ऐ मेरी बहन आप की त़बीअ़त कैसी है ?

अरीबा बाजी : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ عَلٰى كُلِّ حَال، وَ اَنْتِ؟ हर ह़ाल में सब तारीफ़ें **अल्लाह** के लिए हैं जो तमाम जहान वालों का पालने वाला है। और आप कैसी हैं ?

ऐमन : اَنَا بِخَيْرٍ وَعَافِيَة मैं भी ख़ैरो आ़फ़ियत से हूं।

अरीबा बाजी : ऐमन ! आप को कुरआने करीम पढ़ाने का तदरीसी रुक़आ़ मिल गया।

ऐमन : जी अरीबा बाजी ! मिल गया है।

अरीबा बाजी : तो आप कब से कुरआने मजीद पढ़ाना शुरूअ़ कर रही हैं ?

ऐमन : नाज़िमा बाजी केह रही थीं कि आप जल्द अज़ जल्द मद्रसतुल मदीना में बालिग़ात को कुरआने मजीद पढ़ाने के लिए तशरीफ़ ले आइए।

अरीबा बाजी : येह तो बहुत अच्छी बात है और नेकी के काम में जल्दी करनी चाहिए मेरा तो मश्वरा है कि आप आज ही से कुरआने मजीद पढ़ाना शुरूअ़ कर दें।

ऐमन सर झुकाते हुवे **:** नहीं अरीबा बाजी ! अभी नहीं।

अरीबा बाजी : क्यूं ऐमन आप क्यूं नहीं पढ़ाएंगी ? आप तो مَاشَآءَاللّٰه ह़ाफ़िज़ा भी हैं।

अरीबा बाजी !!! लेकिन वक़्त कहां से लाऊं ? ऐमन ने आंखें बन्द कर के ज़ोर देते हुवे कहा।

अरीबा बाजी : वक़्त कहां से लाऊं, क्या मत़लब ? सारे कामों के लिए वक़्त है लेकिन कुरआने करीम पढ़ाने के लिए वक़्त कहां से लाऊं ?

येह तो कोई उ़ज़्र नहीं है **दीन के काम के लिए तो वक़्त निकालना पड़ता है हम दुन्या के कामों के लिए भी तो वक़्त निकालते हैं,** तो हम दीन के काम के लिए वक़्त क्यूं नहीं निकाल सकते और सिर्फ़ एक घन्टा 12 मिनट ही की तो बात है और इतना वक़्त तो हम बातों ही में गुज़ार देते हैं अगर इस वक़्त में सवाब कमा लिया जाए तो मदीना मदीना और वैसे भी मोमिन तो सवाब का ह़रीस होता है।

वोह तो सब ठीक है अरीबा बाजी ! लेकिन एक मुश्किल भी है.....ऐमन ने अपनी मुश्किल सोचते हुवे कहा।

मुश्किल ! कैसी मुश्किल ? अरीबा बाजी ने ह़ैरत से पूछा।

मुश्किल येह है कि मुझे अपना स्कूल का सबक़ भी याद करना होता है। ऐमन ने अपनी परेशानी की वज्ह बताते हुवे कहा।

अरीबा बाजी : मुश्किल ज़रूर है लेकिन ना मुमकिन तो नहीं और आप को तो मालूम है जो अ़मल दुन्या में जितना ज़्यादा मुश्किल होता है आख़रत में आमाल के पलड़े में उतना ही वज़्नदार होगा।

येह तो आप ने बिल्कुल ठीक कहा : अरीबा बाजी।

आप **अल्लाह** पाक की रिज़ा ह़ासिल करने और प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़ुशनूदी ह़ासिल करने के लिए एक मरतबा क़ुरआने मजीद पढ़ा कर तो देखें اِنْ شَآءَ الله आप के वक़्त में ख़ुद ही बरकत हो जाएगी और आप क़ुरआने मजीद पढ़ाएंगी तो आप को इस का इतना सवाब मिलेगा जिस का आप अन्दाज़ा भी नहीं कर सकतीं, आप को पता है कि क़ुरआने मजीद का एक ह़र्फ़ पढ़ने पर 10 नेकियां हैं।

इस पर एक बहुत ही प्यारी ह़दीसे मुबारका है, रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो किताबुल्लाह से एक ह़र्फ़ क़िराअत करे उस के लिए दस नेकियों की मिस्ल अज्र है, मैं येह नहीं केहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है बल्कि अलिफ़ एक ह़र्फ़ है, लाम एक ह़र्फ़ और मीम एक ह़र्फ़ है। (ترمذی، 4/417، حدیث:2919)

ऐमन : سُبْحٰنَ الله !

अरीबा बाजी : तो सोचिए अगर आप ने किसी को सिर्फ़ الٓمٓ सिखा दिया तो जब तक वोह येह पढ़ती रहेगी आप को सवाब मिलता रहेगा और अगर आप ने उसे पूरा क़ुरआने पाक मअ़ तजवीद के पढ़ा दिया तो जब तक वोह क़ुरआने पाक पढ़ती रहेगी आप को इस का सवाब मिलता रहेगा और अगर उस ने क़ुरआने मजीद पढ़ कर इस पर अ़मल भी कर लिया तो इस के अ़मल का सवाब आप को भी मिलेगा जबकि उस के सवाब में कोई कमी नहीं की जाएगी। क़ुरआने मजीद पढ़ना भी सवाब, क़ुरआने मजीद पढ़ाना भी सवाब, क़ुरआने मजीद सीखना भी सवाब, क़ुरआने मजीद सिखाना भी सवाब, यहां तक कि क़ुरआने मजीद को देखना भी सवाब है।

और सवाब का मिलना फ़क़त़ इसी पर मौक़ूफ़ नहीं होता बल्कि वोह जब तक आगे पढ़ाती रहेगी आप को भी सवाब मिलता रहेगा और जितने लोगों को इस ने क़ुरआने मजीद सिखाया इन सब के क़ुरआने पाक पढ़ने पढ़ाने और अ़मल करने का सवाब आप को भी मिलता रहेगा यूं आप का फ़क़त़ एक को क़ुरआने पाक पढ़ा देना आप के लिए सदक़ए जारिया है और येह किस क़दर ख़ुश नसीबी की बात है।

ऐमन : बेशक येह तो बहुत ही ख़ुश नसीबी की बात है।

हां ! बिल्कुल येह मक़ाम हर किसी को अ़त़ा नहीं होता ख़ुश नसीब हैं वोह लोग जो इख़्लास के साथ क़ुरआने करीम पढ़ाते हैं, **अल्लाह** पाक के आख़री नबी मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : तुम में बेहतर वोह है जो क़ुरआन सीखे और सिखाए। और एक रिवायत में है कि "अफ़्ज़ल वोह है जो क़ुरआन सीखे और सिखाए"। (بخاری، 3/410، حدیث:5027، 5028)

ऐमन : سُبْحٰنَ الله !

देखो ऐमन हर मुसलमान की येह ख़्वाहिश होनी चाहिए कि वोह ऐसा बन्दा बने जिसे **अल्लाह** पाक और उस के ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पसन्द करते हों।

जी बिल्कुल ! अरीबा बाजी ! ऐमन ने ताईद करते हुवे कहा।

हां तो फिर सुनो !

एक दिन ह़ज़रते सैयदना अ़लिय्युल मुरतज़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने मस्जिद में लोगों के क़ुरआने मजीद पढ़ने और पढ़ाने की आवाज़ें सुनीं तो आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه ने फ़रमाया : इन्हें मुबारक हो येह वोह लोग हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को सब से ज़्यादा पसन्द थे। (معجم الاوسط للطبرانی، 5/274، حدیث:7308)

अरीबा बाजी ! मैं اِنْ شَآءَ الله आज ही से क़ुरआने पाक पढ़ाने की निय्यत करती हूं आप भी दुआ कीजिए कि **अल्लाह** करीम मुझे इस्तेक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। ऐमन ने अ़ज़्म करते हुवे कहा।

अरीबा बाजी : आमीन।



इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

औरत का मस्जिदे बैत में नफ़्ली एतेकाफ़ करना कैसा ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि रमज़ानुल मुबारक की बरकात पाने के लिए औ़रत अपनी मस्जिदे बैत में नफ़्ली एतेकाफ़ कर सकती है ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

रमज़ानुल मुबारक में और इस माहे मुबारक के इ़लावा भी औ़रत अपनी मस्जिदे बैत में नफ़्ली एतेकाफ़ कर सकती है। चुनान्चे तह़तावी अ़लल मराक़ी में है :

"وللمراۃ الاعتکاف فی مسجد بیتھا ولا تخرج منہ اذا اعتکف فلو خرجت لغیر عذر یفسد واجبہ وینتھی نفلہ"

औ़रत के लिए अपनी मस्जिदे बैत में एतेकाफ़ है। जब वोह एतेकाफ़ कर ले तो इस से नहीं निकलेगी अगर बिला उ़ज़्र निकली तो इस का वाजिब एतेकाफ़ फ़ासिद हो जाएगा और नफ़्ली एतेकाफ़ मुन्तही हो जाएगी।

(طحطاوی علی المراقی، ص699)

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ान में औ़रत के मख़्सूस अय्याम का एक अहम मस्अला

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमा ए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि 02 रमज़ान को औ़रत को आ़दत के मुत़ाबिक़ ह़ैज़ आया और आ़दत के मुत़ाबिक़ 07 रमज़ान को ख़त्म भी हो गया फिर दोबारा 14 रमज़ान को ख़ून आ गया तो क्या येह ह़ैज़ शुमार होगा ? और इस से रोज़ा टूट गया ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

दो ह़ैज़ों के दरमियान कम अज़् कम पन्दरह दिन फ़ासिला ज़रूरी होता है, पन्दरह दिन से पेहले आने वाला ख़ून ह़ैज़ नहीं बल्कि इस्तेह़ाज़ा यानी बीमारी का ख़ून होता है, लेहाज़ा चौदह रमज़ान को जो ख़ून आया वोह ह़ैज़ नहीं, बल्कि इस्तेह़ाज़ा है और इस्तेह़ाज़ा चूंकि नमाज़ व रोज़े के मनाफ़ी नहीं होता, लेहाज़ा औ़रत का रोज़ा भी न टूटा।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

इ़द्दत वाली औ़रत का ह़म्ल साक़ित़ हो गया तो वोह क्या करे ?

सवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि मेरे मामूं का इन्तेक़ाल हो गया है, इन्तेक़ाल के वक़्त इन की बीवी ह़ामिला थी। इन्तेक़ाल के बीस दिन के बाद ह़मल साक़ित़ हो गया। अब सवाल येह है कि इ़द्दत मुकम्मल हो गई है या चार माह दस दिन मुकम्मल करने होंगे ?

नोट : साक़ित़ होने वाले ह़म्ल के आ़ज़ा बन चुके थे।

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

ह़ामिला औ़रत की इ़द्दत वज़्ए़ ह़म्ल यानी बच्चा पैदा होने तक होती है और ह़म्ल साक़ित़ होने की सूरत में, पूरे या बाज़् आ़ज़ा बन चुके हों तो येह भी वज़्ए़ ह़म्ल शुमार होता है और इ़द्दत मुकम्मल हो जाने का ह़ुक्म दिया जाता है, लेहाज़ा सूरते मुस्तफ़सिरा (पूछी गई सूरत) में वाक़ेई अगर ह़म्ल के आ़ज़ा बन चुके थे तो ह़म्ल साक़ित़ होते ही इ़द्दत मुकम्मल हो गई।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

तन्दुरुस्ती हज़ार नेमत है

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे एहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

आ़म तौ़र पर अस्सी फ़ीसद (80%) अमराज़ पेट की ख़राबी, ज़्यादा खाने और जो सामने आया उसे पेट में डाले जाने से होते हैं, इस लिए गले सड़े चिप्स, टॉफ़ियों, चॉकलेटों, कबाब समोसों और होटलों के ग़ैर मेयारी खानों के बजाए मौसमी फलों, ड्राई फ्रूट्स और सब्ज़ियों का इस्तेमाल कीजिए, नीज़ खाना घर का खाइए, आ़म तौ़र पर घर का पका हुवा खाना अच्छा होता है, लेकिन जिन घरों में तेल, वेजीटेबल घी ब कसरत इस्तेमाल होता है उन घरों में दिल के अमराज़ वग़ैरा भी ज़्यादा हो सकते हैं कि त़िब्बी तेह़क़ीक़ात के मुत़ाबिक़ दिल के अमराज़, फ़ालिज, ब्रेन हेम्ब्रेज आ़म तौ़र पर तेल के ज़्यादा इस्तेमाल करने से होते हैं। इसी त़रह़ इज़ाफ़ी नमक के इस्तेमाल से भी कई बीमारियां पैदा होती हैं, कई त़रह़ के आइटम्ज़ के ज़रीए इज़ाफ़ी नमक इस्तेमाल किया जा रहा होता है मसलन सर्दियों में उ़मूमन उबले हुवे अन्डे नमक लगा कर इस्तेमाल किए जाते हैं। ज़रूरी ग़िज़ा के इलावा मुख़्तलिफ़ नमकीन बीज (Seeds) वग़ैरा के ज़रीए या ज़्यादा खाना खाने के ज़रीए पेट में ज़्यादा नमक पहुंचाने से गुर्दों को नमक निकालने के लिए मेह़नत ज़्यादा करना पड़ती है, फिर भी कुछ न कुछ नमक गुर्दे में जम्अ़ होता रेहता है, यूं येह सिलसिला आहिस्ता आहिस्ता गुर्दों को अमराज़ की त़रफ़ ले जाता और बिल आख़िर उन्हें फ़ेल कर देता और डायालिसिज़ की नौबत आ जाती है। नमक कम इस्तेमाल किया जाए तो हाई ब्लड प्रेशर में भी कमी आती है, बाज़ अवक़ात आदमी को पता भी नहीं चलता और एक दम ब्लड प्रेशर हाई हो जाता है जिस की वज्ह से कई मरतबा ब्रेन हेम्ब्रेज हो जाता और जान पर बन जाती है। वज़्न ज़्यादा होने, तेल, घी और तली हुई चीज़ों को ब कसरत इस्तेमाल करने से भी आ़म तौ़र पर येह मरज़ हो जाता है, यूं ही मीठी चाए ज़्यादा पीने या ज़्यादा मिठास खाने से शूगर हो जाती है। मैं ने नोट किया है कि घरों में जो डिशें पकती हैं उन में उ़मूमन मिठास ज़्यादा होती है, डबल ट्रिपल चीनी डालते हैं, जिस का नतीजा शूगर और दीगर बीमारियां होती हैं। मदनी मुज़ाकरों में बारहा मैं इस त़रह़ की बातें केहता रेहता हूं ताकि उम्मत को नफ़्अ़ हो। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ एक तादाद होगी जो मदनी मुज़ाकरे में सेह़त के बारे में मुफ़ीद बातें सुन सुन कर अ़मल करती होगी, उन का कुछ न कुछ एह़तियात़ का ज़ेह्न बनता होगा, लेहाज़ा इ़बादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने की निय्यत से एह़तियात़ कीजिए, सेह़त अच्छी होगी तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ नमाज़ में भी दिल लगेगा, रोज़े भी रख सकेंगे और दूसरी इ़बादात भी अच्छे अन्दाज़ से अदा हो जाएंगी, **अल्लाह** पाक के दीन की ख़िदमत के लिए भाग दौड़ और सुन्नतें सीखने के लिए मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सफ़र कर सकेंगे। अगर शूगर हाई होगी, ख़ून में कोलेस्ट्रोल लेवल बढ़ा हुवा होगा, त़रह़ त़रह़ की बीमारियां अपने अन्दर लिए हुवे होंगे तो बदन में सुस्ती होगी और दीन की ख़िदमत और दुन्यवी काम करने का दिल नहीं चाहेगा। **अल्लाह** पाक अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ हमें अपनी सेह़त की ह़िफ़ाज़त करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी इन्डिया का साथ दीजिए और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर मदनी अ़त़िय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिए !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है